रजत जयन्ती वर्ष
1979 2004

शिव सखी

रजत जयन्ती स्मारिका

शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम, लखनऊ

बाबा आसूदाराम दरबार साहिब, पन्नो आकिल-सिन्ध

दरबार साहिब का
बाह्य दर्शन

विशाल सत्संग कक्ष

पूज्य ढेवरी साहिब दर्शन

दयासागर सन्त शिरोमणि चान्दूराम साहिब

शिव सखी

रजत जयन्ती स्मारिका

शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम, लखनऊ

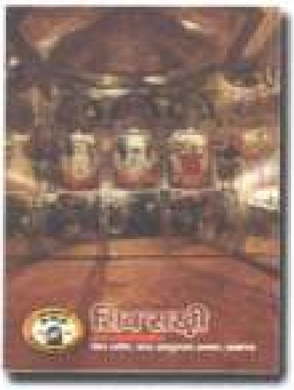

- सम्पादक : ज्ञानप्रकाश टेकचन्दानी 'सरल'
- सह सम्पादक : सत्यानन्द सावलानी
- प्रकाशक : किशन लाल

  सचिव : शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम
  वी.आई.पी. रोड, स्नेहनगर (आलमबाग),
  लखनऊ – 226 005
  दूरध्वनि – 2457573, 2454023, मो० : 9415102017

- © सर्वाधिकार: प्रकाशकाधीन

- संस्करण : प्रथम, सितम्बर 2004
- आवृति : 2000
- सेवा : 100/–
- अक्षरान्वयन : अन्जू सिंह
- सज्जा : अरुण पाठक

  ए.पी.एस. ग्राफिक्स, लखनऊ मोबाइल : 9415433226
- प्रकर्मणक : लक्ष्मण रतलानी, प्रीमियर प्रोसेस, लखनऊ फोन : 2201314
- मुद्रक : गौरव प्रिन्टर्स, लखनऊ।

पूर्वकथन

अपने पत्रकारिता के बीते लगभग 20 वर्षों में संवाद संकलन के सन्दर्भ में मुझे अनेक पंथों, सम्प्रदायों व धर्मों आदि के नेतृत्वकर्ताओं से मिलने उनके स्थानों पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। सामान्यतया अपने को सर्वश्रेष्ठ और सामने वाले की आलोचना करना ही उनमें दिखा। यहाँ तक कि एक तिलक धारक का दो तिलक धारकों में मध्य भी। ऐसा भी देखने को मिला कि एक धर्मस्थल का अगुआ दूसरे धर्म स्थल पर जाने के लिए धन की मांग करता है किन्तु शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम एक ऐसा विशिष्ट केन्द्र है जहाँ मतों, फिर्कों, वर्गों, तिलकों, टीकाओं से परे एक ही परमपिता परमात्मा की रचना प्रकृति से प्रेम व मानव सेवा का पाठ ही सिखाया जाता है। मैं यदा–कदा अवसर विशेष पर यहां आता था किन्तु **'शिव सखी'** के सम्पादन के निमित्त दो माह यहीं सन्त के सानिध्य में रहने, सत्संग श्रवण करने के पश्चात् मैंने जाना कि सन्त चाण्डूराम साहिब पूर्ण रूपेण सार्वभौमिक हैं। ग्रहस्थ जीवन के कर्तव्यों का वहन करते हुए आकाशवृत्ति रहते मानव सेवा को माधव सेवा मानते हैं।

वे कहते हैं कि मैं शिव का लिंग बनने को तैयार नहीं हूं कि चुपचाप बैठा रहूँ, देखता रहूँ और सुनता रहूँ; मुझमें संवेदना है, समाज की पीड़ा हरण का प्रयास अवश्य करूंगा। इसलिए जो कुछ भी सम्भव होता है अवश्य करता हूँ; प्रेरित करता हूँ। साईं जी अनेकता में 'एकत्व' के कायल हैं। वे कहते हैं कि सभी मत, पंथ व धर्म एक ही परमेश्वर की उपासना के मार्ग दर्शाते हैं तो एक का अनुयायी दूसरे के सत्संग में क्यों नहीं जा सकता ! उसे रोक क्यों? इसके विपरीत इस आश्रम में विभिन्न मतों, पन्थों, धर्मों के 'अगुआ' न केवल आ चुके है अपितु अपनी कल्याणी वाणी की वर्षा कर चुके हैं। साईं जी उनका बिना किसी भेद–भाव के यथायोग्य स्वागत भी करते हैं।

साईं जी ने आश्रम के द्वार सभी के लिए बिना संकोच व निश्छलता से खोल रखे हैं। अनेक मतावलम्बी अपने मतानुसार अपने मतावलम्बियों के लिए आश्रम के प्रेक्षागृह में कार्यक्रम आयोजित करते हैं। जिसका कोई उनसे शुल्क नहीं लिया जाता। साईं जी उनमें स्वयं तो उपस्थित रहते ही हैं और अनुयाइयों को उनके विचारों को सुनने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

अन्य मतों पंथों की तुलना से देखें तो आश्चर्य रूप से सन्त चाण्डूराम पैर नहीं छुआते, अपने समक्ष भेंट नहीं रखाते, पूर्ण रूप से ईश्वर के भरोसे मानव सेवा के अनेक प्रकल्प चलवा रहे हैं। 'सहायता' शब्द आपके शब्दकोश में ही नहीं है। वे कहते हैं कि सहायता नहीं 'सेवा' करो।

धागा आदि अन्ध विश्वासों को तो पूरी तरह नकारते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि उनके पास कामनाओं की पूर्ति की ही अभिलाषा लेकर न आएं। ईश्वर भक्ति करें। परमात्मा सर्व ज्ञाता है। गृहस्थ होते हुए भी निर्विकार, निर्विकल्प भाव से दोनों हाथों से जरूरतमंदों की सेवा करते हैं। वे मानते है कि सेवा करो ईश्वर अवश्य दूना देगा। यह कतई विचार न करो कि जब मेरे पास आयेगा तभी दान करूंगा।

इस बात से उनको गिला नहीं रहती कि कोई अनुयायी कितनी जल्दी और कितनी अवधि बिताकर आश्रम आते हैं जो नहीं आते वे वहीं से आश्रम के प्रति 'भाव' में रहते हैं, ऐसा सन्त का मानना है। आप अनुयाइयों को केवल ईश्वर भक्ति का पाठ ही नहीं पढ़ाते अपितु जीवन जीने की बारीक से बारीक बातों को भी सिखाते हैं। सन्तों का संग और श्रवण ही सब रोगों की खान है। बावजूद इसके अनुयायी उनकी प्रेरणा से हर जरूरतमंद की 'सेवा' से सदा सर्वदा उद्यत रहते हैं। रोगियों के लिए चिकित्सालय, निराश्रितों को आश्रय, बेरोजगारों के लिए रोजगार, विद्यार्थियों के लिए शिक्षण शुल्क, भूखों को भरपूर भोजन आदि की सेवाएं अनुयायी पूरी कर रहे हैं।

मानव कल्याण हेतु सन्नद्ध, ऐसा है शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम। स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयन्ती अवसर के सन्दर्भ में प्रकाशित 'शिव सखी' स्मारिका आपके करों में है। यद्यपि यत्न किया गया है कि पच्चीस वर्षों में आश्रम की सेवाओं की जानकारी देने का किन्तु एक स्मारिका में समेटना तो मात्र यह संकेत स्वरूप है जबकि विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए गये हैं।

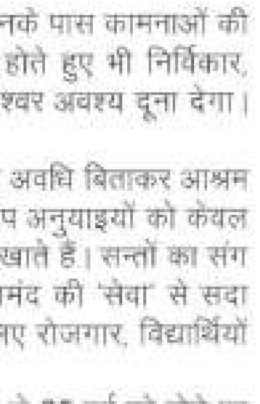

स्मारिका का मनोयोग से अलंकरण व प्रकर्मण व प्रकाशन हेतु सर्वश्री लक्ष्मण रतलानी, सुशील रतलानी, अरुण पाठक, अन्जू सिंह आदि का आभारी हूँ।

ज्ञाप्रटे 'सरल'
सम्पादक

SANT SATRAM DHAM
RAHARKI SAHIB
Distt. Ghotki Sindh, Pakistan

سنت سترام ڌام
رهڙڪي صاحب
ضلعو گهوٽڪي سنڌ ، پاڪستان

Ref. No. ____________ Date: 16-09-04

آشيرواد سچي سائين سترام داس صاحب جن جي

نهايت خوشيءَ جي ڳالهه آهي ته شو شانتي آشرم پنهنجي سلسلي جا 25 سال پورا ڪري رهيو آهي . اهڙي پر مسرت موقعي تي توهان سڀني ڀائرن ڀينرن ۽ سچي سنگت کي پوڄ ڏيوري صاحب سنت سترام ڌام پوڄ رهڙڪي صاحب طرفان آشيرواد ، شڀ ڪامنائون ۽ واڌايون

جڏهن ڪنهن به آستان تي ايشوري ڌڻي ، ستگرو مهما ۽ گُروئن جي ڳالهين جي صفت ٿئي ٿي ته اها جڳهه پرماتما جي پريم سان ڀريل جو پوتر ڌام ٿي پوندي آهي ۽ ان جو اثر ۽ پوتر پرڀاءُ اتي رهندڙن ، ايندڙن ۽ وشواس رکندڙن تي سدائين پيو رهندو آهي .

سو اِهو شو شانتي آشرم لکشمي مالڪ جي مهر سان اهو آستان آهي جتي هر هڪ انهي پيدر جو ياتر سچي رهيو آهي .

انهي آستان جو سنگ بنياد اڄ کان 25 سال اڳ سنت بابا آسودا رام صاحب جن جي ٿالي ۽ آشيرواد سان پيو . جنهن سنت شهنشاهه ستگرو سائين سترام داس صاحب جن جي در جي اهڙي دل وڃان سان شيوا ڪئي جو سچي سائين کان پوتر نام ٻانهن جي ڏوڪ ۽ سچي سائين جي مهر ڀري نظر کي پنهنجي بندگي ۾ سمائي امر شهيد سنت ڪنور رام صاحب جن جي رحمت پاتي

اهڙي سنت جي آستان تي اڄ ايشور ڀڳتي ، ستگرو مهما ، پريم ۽ پيار ، ۽ ماڻهن لاءِ محبت جو پرچار ۽ انهي تي عمل ٿي رهيو آهي جنهن جي شيوا سنڌس سپاهي ڀائي چندو رام صاحب ، پنهنجي پريوار ۽ سنگت سان ملي ڪري عمل ۾ آڻي رهيا آهن جتي هر سال ورسي ۽ ڪيترا ورسجي به ٿيندا آهن ته وري رام نومي تي سنسار جي پوتر ڏڻن ۾ ٻڌ جي زندگي ۾ سک ۽ سموري ڪي ماڻيندا آهن . هت بهتر راهه سان راحت ۽ شانتي به ملندي آهي ۽ وري شيوا ، سمرن ۽ ستسنگ سان مالڪ ملڻ جي مهر به ورسندي آهي هت منڊلي جو ملڻ به ٿيندو آهي ۽ سڀني سان سهڪار رکي انهي ستديش کي هر هڪ تائين پهچائڻ جي ڪوشش به ڪئي ويندي آهي

سو اهڙي پوتر آستان جي سلور جوبلي جي شڀ موقعي تي انهي سچي ستگرو در اهڙي ارداس ته اهو گلشن سدائين گلزار رهي ۽ پيار ، محبت ۽ پريم جي جوت هميشه جڳ مڳ ٿيندي رهي .

اهڙي شڀ اوسر تي توهان سڀني ڀائرن ، ڀينرن ۽ شو شانتي آشرم سان لاڳاپيل سچي سنگت کي

پوڄ ڏيوري صاحب

سنت سترام ڌام رهڙڪي صاحب طرفان اهڙي آشيرواد ته پيار ڀري پت ، محبت ڀري رستي ۽ ساٿ ڀري سمجهه سان سدائين رڌندا وسندا ڦلندا ۽ ڦولندا ، خوش ۽ خوشحال رهو .

سچو سترام

حضوري روپ سائين سادرام صاحب
سنت سترام ڌام رهڙڪي صاحب سنڌ

Tel : (0092-703) 41055
(0092-703) 42671
(0092-703) 42672
Fax : (0092-703) 41489

E-mail : sachosatram@hotmail.com
sadhram@sachosatram.com
Web Site : www.sachosatram.com
www.santkanwarram.com

SANT SATRAM DHAM
RAHARKI SAHIB
Distt. Ghotki Sindh, Pakistan

سنت سترام ڌام
رهڙڪي صاحب
ضلع گهوٽڪي سنڌ، پاڪستان

आशीर्वाद सच्चे साईं सतरामदास साहिब का

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि शिव शान्ति आश्रम अपनी सफलता के 25 वर्ष परिपूर्ण कर रहा है। इस शुभ अवसर पर आप सभी बन्धु–भगिनियों एवं समस्त संगत को पूज्य ड्रेवरी साहिब, सन्त सतराम धाम, पूज्य रहड़की साहिब की ओर से आशीर्वाद, शुभकामनाएं एवं बधाइयां।

जब किसी स्थान पर ईश्वरीय जाप, सतगुरु महिमा व गुणी जनों के गुणों की विशेषताओं का वर्णन होता है तो वह स्थान परमात्मा के प्रेम पूर्वक पधारने हेतु पवित्र धाम बन जाता है तथा उनका प्रभाव व पवित्रता वहाँ के निवासियों, आगन्तुकों और विश्वास रखने वालों पर सर्वदा बनी रहती है। अतएव आज शिव शान्ति आश्रम, लखनऊ ईश्वर कृपा से वह स्थान बन गया है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति उस प्यार का पात्र बनता जा रहा है।

उस स्थान का उदघाटन आज से 25 वर्ष पूर्व सन्त बाबा आसूदाराम साहिब के नाम एवं आशीर्वाद से हुआ था। जिन्होंने सन्त शहंशाह सतगुरु साईं सतरामदास साहिब के द्वार की अभ्यान्तरिक हृदय से ऐसी सेवा की कि सच्चे साईं से पवित्र नाम की प्राप्ति की तड़प तथा कृपा दृष्टि को अपनी उपासना से साईं अमर शहीद सन्त कँवरराम साहिब की कृपा प्राप्त की।

ऐसे सन्त के स्थान पर आज ईश्वर भक्ति, सतगुरु महिमा, प्रेम व प्यार, मानवता के लिए प्रीति के प्रचार और उन पर कार्यान्वयन हो रहा है। इन सेवा कार्यों को उनके सुपुत्र साईं चाण्डूराम अपने परिवार एवं अनुयाइयों के साथ मिलकर कार्यान्वित कर रहे हैं।

यहाँ प्रत्येक वर्ष निर्वाण वर्सी महोत्सव में अनेकों के मनोरथ पूरे हो जाते हैं। रामनवमी के अवसर पर पवित्र सांसारिक बन्धन में बंधकर जीवन भर सुख और समृद्धि का उपयोग करते हैं। यहाँ पर उचित मार्ग दर्शन सहित व्यक्तियों को राहत और शान्ति प्राप्त हो रही है। साथ ही सेवा, नाम स्मरण तथा सत्संग से प्रभु प्राप्ति की कृपा भी मिलती है।

यहाँ से संचालित सेवाओं के प्रकल्प प्रमुखों का आपस में सम्मिलन भी होता है और उनसे सम्पर्क साधते हुए उस कार्य को करने का संदेश जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास भी होता है।

अतः ऐसे पवित्र स्थान के रजत जयन्ती अवसर पर उन सच्चे सतगुरु के द्वार पर प्रार्थना है कि आश्रम रूपी उपवन और स्वयं साईं दोनों 'गुलजार' रहें एवं प्यार, स्नेह और प्रीति की ज्योति सदा सर्वदा जगमगाती रहें।

इस शुभ अवसर पर आप सभी भाइयों, बहिनों तथा शिव शान्ति आश्रम से जुड़े लोगों को 'पूज्य डेवरी साहिब' सन्त सतरामधान, रहड़की साहिब की ओर से आशीर्वाद, प्यार व मोहब्बत के माध्यम से और कृपामयी बुद्धि से सदा फले–फूले, झलें, उत्तरोतर अभिवृद्धि प्राप्त हो, प्रसन्न और समृद्ध रहें।

हजूरी रुप साईं साधराम साहिब
सन्त सतराम धाम
रहड़की साहिब, सिंध

(सिंधी पत्र का हिन्दी भावानुवाद : सम्पा०)

Tel : (0092-703) 41055
(0092-703) 42671
(0092-703) 42672
Fax : (0092-703) 41489

E-mail : sachosatram@hotmail.com
sadhram@sachosatram.com
Web Site : www.sachosatram.com
www.santkanwarram.com

|| जय शदाराम || JAI SHADARAM جے شدارام || जय शदाराम || JAI SHADARAM جے شدارام

धूणी वाला सहाय

شداڻي دربار
शदाणी दरबार
SHADANI DARBAR

(0771) 2418787
2418298 (Fax)
Sant Shadani Nagar, N.H. - 43,
New Raipur (C.G.) INDIA,
Pin - 492015

संदेश

संत गोबिंदराम साहेब

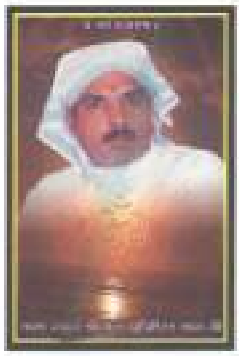

ॐ नमः शदारामाय

सोहंग शदाराम, तुलसीदास, तखतलाल तनसुख हरे।
पूज्य माता साहिब, मंगलाराम, सांईं राजाराम महिर करे।
सतगुरु सांईं गोबिन्दराम महिर करे।

जय शदाराम,

बड़े हर्ष का विषय है कि संत चान्डूराम जी के शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम, लखनऊ के रजत जयंती समारोह के अवसर पर 'शिव–सखी' स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका प्रकाशन व आयोजन की सफलता हेतु शुभ कामनाएं और ईश्वर से प्रार्थना है कि श्रद्धालुओं के मन में सेवा, सत्संग और सिमरन की भावना का विकास हो।

संत महात्माओं का संग करने वाले भाग्यशाली मानवो, सत्संग से प्रेम रखने वाले प्राणियों, सच्चा और पवित्र दान करने वाले सज्जनों, शुद्ध भावना वाले सेवादारियों और निःस्वार्थ समाज सेवियों का सदा कल्याण हो। कन्याओं का भाग्य संवरे, बच्चे अपने माता–पिता की आज्ञा में रहें, सुशिक्षित और ऊर्जावान रहकर भारत के होनहार नागरिक बनें।

यही अमर सन्देश शिरोमणि संत स्वामी गोबिन्दराम जी महाराज ने सदैव अपनी वाणी में जनकल्याण हेतु कहे जो आपके सम्मेलन में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं के लिये सादर समर्पित हैं।

'जय शदाराम'

दिनांक 10 / 09 / 2004

(युधिष्ठिर लाल)

बोल वसण घोट की जय साईं पारूशाह की जय ✆ : 2531674, 2525263

SAI PARUSHAH SAHIB
SAI VASANSHAH SAHIB

SAI ATMARAM SAI CHETANRAM

Asautar Rohri wala Mandir, Sindhunagar - 421 005

Ref. No. Date 14 सितम्बर 2004

संदेश

जंहिं महल तुंहिंजो मनु, सतगुरुन जो दर्शन चाहे,
समिझु त तो वटि पाण, परमात्मा अचणु थो चाहे।
जंहिं महल तुंहिंजो चितु, सत्संगु बुधण लाइ वाझाए,
समिझु त तुंहिंजे लाइ, ईश्वर अमृत थो वरसाए।।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ नगर में संत शिरोमणि मर्यादा पुरुषोत्तम साईं चाण्डूराम साहिब की रहनुभाई में चल रहा **शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम भारत के तीर्थ स्थान समान है।**

इस वर्ष आश्रम की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर हम साईं वसणशाह दरबार आसाऊत्तर रोहिड़ी (सिंध) एवं सिंधूनगर की ओर से सन्तों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाओं का यह संदेश–पत्र प्रेषित कर रहे हैं।

यह आस्थान नगर के कोलाहल से कुछ दूर नहर के किनारे एक ऐसा रमणीक स्थान है जहाँ आश्रम में प्रवेश करने मात्र से ही मन में एक अलौकिक शान्ति प्राप्त होती है। यहाँ सन्तों के आशीर्वाद से नित्य सत्संग की वर्षा हो रही है तथा अन्य कितने ही धार्मिक कार्य हो रहे हैं। प्रत्येक वर्ष मेला, वर्सी महोत्सव एवं चौदसरात का मेला सारी रात धूमधाम एवं श्रद्धाभाव से मनाया जाता है।

हमारी सन्तों एवं सम्पूर्ण संगत को इस रजत जयन्ती समारोह की एवं सखी बाबा आसूदाराम की 44वीं वर्सी महोत्सव हेतु शुभकामनाएं।

Atmaram Ch. D.

(आत्माराम)

(सिन्धी पत्र का हिन्दी भावानुवाद : सम्पा०)

Puj Dewari Sahib
36, Baba Hardasram Society
Kanwarnagar, AMRAVATI - 444 606

☎ 2674298
2671942

Dt. 12-8-04

संदेश

प्रियवर,

'शिव शांति संत आसूदाराम आश्रम' के रजत जयंती समारोह व 'शिव सखी' के प्रकाशन का समाचार जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

जैसा कि गुरुवाणी में कहा है–

'मान मोह दोनों को परहरी, गोविंद के गुन गावै
कहु नानिक इह विधी को प्रानी, जीवन मुक्त कहावै'

सो, संतों के स्थान पर तो हमेशा परमार्थी कार्यों को, सेवाभाव और निष्कामता से किया जाता है और इस हेतु शिव शांति आश्रम तो जग प्रसिद्धि की ओर अग्रसर है। जहाँ मान अपमान की भावना से दूर रह कर, केवल सदगुणों के ही उदगम का प्रयास किया जाता है।

'उस्तति निंदा नांहि जिहि कंचन लोह समान,
कहु नानिक सुन रे मना मुक्त ताहि ते जान'

ईश्वर से यही प्रार्थना है, सदगुरु दर यही अरदास है कि आयोजित सभी कार्यक्रम, पावन वातावरण में सुंदर रूप से पूर्ण हों,

आशीर्वाद,
पूज्य ड्रेवरी साहिब, कंवर नगर, अमरावती

(मनोहरलाल)

बोल बाबा रूप भजन साहिब की जय   बोल समाधनि वालों की जय

पूज्य श्री उदासीन समाधा आश्रम,

शिकारपुर – सिंध, (पाकिस्तान)

स्वामी शिवभजन

दिनांक : 11-9-04

संदेश

संत सदाई जीअ के भउजल तारन हार।
सब ते ऊँचा जाणिये नानक नाम प्यार।।

हमें अतीव प्रसन्नता हुयी है कि लखनऊ नगर में सन्तों का जो आश्रम है, जहाँ ज्ञान की वर्षा हो रही है, भटके हुओं की राहें रोशन हो रही हैं।

साईं आसूदाराम साहिब ने स्वयं सन्त साईं कंवरराम के द्वार पर अत्यन्त विनम्रता पूर्वक गऊ माताओं की सेवा की । उनमें ईश्वर का रूप जान कर ही उन्होंने प्रभू को प्राप्त किया। उसका फल उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम चाण्डूराम साहिब के रूप में पुत्र रत्न प्राप्त हुए।

उन्होंने लखनऊ में एक आश्रम सन्त पिता के नाम पर निर्माण करवाया और सर्व समाज के लिए सब प्रकार के सुखों का धाम स्थापित किया। अतएव हम सभी इस स्थान की सेवा करके हमेशा फलीभूत होते रहें।

सन्त के ज्ञान सागर से कुछ बून्दे लेकर अपने जीवन को उसके अनुरूप चलाएं। हमें आज अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। कि आरम की स्थापना के 25 वर्ष पूरे हुए हैं अतः सभी को कोटि–कोटि बधाइयां।

(शिव भजन)
पूज्य श्री उदासीन समाधा आश्रम
शिकारपुर, सिंध

(सिन्धी पत्र का हिन्दी भावानुवाद : सम्पा०)

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड, जयपुर

स्वामी भगत प्रकाश

लासपामास,
स्पेन
14-8-2004

संदेश

ॐ
सत्नाम साक्षी

सम्पादक महोदय,
सप्रेम हरिस्मरण

शिव शान्ति आश्रम की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई।

आध्यात्मिकता के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्र में भी सेवा कार्य करने वाली यह अग्रणी संस्था लम्बे समय से लगन के साथ परोपकार्य के कार्यों में संलग्न है।

ईश्वर कृपा से अपने पवित्र उद्देश्यों में सफलता प्राप्त हो। इसी शुभकामना के साथ

भगत प्रकाश

(भगत प्रकाश)

ॐ
।। श्री हरिः शरणम् ।।

डा० स्वामी गंगादास उदासीन,
संस्थापक अध्यक्ष,
"स्वामी जुगत राम मिशन"
श्री जुगत निवास, हरिद्वार

रक्षापूर्णिमा
30-8-2004

संदेश

प्रभुप्रिय श्री ज्ञानप्रकाश टेकचन्दानी जी 'सरल'
सम्पादक – 'शिव सखी'
शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम
वी.आई.पी. रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

महोदय !

आपका पत्र पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। धन्यवाद !

परम् हर्ष का विषय है कि शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम की शुभ स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष समारोह के अंतर्गत 'शिव – सखी' स्मारिका प्रकाशित होने जा रही है, जो एक प्रशंसनीय उपक्रम है।

इस शुभ अवसर पर शिव शान्ति आश्रम से जुड़े सभी माननीय सदस्यों, श्रद्धालु–भक्तजनों, भाग्यवान सेवादारियों को स्वामी जुगत राम मिशन, हरिद्वार की ओर से बहुत–बहुत बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

।। हरिः ॐ ।।
शुभकामनाओं सहित
आपका ही

डा० स्वामी गंगादास उदासीन

Incorporeal Supreme Father God Shiva

Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya

World Headquarters : Pandav Bhawan, Mount Abu-307 501, Rajasthan, India

Phones : 02974-(EPABX)-38261 to 38268, Fax Nos.: 02974-38952 & 22116

E-mail: bkabu@vsnl.com. Websites:www.bkacademy.ac.in;www.bkwsu.com

शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम की रजत जयन्ती वर्ष समारोह के उपलक्ष्य में शुभ कामना

संदेश

परमस्नेही, परमपिता परमात्मा की अति प्रिय सन्तान भ्राता ज्ञान प्रकाश टेकचन्दानी जी तथा शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम के सभी प्रभु प्रेमी आध्यात्म–पथ पर अग्रसर कार्यकर्ता गण,

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में अनेक बहुमुखी परमार्थी सेवायें देते हुए शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम अपने 25 वें वर्ष में प्रवेश कर एक विशाल रजत जयन्ती समारोह 24 से 28 सितम्बर 2004 तक मनाने जा रहा है। इसी उपलक्ष्य में "शिव सखी" स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

राष्ट्रीय एकीकरण का मूल आधार आध्यात्मिकता ही है, सिर्फ इस शब्द के अर्थ स्वरूप में टिककर कार्य व्यवहार में आने से वर्ग एवं वर्ण भेद स्वतः समाप्त हो जाते हैं, क्योंकि आध्यात्मिकता हम सबको जाति भेद, रंगभेद, भाषा भेद... आदि सबसे ऊपर अपने सत्य आत्मिक स्वरूप की पहचान देती है, जिससे हर एक आत्मा अपने स्व–धर्म, स्वदेश की स्मृति में रह, स्व–पिता परमात्मा से अपना सम्बन्ध स्थापित कर जीवन में सच्चे सुख–शान्ति और पवित्रता रूपी दिव्य गुणों का अनुभव कर सकती है।

आप सब 25 वर्षो से ईश्वर आराधना, सतसंग एवं समाज सेवा के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना का सतत् विकास करते आगे बढ़ रहे हैं, यह बहुत ही सराहनीय कार्य है। कोटों में कोई ऐसी प्रभु स्नेही आत्मायें हैं जो वसुधैव कुटुम्बकं की शुभ भावना से ओत–प्रोत हो, स्व–परिवर्तन कर अपने तन–मन–धन को राष्ट्र के नव निर्माण के कार्य में सफल करती हैं।

हमें आशा है कि आप द्वारा प्रकाशित होने वाली यह स्मारिका जन–जन में ऐसी आध्यात्मिक क्रान्ति लाने के निमित्त बनेंगी, जिससे मानव मात्र, आध्यात्मिक चेतना द्वारा देह–अभिमान, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि आसुरी विकारों पर विजय प्राप्त कर स्वयं के जीवन को निर्व्यसनी, निरहंकारी और निर्विकारी बना सकेंगे।

इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ,
ईश्वरीय सेवा में,

B. K. Prakash Mani

(बी.के. प्रकाशमणि)

समन्वय सेवा ट्रस्ट

समन्वय कुटीर, सप्त सरोवर, हरिद्वार – 249 410 (उत्तरांचल) भारत

संस्थापक :
स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि
निवृत्त जगदगुरु, शंकराचार्य, ज्योतिर्मठ शाखा

SAMANVAYA SEVA TRUST

Samanvaya Kutir, Sapta Sarowar : Hardwar : 249 410 Uttaranchal
Ph.: 2460256, Fax : 0133-2460010 Bharat Sadan : 0133-2460111
E-mail : samanvay@nde.vsnl.net.in

दिनांक 16.8.04

संदेश

सम्माननीय श्री ज्ञानप्रकाश टेकचन्दानी 'सरल'
सप्रेम नारायण स्मरण

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आसूदाराम आश्रम सन्त श्री चाण्डूराम साहिब की छत्रछाया में मानव के आध्यात्मिक विकास और कल्याण के लिये विगत 25 वर्ष से संलग्न हैं।

'रजत जयन्ती' समारोह के अवसर पर आप एक 'शिव सखी' शीर्षक से स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह आनन्द की बात है। स्मारिका के प्रकाशन से पाठकों को आश्रम की गतिविधियों की जानकारी मिल सकेगी। इसके साथ ही समाज में संस्कार निर्माण की प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

मैं स्मारिका के प्रकाशन और आपके समारोह की सफलता के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ। इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। शेष भगवत्कृपा

भवदीय

स्वामी सत्यमित्रानंद
ॐ

(स्वामी सत्यमित्रानंद)

श्री सद्‌गुरुदेव जन्मशताब्दी वर्ष वि.स. २०५६
।। श्री जगद्‌गुरु श्रीचन्द्राचार्य – श्री सद्‌गुरुचरणकमलेभ्यो नमः।।

श्री कृष्णानन्द गोविन्दानन्द भगवद्‌धाम आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार (रजि.)

संस्थापक - नित्यलीलालीन म. मं. श्रीमान् 108 स्वामी कृष्णानन्दगोविन्दानंद जी महाराज न्यायवेदांताचार्य
अध्यक्ष : म. मं. 180 डॉ. स्वामी विवेकानन्द जी महाराज, एम.ए., पीएच.डी.

तार : भगवद्‌धाम | दूरभाष : 01334-227717

।। श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे। हे नाथ नारायण वासुदेव।।

दिनांक 03.09.04

संदेश

प्रभु प्रेमी गुरुमुख प्रिय श्री सरल झाप्रटे जी,

श्री गुरु दरबार के शुभाशीर्वाद सहित सप्रेम हरिस्मरण ।

परम पावन आध्यात्मिक केन्द्र श्री शिव शान्ति आश्रम की स्थापना की 25वीं वर्षगांठ (रजत जयन्ती महोत्सव) के शुभ अवसर पर आश्रम "शिव सखी" नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई।

सन्त साई आसूदाराम साहब को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए प्रभु चरणों में यही प्रार्थना है कि साई श्री चाण्डूराम साहब जी स्वस्थतापूर्वक युग–युग जीयें व आश्रम में सेवकों का विकास उत्तरोत्तर होता रहे। शुभमस्तु।

भवदीय शुभचिन्तक

(स्वामी विवेकानन्द)
श्री भगवद् धाम,
हरिद्वार

डा० एस. शर्मा
एम०बी०बी०एस०, एम०फिल०,
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डी० एम० सी०

दूरभाष - 0565-2540329, 2540275
कृष्ण कृपा क्लीनिक 'इस्कॉन'
श्री श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर
भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग
रामन रेती, वृन्दावन - 281 121

संदेश

साईं जी को कोटिशः बधाईयाँ कि वे विगत 25 वर्षों से भारत वर्ष में विशेष रूप से सिन्धी समाज का आध्यात्मिक नेतृत्व एवं आर्थिक सेवा के माध्यम से मानव जन्म के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए सफलता पूर्वक सक्रिय हैं। सन् 1994 में सन्त जी से आँखे चार हुयीं दिल्ली में आपकी विनम्र, ध्यान मग्न मूरत, सर्तक, सावधान सीरत ने मेरे हृदय पर अविनाशी छाप छोड़ी। दो दिवसों का हरिद्वार में साथ तत्पश्चात् लखनऊ तक की सहयात्रा व सत्संग से दो हृदयों का मिलन हुआ था।

गत 10 वर्षों में शिव शान्ति संत आसूदाराम आश्रम का दस गुना नहीं अपितु सौ गुना विस्तार हुआ है। ईश्वर से प्रार्थना है कि साईं जी की उनके अनुयाइयों के मध्य भक्ति भाव व समाज सेवा की अभिवृद्धि हिन्द-सिन्ध में होती रहे। यह स्थिति चरम सीमा को भी लांघ जाए।

श्री कृष्ण सेवा में दासों का दास

सर्वभूमदास
(डा० एस० शर्मा)

(सिन्धी पत्र का हिन्दी भावानुवाद : सम्पा०)

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

Registered under Societies Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर–६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–११० ०२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

दूरभाष : ९१–११–२६१०३४९६, २६१७८९९२
फैक्स : ९१–११–२६१९५५२७
तार : हिन्दूधर्म
Phones : 91-11-26103496, 26178992
Fax : 91-11-26195527
E-Mail : vhp@vichaar.net
vhpnews@vichaar.net
jaishriram@vsnl.in
manish@vichaar.net
Gram 'HINDUDHARMA'

पत्र संख्या वि०हि०प० / 16बी / 04

दिनांक 17 जुलाई, 2004

संदेश

बन्धुवर श्री ज्ञानप्रकाश टेकचन्दानी जी
जय श्रीराम।

''शिव शन्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम के रजत जयन्ती'' समारोह का समाचार प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस शुभ अवसर पर ''शिव–सखी'' स्मारिका का प्रकाशन भी अति समीचीन है। आशा है इसके माध्यम से आश्रम द्वारा चलाये जा रहे अनेकानेक कार्यक्रम और उनके द्वारा प्राप्त उपलब्धियों की जानकारी का संदेश प्राप्त कर सामान्य जनता लाभान्वित हो सकेगी।

आश्रम द्वारा आदर्श सामूहिक विवाह, नेत्र सम्बन्धी, शल्यक्रिया, उपनयन संस्कार, असहायों को आर्थिक सहायता, निर्धन विद्यार्थियों के लिए शिक्षण शुल्क, पाठ्य पुस्तकों आदि का वितरण, वृद्धाश्रम संचालन आदि–आदि अनेक कार्य समाज एवं राष्ट्रहित में किये जा रहे हैं। यह सब कार्य प्रभु प्रसन्नता के लिए किए गये यज्ञ का ही एक अविभाज्य अंग है।

प्रभु श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना है कि आश्रम अपने उद्‌देश्य में सफलता प्राप्त कर एक मार्गदृष्टा के रूप में गौरान्वित हो।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

अशोक सिंहल

(अशोक सिंहल)
कार्याध्यक्ष

श्री ज्ञानप्रकाश टेकचन्दानी जी
शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम
वी.आई.पी. रोड, आलमबाग,
लखनऊ (उ०प्र०)

लालजी टण्डन

फोन : 2238210 (कार्या.) 3859 (सी.एच.)
2286137 / 2238811 (आवास)
पत्रांक 293 / नेoविoदo / 2004
विधान भवन, लखनऊ
दिनांक 6.8.2004

संदेश

प्रिय श्री सरल जी,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम को सामाजिक सेवा करते हुए 25 वर्ष पूरे हो गये हैं और विशाल रजत जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। आदर्श सामूहिक विवाह, नेत्र शल्य क्रिया, बेरोजगारों व गरीबों को आर्थिक सहायता, वृद्धाश्रम, पुस्तकालय एवं अन्य अनेकों समाजसेवा के कार्यों के साथ ही आध्यात्मिक चेतना के लिए भी संस्था सराहनीय कार्य कर रही है।

आशा है कि शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका जन–कल्याणकारी होगी।

(लालजी टण्डन)

मोहन लाल खट्टर
सदस्य विधान परिषद
उत्तर प्रदेश
कृष्ण बिहारीपुर, मढ़िया
बरेली 243 003
फोन : 0581-2554438, 2552698

फोन : 0522-2453029
63, रॉयल होटल,
लखनऊ

संदेश

परम श्रद्धेय

साई चाण्डूराम साहिब

भारत तपोभूमि में सन्तों के आदर्शों ने ही विश्व में मानवता का दीप जलाए रख है। सन्त आसुदाराम जी के जीवन ने सत्कार, सादगी, सदाचार, सहनशीलता, सेवा से मानव समाज का कल्याण किया और यह आश्रम उन्हीं के पदचिन्हों पर उक्त सभी गुणों से मानव सेवा के हर सम्भव कार्य कर रहा है। भारत की महान सिन्धु संस्कृति का प्रतीक यह आश्रम सदैव जगमगाता रहेगा।

यही मेरी और मेरे परिजनों की कामना है।

सन्तों के श्री चरणों में

(मोहन खट्टर)

शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम

एक विहंगम दृष्टि

द्विराष्ट्र के राजनैतिक निर्णय को स्वीकार कर धर्म के संरक्षण, संवर्धन एवं रक्षण हेतु अधिकांश सिन्धी भारत आ गये किन्तु अनेक मातृभूमि सिन्ध में फिर भी रह गये। उनमें सन्त आसूदाराम भी थे। गुरु आज्ञानुसार ही उन्होंने सिन्ध के 'पन्नो आकिल' नगर में सन् 1940 में 'दरबार साहिब' की स्थापना करके 'मानव कल्याण' के लिए अनेक लोक कल्याणकारी कार्य आरम्भ किये।

विधि के विधान के अन्तर्गत अनन्त चुर्तदशी रविवार 4 सितम्बर 1960 को सन्त आसूदाराम परमधाम सिधारे और तब सन्त के सुपुत्र बालक चाण्डूराम को 14 वर्ष की अल्पायु में पिता की गद्दी पर बैठाया गया। आपने भी मानव कल्याण के पिता के आरम्भ किये कार्यों को और आगे बढ़ाया।

गद्दी पर बैठने के बाद माँ की आज्ञानुसार दरबार के अनुयाइयों और सन्त बाबा आसूदाराम के भक्तों को दर्शन देने के लिए पहली बार 1965 में सिन्ध से हिन्द आए और आते रहे। उनके अनुयाइयों की चाहत थी कि भारत में भी कहीं 'अस्थान' का निर्माण हो। उनमें पहल की सनमुखदास राजपाल एवं खूबचन्द राजपाल दो भाइयों ने जिन्होंने सन्त चाण्डूराम साहिब को सन् 1970 से सन् 1976 के मध्य 7 वर्षों की अवधि में 5 पत्र लिखें। इसी बीच 15 अक्टूबर 1976 को सन्त श्री का भारत आगमन हुआ। आज जिस स्थान पर शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम का भव्य रूप परिलक्षित हो रहा है। उसका बीजारोपण झारखण्ड के एक नगर 'दुमका' में पड़ा।

यह बात मार्च 1977 की है जब सन्त चाण्डूराम साहिब देवघर से दुमका के लिए बस से यात्रा पर थे। साथ में थे उनके एक अनुयायी श्री खूबचन्द राजपाल। उन्होंने अवसर पाकर सन्त से आर्तस्वरों में पुनः लखनऊ में सन्त बाबा आसूदाराम के नाम पर 'आस्थान' निर्माण के लिए अनुमति चाही किन्तु कोई उत्तर मिलता न देख और अनेक बार किये गये निवेदन पर कृपा न होने से आहत खूबचन्द बस यात्रा में सन्त के चरणों में सिर नवाकर रोने लगे। इस करुण क्रन्दन से सन्त के हृदय में सन्त पिता के भाव उत्पन्न हुए। "भाव में सन्त पिता ने दर्शन देकर आस्थान निर्माण का संकेत दे दिया।"

अप्रैल 1977 में गोरोमल के नाम से 8 बिस्वा भूमि लखनऊ–कानपुर मार्ग से पूर्व दिशा में शारदा नहर के किनारे रूपये पच्चीस हजार में क्रय की गयी। स्थान निर्माण के लिए अनेक स्थान दिखाये गये किन्तु आज जिस स्थान पर आश्रम अवस्थित है यहाँ की प्राकृतिक सुषमा ने सन्त का मन मोह लिया। ज्ञातव्य हो कि एकान्त वास के दौरान सन्त ने जिस कक्ष में वास किया वहाँ पर सन् 1960 में बाबा आसूदाराम के श्री चरण पड़े थे और वे तत् समय भाव में समा गये थे। 15 जून 1977 को भूमि का पूजन सन्त चाण्डूराम साहिब

ने करके अन्ततोगत्वा भारतीय अनुयाइयों की मनोकामना को बल प्रदान करते हुए 6 जुलाई 1977 को मातृभूमि सिंध (पाकिस्तान) प्रस्थान किया।

भूमि क्रय होने बावजूद नवम्बर तक निर्माण कार्य आरम्भ न हुआ तो सन्त बाबा की सेवा में सन् 1942 से सन् 1947 तक रहकर प्रेमाभक्ति सीखने वाले परमानंद पंजवाणी (कानपुर) ने कार्य आरम्भ करने के लिए एक हजार नगद और एक ट्रक ईंट प्रदान किये। उनका साथ दिया प्रीतमदास और दरयानो मल ने। दिसम्बर 1977 में कार्य आरम्भ हुआ। प्रथम ईंट समाधा आश्रम–कानपुर के स्वामी शिव भजन जी महाराज ने रखी। नौ माह में आश्रम का लघु स्वरूप बन कर तैयार हुआ; विस्तार आज भी जारी है।

15 जून 1977 आश्रम के भूमि पूजन के अवसर पर साई जी एवम् दादा परमानन्द पंजवाणी आदि

20 जुलाई 1979 को सन्त चाण्डूराम साहिब का लखनऊ पुनरागमन हुआ। 3 सितम्बर 1979 के दिन 'आश्रम प्रवेश' का यज्ञ हुआ जिसे ब्राहमण श्री शिवनदास ने पूर्ण कराया। आश्रम का उदघाटन पूज्य सन्त कँवरराम के सुपुत्र साईं पेशूराम के कर कमलों से कराया गया। उदघाटन के साथ 'गुरुग्रन्थ साहब' की स्थापना "दरबार साहब" में करके अखण्ड पाठ रखा गया और 'कुटिया साहब' में सन्त सतराम दास, सन्त कँवरराम साहिब तथा सन्त आसूदाराम के चित्रों की स्थापना साईं पेशूराम, सन्त चाण्डूराम तथा दादा परमानंद पंजवानी ने संयुक्त रूप से की। साथ ही बाबा आसूदाराम की वर्सी/निर्वाण का आयोजन भी किया गया। इस प्रकार गुरुवाणी के शबद कीर्तन के साथ सन्तों के प्रवचनों से गुंजायमान हो आश्रम की गतिविधियां आरम्भ हो गयी।

फैजाबाद से साईं जगतराम, पकोड़ से साईं गोविन्दराम, जलगाँव से साईं गेलाराम, दुर्ग से भाई बनाराम के अतिरिक्त आजाद सूफी, सिंध पन्नो आकिल से साईं चेतनराम, रोहिड़ी दरबार की सेवादारिन माई मीरा आदि उदघाटन के साक्षी बने।

इस वर्सी/निर्वाण उत्सव के पूर्व आलमबाग, लखनऊ स्थित सन्त कंवरराम दरबार में 1971 से 1978 तक 'बाबा' के अनुयाइयों द्वारा वर्सी आयोजित की जाती रही। प्रत्येक वर्ष अनन्त चर्तुदशी के दिन महोत्सव के रूप में मनाये जाने का यह क्रम आज भी जारी है जिसमें देश विदेश से बाबा के भक्त आकर उनकी प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक होते हैं। हिन्द–सिंध के गायक, भगत, नर्तक उनका यशोगान

होलिकोत्सव मार्च 1979 के अवसर का दृश्य

करते हुए पुण्य के हिस्सेदार बनते हैं।

आश्रम पर 'वर्सी' का पहला आयोजन, आधार भूत ढांचे का पूर्णतया अभाव किन्तु बाबा की कृपा से तीन सौ साठ रूपये में छः तखत खरीद कर लाये गये। जिससे मंच बनाया गया और नन्दलाल ने अपनी ओर से टेण्ट लगाया तब से आज तक टेण्ट की निःशुल्क व्यवस्था श्री नन्दलाल ही करते हैं।

चूंकि जनकल्याण सन्त चाण्डूराम का स्वभाव है। अतः आश्रम के प्रारम्भ होने के कुछ ही समय में सन्त ने जनसेवा के कार्यों को करना आरम्भ किया। निराश्रित मूलाराम को सर्वप्रथम इस आश्रम में आश्रय मिला।

इस प्रकार आश्रम की गतिविधियां आरम्भ हुई और शुरू हुए मानव कल्याण की सेवा के अवसर।

पूज्य दरबार साहिब, लखनऊ

दिनचर्या का श्री गणेश :

ब्राह्म मुहूर्त में तुमुल शंख नाद के साथ आश्रम वासियों की दिनचर्या का श्री–गणेश प्रतिदिन होने का नियम सुचारु रूप से प्रतिपादित होने के कारण आश्रमवासी सदैव प्रातः काल उठ कर स्नान आदि से निवृत होकर विशाल सत्संग कक्ष में आकर प्रातः कालीन संध्योपासना के निमित्त एकत्र हो जाते हैं तथा श्रद्धालु समुदाय नगर के विभिन्न स्थलों से भी आकर बड़े हर्षोल्लास से सम्मिलित होते हैं। अभूतपूर्व श्रद्धा के वशीभूत उमंगातिरेक से प्रभु का मधुर वाणियों में संकीर्तन, भजन–भाव तथा धुनियों से गुंजायमान हो उठता है सत्संग कक्ष।

सत्संग कक्ष :

मुख्य रुप से चार भागों में विभक्त है। 1. दरबार साहिब, 2. कुटिया साहिब, 3. सज्जन पार्श्व, 4. देवी पार्श्व इसके अंग हैं। दरबार साहिब, जो अन्य तीनों से लगभग तीन फुट ऊँचा है, की मनोहारी छटा बरबस श्रद्धालुओं का ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। उसकी दीवारों पर सुनहरे अलंकृत कांच का आवरण तथा छत पर की गई आधुनिक पच्चीकारी और प्रकाश की व्यवस्था अपने वैभव का सहज परिचय दे देते हैं। दो मंझियों में से एक पर प्रकाशमान हैं आदि गुरु ग्रन्थ साहिब, राम चरित मानस, श्री मदभागवत एवं दूसरी मंझी पर प्रकाशमान हैं दादा जशन वासवाणी रचित नूरी ग्रन्थ, दादा चेलाराम दरबार का निसंग ग्रन्थ तथा स्वामी टेऊँ राम दरबार का ग्रन्थ। इस प्रकार सिन्धी सन्तो के बहु प्रसिद्ध पावन ग्रन्थ यहां अति आदर से सर्वसाधारण के अध्ययन के लिये सहज सुलभ हैं। नीचे फर्श पर कक्ष के वैभव के अनुरुप कालीन बिछे हुये हैं। इसी दरबार कक्ष के दाहिने पार्श्व में कुटिया साहिब है जिसमें दरबार साहिब के अनुरुप ही भव्य श्रृंगार के साथ परम पूज्य, प्रातः स्मरणीय, ध्यान–गम्य, सन्त शिरोमणि सखी बाबा आसूदाराम साहिब का सौम्य चित्र बीच में एवं उनकी गुरु परम्परा में सच्चे सन्त साईं सतरामदास साहिब तथा करूणावतार सन्त साईं भगत कंवरराम साहिब के सौम्य उनके दोनों ओर दर्शनीय व सुशोभित हैं। यहाँ दुःख निवारक भभूति का श्री सुरम्य पात्र, श्रद्धालु समुदाय की आकाँक्षाओं के प्रति गहन मार्मिक अनुभूति वश सदाशय से, सदैव सुलभ कर दिया गया है। शेष दोनों भागों में महिलाओं एवं पुरुषों के बैठने की सुरुचिपूर्ण व्यवस्था है। जहाँ नीलवर्णी वस्त्रों से आच्छादित कालीन बिछे हैं। पुरुष पार्श्व में एक तख्त पर परम पूज्य सन्त साईं चाण्डूराम जी के लिये आसन है; साथ ही है एक कथा मंच जिस पर बैठकर अन्यान्य पावन वाणियों का पाठ करने की भी चित्ताकर्षक व्यवस्था की गई है। यहाँ सन्त शिरोमणि जी के आसन के सम्मुख कालीन के ऊपर बिछी श्वेत चाँदनी पर संगीतकारों एवं भजन गायकों के बैठने का प्रबन्ध किया गया है। आसन के साथ

लगभग पौने दो फुट चौड़ी कपड़े की गुदड़ी (जिन्हें सिन्धी भाषा में रिल्ही कहते हैं) सन्तों, प्रवचनकर्ताओं, महात्माओं के बैठने के लिये बिछाई गई हैं। सन्त शिरोमणि के सौम्य अनुशासन में अनेक सेवादारी आश्रम के विभिन्न कार्यों में तन–मन–धन से समर्पित एवं तत्पर हैं। सुखदायी, सुरम्य, पावन एवं स्निग्ध, शान्त, सौम्य, संगीत के मधुर, मोहक वातावरण में मन लय को प्राप्त अवस्था का अलौकिक आनन्द सहज ही अनुभव करने लग जाता है। यही कारण है कि जो यहां एकदा आया उसे यहां का मनोरम वातावरण रमने के लिये लालायित कर देता है। सेवकों को सेवा भाव की, ज्ञान पिपासु को ज्ञान की, आकांक्षी को मनोरथों की, आनन्द के जिज्ञासु को आनन्द की, प्राप्ति सहज ही सुलभ है। यहां प्रतिमाह चतुर्दशी को रतजगे का कार्यक्रम होता है। यदि कोई दुर्लभ कामना है, यथा पुत्र–प्राप्ति, दुसाध्य रोग से मुक्ति आदि, ऐसी कामनायें चालीस चतुर्दशियों तक निरन्तर आने वालों की सहज ही पूर्ण हो जाती हैं।

निराश्रितों को आश्रय :

सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब ने यहां आकर वयोवृद्ध लोगों की करुण एवं दयनीय दशा को निहार कर आश्रम की अति पावन सेवा से ओत–प्रोत कार्य आरम्भ किया। समय–समय पर इसमें रहने वाले निराश्रित लोगों की संख्या बढ़ती–घटती रहती है। विगत दिनों केरल से आयी महिला सन्त "अम्मा" ने इन निराश्रितों को गले लगाकर उन्हें भाव विभोर कर दिया था।

गऊ–शाला :

लखनऊ के सन्त बाबा आसूदाराम आश्रम में एक गो–सदन है जिसमें गऊओं की संख्या प्रायः घटती–बढ़ती रहती है। इनके खाने, पीने, चरने आदि की उत्तम व्यवस्था की गई है। इनकी देखभाल का दायित्व जिन सेवादारियों पर है वे तो स्वयं सतर्कता से लगे रहते हैं पर स्वयं सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब दोनों समय सानी–पानी के समय उपस्थित रहते हैं तथा अपने कर–कमलों से गऊओं को रोटियां, फल आदि खिलाते हैं। उनका यह कार्य सत्संग आरम्भ होने के पूर्व ही सम्पादित हो जाता है।

संगीत शिक्षा :

आश्रम में रह रहे भरतपुर राज के पूर्व राज गायक श्रद्धेय मास्टर बूलचन्द साहिब जी जिज्ञासुओं को संगीत की शिक्षा देने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। वाद्य यन्त्रों के बजाने अथवा गले से मधुर रागों को गाने की कला में अप्रतिम योग्यता के धनी मास्टर साहिब सिन्धी, हिन्दी दोनों भाषाओं में शास्त्रीय गायकी में पूर्ण पारंगत हैं। उनके कण्ठ की मधुरता बरबस मोह लेती है। ऐसे योग्य कलाकार की छत्रछाया में अनेक साधक अपनी साधनाओं को सफल कर रहे हैं।

योगाभ्यास :

आश्रम परिसर में प्रातःकाल सत्संग से पूर्व योग साधना से स्वास्थ्य लाभार्थ यौगिक क्रियाओं को सुचारु रूप से बी0डी0 तुलस्यानी तथा जयराम खत्री की देखरेख में संचालित किया जाता है। इस साधना से शनैः–शनैः ध्यान की साधना तक कराने का प्रबन्ध है। मनुष्य का परम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है। उत्कृष्ट योग साधना से ध्यान लगाने पर ईश्वर के दर्शन होते हैं, इस मत को कौन नकार सकता है। योग साधक का ध्यान जब एकाग्र हो कर ईश्वर में लीन होता हैं। उसके चित्त में सांसारिक विषय वासनाओं का क्षय हो जाता है। पारलौकिक सत्ता से जुड़ जाने के कारण लौकिक माया निष्प्रभावित हो जाती है। अतः योग की साधना से जहां एक ओर स्वास्थ लाभ होता है वहीं दूसरी ओर प्रज्ञा प्रखर का विकास होता है।

उदारमना आसूदाराम साहिब का वर्सी उत्सवः

सखी बाबा आसूदाराम साहिब की वर्सी को अनन्त चर्तुदशी के पावन अवसर पर बड़े धूमधाम व श्रद्धा भाव से आयोजित किया जाता है। चार दिवसीय इस कार्यक्रम में देश भर से प्रतिनिधियों, धार्मिक स्थलों के पीठासीन महन्तों, सन्तों, महात्माओं आदि का पधारना होता है। उनके प्रवास एवं भोजन की व्यवस्था के साथ भारतवर्ष से आये हुये श्रद्धालुओं के प्रवास एवं भोजन की भी व्यवस्था दक्षतापूर्वक सेवादारियों द्वारा आश्रम की ओर से की जाती है। हजारों श्रद्धालू अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। देश के कोने–कोने से

आये विभिन्न आस्थानों के विद्वान सन्तों का एक ही विशाल मंच पर समागम होता है। उनके सारगर्भित प्रवचनों, मधुर कीर्तनों, संगीतमय भजनों से "मुक्त महल" गुँजायमान हो उठता है। चार दिनों के इस अति व्यस्त कार्यक्रम में लोग आनन्द मग्न हो विभोर हो जाते हैं। सभी महिलायें, पुरुष, युवक, युवतियाँ, बालक, बालिकायें, चौथे दिन सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम जी से आशीष एवं उनके श्री कर कमलों से प्रसाद पाकर ही अपने-अपने गन्तव्य की ओर प्रस्थान करते हैं। इस कार्यक्रम के चलते निरन्तर भण्डारा चलता रहता है। समय सारिणी के अनुसार प्रातः काल से रात्रि पर्यन्त भोजन, जलपान, चाय, दूध आदि की व्यवस्था कुशलतापूर्वक सम्पादित होती रहती है।

सखी बाबा मुक्त महल :

आश्रम में इतने विशाल आयोजनों को आयोजित करने के लिये सात हजार से भी अधिक लोगों के बैठने की सुविधा से सम्पन्न इस वैभवशाली विशाल सभागार के दो भाग किये जाते हैं। इसके एक ओर महिलाओं के बैठने के लिये तथा दूसरे भाग में पुरुषों के बैठने के लिये प्रबन्ध किया जाता है। मुक्त महल में विद्युत के पंखों, प्रकाश एवं ध्वनि-प्रसारण की सभी सुविधायें सुसज्जित हैं। यह महल पूर्व पार्श्व में तीन मंजिले भवन से, दक्षिण पार्श्व में मंच एवं चार मंजिले भवन से तथा पश्चिम पार्श्व में पांच मजिले भवन एवं आश्रम साहिब, कुटिया साहिब, दरबार साहिब, कार्यालय आदि से घिरा हुआ है। उत्तर पार्श्व में भोजनालय, भण्डारगृह, गोशाला एवं प्रवेश द्वार हैं।

भण्डारा :

सामान्य दिनों में लगभग एक सौ लोगों का चार समय का जलपान एवं भोजन नित्य-प्रति बनाया जाता है। इसमें आश्रम के सेवादारियों, श्रद्धालुओं को भी प्रसाद रूप में भण्डारे से भोजन कराया जाता है। भण्डारे हेतु प्रायः चाय और अल्पाहार, मध्यान्ह भोजन, सांय कालीन चाय व अल्पाहार, रात्रि भोजन के अतिरिक्त दोनों समय सत्संग के उपरान्त प्रसाद का वितरण भी होता है। इस हेतु दाल, रोटी, सब्जी, सलाद, चावल, रायता, चटनी, अचार व एक मीठा दिये जाने का प्रबन्ध है। फल ऋतु अनुसार दिये जाते हैं।

नित्य सत्संग :

सामान्य रूप से प्रतिदिन प्रातः 5.00 बजे से 9.00 बजे तक तथा सायं 5.00 बजे से 9.00 बजे तक सत्संग का विधान है। पर्वों, उत्सवों, सन्तों के जन्मदिनों, बर्सियों आदि पर कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन कर दिये जाते हैं। सत्संग में कथा, कीर्तन, गुरुवाणियाँ, आसा-दी-वार, आनन्द साहिब, रहिरास आरती, अरदास, बचन साहिब, प्रवचन, धुनी साहिब आदि सम्मिलित हैं। गुरुवाणियों के अतिरिक्त देश भर के कलावन्त, पारंगत, ज्ञानी, विद्वान, गायक, समाज सेवी, राजनेता इत्यादि यहां समय पर आकर अपने ज्ञान से सत्संगियों को लाभान्वित करते रहते हैं।

भाग्यशाली हैं लखनऊवासी :

हम उत्तर प्रदेश वासी खासकर लखनऊ वासी भाग्यशाली हैं कि शिवशान्ति आश्रम की स्थापना पूज्य संत शिरोमणि साईं चाण्डूराम जी के कर कमलों द्वारा 25 वर्ष पहले हुई थी। सिन्ध से आये हुये सिन्धी परिवार बेरोजगार एवं दुखी थे, साईं जी ने उनकी आर्थिक एवं मानसिक सहायता की, तथा उनके मन में सत्संग के प्रति रुचि पैदा की जिससे उनको आत्मशान्ति मिली और उत्साह पैदा हुआ और वे अपना भविष्य उज्जवल बना सके।

25 वर्ष से सेवा कार्य चलता आ रहा है। वृद्धा आश्रम खोल कर कई घरों से दुत्कारे हुये वृद्ध लोगों को आत्म सम्मान प्रदान किया है, बीमारों की सेवा होती है, आँखों का निःशुल्क आपरेशन होम्योपैथिक अस्पताल से गरीबों की सहायता की है। सामूहिक विवाह एवं सामूहिक जनेऊ की प्रथा चालू की और लोगों में दहेज के विरुद्ध जागृति उत्पन्न की तथा

फिजूल खर्ची करने से रोका। संतों का मेला, लंगर लगा रहता है और लंगर भी श्रद्धा के साथ खिलाया जाता है यह सब देखकर मन को एक सन्तोष सा प्राप्त होता है।

हम सबकी यही प्रार्थना है कि परमात्मा साईं जी को दीर्घायु दे जिससे दुःखी संसार में सुख की वर्षा करते रहें तथा हम सिंधियों की नई पीढ़ी को परमात्मा की तरफ रुचि पैदा कराते रहे, हम सबको मार्ग दर्शन कराते रहे ताकि हम सब साईं के आदर्शों का पालन करते रहे।

अर्हनिशं सेवामहे :

यह आश्रम यथानाम तथा गुण है। इसकी चहारदीवारी के अन्दर आते ही प्राणी का कल्याण (शिव) होता है तथा परमशान्ति प्राप्त होती है। अपना सौभाग्य है कि इस आश्रम की स्थापना से पूर्व ही इसके संस्थापक सद्गृहस्थ परमसन्त साईं श्री चाण्डूराम साहब जी से हमारा प्रथम मिलाप इसी पावनभूमि पर हुआ था। इस आश्रम में जन्म से लेकर पच्चीस वर्ष की युवावस्था तक का इतिहास आँखों के सामने आ रहा है। आश्रम का शान्त वातावरण, श्रीगुरुदरबार का दिव्य दर्शन, विभिन्न पावन गुरुवाणियों का निरन्तर पाठ, नियमित सत्संग व आरती, अन्नक्षेत्र व आने जाने वालों की अहर्निश सेवा विशालकाय आश्रम की दिव्य छटा में सोने पर सुहागे का काम करती है। परिचित–अपरिचित, गरीब–अमीर, सुखी–दुःखी के लिए चौबीस घण्टे द्वार का खुला रहना श्री साईं जी की विशाल हृदयता का प्रतीक है। भावना से ओत–प्रोत भक्तों की रात–दिन समर्पित सेवाएँ महाराजश्री के स्नेह व प्रोत्साहन का ही प्रतिफल है। भवन के प्रत्येक भाग के निर्माण में भक्तों की कारसेवा का गीत ये भवन सदा गुनगुनाते रहते हैं। गौ सेवा के माध्यम से तैंतीस करोड़ देवताओं की सेवा यहाँ निरन्तर होती है। नेत्र शिविर, होम्योपैथी व आयुर्वेदिक चिकित्सालय, बेरोजगारों की सहायता, विधवाओं की सहायता, प्याऊ, निर्धन बालकों की शिक्षा में सहयोग यह बताते हैं कि दूसरों के दर्द में सहायता करना ही ईश्वरफल है। सामूहिक विवाह, सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार, मांस–शराब का छुड़ाया जाना आदि के द्वारा समाज कल्याण निरन्तर होता रहता है। विभिन्न प्रान्तों के 55 शहरों में सेवा समितियों का गठन कर मिशन की सेवाओं का विस्तार कर साईं जी ने आदर्श स्थापित किया है। पाकिस्तान देश के अन्तर्गत पन्ने आकिल में स्थित मूल स्थान के माध्यम से वहाँ के सिन्ध प्रान्त के अनेक शहरों में भी उपर्युक्त सेवाएं चल रहीं हैं। यह सब हमें स्वयं देखने को मिला है। इन सब शुभ कार्यों के पीछे शिव शान्ति आश्रम के संस्थापक साईं श्री चाण्डूराम साहब की सरलता, सादगी, तपस्या, कर्मठता, गुरुभक्ति, ईश्वर प्रेम, सब के लिए प्यार, करुणा, सत्संग में रत व गुरुकृपा ही कारण है। इनके जीवन व कार्यों से अन्य संस्थाओं व साधु समाज को प्रेरणा प्राप्त होती है। इस हीरे को तराशने वाले सन्त साईं आसूदाराम साहब को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए प्रभुचरणों में यही प्रार्थना है कि साईं श्री चाण्डूराम साहब जी स्वस्थतापूर्वक युग–युग जीयें व आश्रम में सेवाओं का विकास उत्तरोत्तर होता रहे। शुभमस्तु।

नेत्र चिकित्सा :

नेत्र मानव शरीर के अति विशिष्ट अंग हैं। सन्त चाण्डूराम साहिब कहते हैं कि "परमात्मा ने सबसे सुन्दर सृष्टि की रचना की। प्रभु रचना का स्थूल दर्शन यह नेत्र ही कराते हैं। बिना नेत्र ज्योति संसार मिथ्या है।"

सन्त जी की प्रेरणा से 'सन्त बाबा आसूदाराम निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन' आश्रम परिसर में प्रत्येक वर्ष किया जा रहा है। नेत्र रोगियों

का परीक्षण, शल्य चिकित्सा, चश्मा, भोजन, आवास, घर तक पहुँचाने की व्यवस्था आदि सभी कुछ आश्रम के अनुयायी मिलकर उत्साह पूर्वक करते हैं।

इस कार्य में सहभागी हो रहे हैं श्री सन्तराम चांदवानी, श्री नारायण दास चांदवानी, डा0 घनश्याम भावनाणी, श्री राजकुमार चान्ना, श्री नानकचन्द लखमानी, श्री मनोहरलाल रायचन्दानी, श्री अशोक चांदवानी, श्री राजकुमार मंगलानी, श्री विशनदास टहिलानी, श्री चमन लाल राजपाल तथा श्री अशोक कुमार राजपाल आदि।

डा0 घनश्याम भावनानी ने बताया कि 8 वर्षों में अब तक 4396 रोगियों के परीक्षण तथा 1475 आपरेशनों की सेवा अनुयाइयों ने करवायी। विवरण इस प्रकार है।

वर्ष	ओ.पी.डी.	आपरेशन
1995	16000	96
1997	635	102
1999	263	92
2000	396	131
2001	522	186
2002	750	197
2003	843	330
2004	987	341

पुस्तकालय :

पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। एक बार महात्मा गाँधी ने कहा था 'मैं अच्छी पुस्तकों के सहारे पूरा जीवन गुजार सकता हूँ।' पं0 जवाहर लाल नेहरू सर्वदा सफर में ही अध्ययनरत रहा करते थे। उन्होंने अनेक पुस्तकें यात्रा के मध्य ही लिखकर पूरी की।

पुस्तकें ज्ञान का भण्डार हैं। पुस्तकों में अक्षर होते हैं। अक्षर अर्थात् जिसका नाश न हो यानी जिसका नाश सम्भव नहीं हैं वह ही सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान है। अक्षर ईश्वर का दूसरा रूप है। शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम में धार्मिक व सामाजिक पुस्तकों को संग्रहीत कर पुस्तकालय का स्वरूप प्रदान किया गया है।

समय–समय पर इसमें अनुयाइयों द्वारा भेंट की गयी 1350 पुस्तकें और 1000 स्मारिकाएं। पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध है। जिसमें 500 सिंधी भाषा, 750 हिन्दी भाषा तथा 100 पंजाबी भाषा में है। आश्रम में आने वाले भक्त और अनुयायी अपनी आध्यात्मिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु इसका उपयोग कर रहे हैं।

श्री दिनेश मंगलानी, श्री सुमित मंगलानी एवं कु0 चादनी लालवानी (रिंकी) यह सेवा व्यवस्था सम्भाल रहे हैं। प्रातः एवं सायं सत्संग समय पुस्तकालय खुलता है जब सत्संगी पुस्तकों का आदान–प्रदान कर सकते हैं।

❑ स्वामी विवेकानंद श्री भगवद् धाम, हरिद्वार
डा० नारायण दास सिन्धी, ज्ञाप्रटे 'सरल'

शिव शान्ति आश्रम ने भेजी राहत सामग्री उड़ीसा में आये तूफान के पीड़ितों के लिए

आश्रम में साईं जी के साथ सन्त जन

साईं आत्माराम जी, उल्हासनगर

स्वामी शिवभजन जी, शिकारपुर, सिंध

बाबा गोपाल दास 'तालिब' जी, दिल्ली

बापू आसाराम जी, अहमदाबाद

साईं साधराम जी, साईं लक्खीगीरि, साईं युधिष्ठिर लाल

दादा जे. पी. वासवानी, पुणे

बालक धन्नो फकीर, एटा

श्री नारायण स्वामी जी

आश्रम में पधारे सन्तगण

01.	दादा जशन वासवानी	पुणे
02.	सन्त दर्शनसिंह महाराज	दिल्ली
03.	पथिक जी महाराज	हरिद्वार
04.	सांई जुगतराम साहिब	हरिद्वार
05.	दादा लक्ष्मणदास (निज थांव)	दिल्ली
06.	दादी राधिका (निज थांव)	सोलन
07.	दादी मोहिनी (ब्रह्मकुमारी मिशन)	मा0 आबू
08.	बापू आसाराम	अहमदाबाद
09.	आचार्य सुधांशु जी महाराज	दिल्ली
10.	स्वामी गुरप्रीत हरि (आनन्दमूर्ति माँ)	ऋषिकेश
11.	डा0 शिशुपाल शर्मा (सर्वभूम दास)	वृन्दावन
12.	संत राजेन्द्र सिंह महाराज	दिल्ली
13.	सांई विशनदास (शदाणी दरबार)	हयातपिथापी
14.	माता अमृतानन्दमयी (अम्मां)	केरल
15.	माता देवप्रियानन्द (रामदास मिशन)	
16.	स्वामी जयरामदास (प्रा0 राम मंदिर)	ऋषिकेश
17.	महाराज मदनलाल (जय शंकर आश्रम)	शोलापुर
18.	स्वामी भगत प्रकाश (अमरापुर)	जयपुर
19.	भाई गोविन्दराम (भगत जी)	इन्दौर
20.	जगतगुरु जयेन्द्र सरस्वती	अयोध्या पीठ
21.	महामण्डलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानन्द जी महाराज (संस्थापक भारत माता मंदिर)	हरिद्वार
22.	पं0 राम किंकर उपाध्याय (मानस मर्मज्ञ)	
23.	स्वामी भास्करानन्द तीर्थ (अध्यात्मिक निकेतन)	ग्वालियर
24.	स्वामी दूद्धारी महाराज	हरिद्वार
25.	महामण्डलेश्वर सुदर्शानन्द महाराज (स्वामी मोहनानन्द आश्रम)	हरिद्वार
26.	स्वामी परमानन्द महाराज	जगन्नाथपुरी
27.	माँ महेश्वरी देवी (अध्यात्म प्रवक्ता, नानकसर)	वडोदरा
28.	महामण्डलेश्वर रघुबीर सिंह	कन्खल, हरिद्वार
29.	अवधूत बाबा शिवानन्द महाराज	
30.	स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (आयोजक गीता ज्ञान वेदांत समिति)	
31.	डॉ0 प्रणव पण्डया (शांतिकुंज)	हरिद्वार
32.	महामण्डलेश्वर स्वामी कृष्णानन्द	वृंदावन
33.	स्वामी सूर्यप्रकाश महाराज, आश्रम	पानीपत
34.	सन्त सतनाम सिंह, सिरसा	हरियाणा
35.	परमहंस महान्त रामचन्द्र दास	अयोध्या
36.	महान्त अवैद्यनाथ	गोरखपुर
37.	स्वामी श्री योगी सत्यम, क्रियायोग	इलाहाबाद
38.	स्वामी शिवम् तीर्थ, कुण्डली ज्ञान साधक	बरेली
39.	संत सुख्या सिंह गुरुद्वारा नानकसर	फिरोजपुर
40.	डॉ0 गंगादास, जुगत निवास	हरिद्वार
41.	सांई पेशूराम साहिब	अमरावती
42.	भाई ढीपाराम	रायपुर
43.	स्वामी संतोखदास	मोहनधाम इन्दौर
44.	श्री योगी ह्रदय नारायण दीक्षित	मेरठ
45.	डा0 अखिलेश	यू.एस.ए., मेरठ
46.	जगत गुरु शंकराचार्य वासुदेवानन्द	
47.	जगत गुरु रामानुज वासुदेवाचार्य	
48.	जगत गुरु माधवाचार्य	
49.	महान्थ नृत्यगोपाल दास	अयोध्या
50.	स्वामी विशवेश्वर तीर्थ	
51.	स्वामी चिन्मयानन्द महाराज	हरिद्वार
52.	पूज्य कौशल किशोर जी, कथाकार	वृन्दावन
53.	सांई मनोहर लाल साहिब	अमरावती
54.	सांई जशन लाल साहिब	अमरावती
55.	सांई वासदेव लाल वीरानी	फैज़ाबाद
56.	सांई जुगतराम	इटारसी
57.	सांई दिलीप कुमार केशवदास	नागपुर
58.	स्वामी आत्माराम	इन्दौर
59.	स्वामी गीता चैतन्य, डलमऊ	रायबरेली
60.	स्वामी आनन्द प्रकाश	पुणे
61.	स्वामी रमेश प्रकाश	कटनी
62.	स्वामी नारायण दास	बैरागढ़
63.	स्वामी अशोक लाल	वडोदरा
64.	स्वामी मोहनदास (दरबार कल्याणदास)	कानपुर
65.	स्वामी ब्रह्मदास (शिष्य स्वामी त्रिलोकदास)	कल्याण
66.	स्वामी ब्रह्मानन्द	अजमेर

आश्रम में साईं जी के साथ सन्त जन

स्वामी जुगतराम जी, हरिद्वार

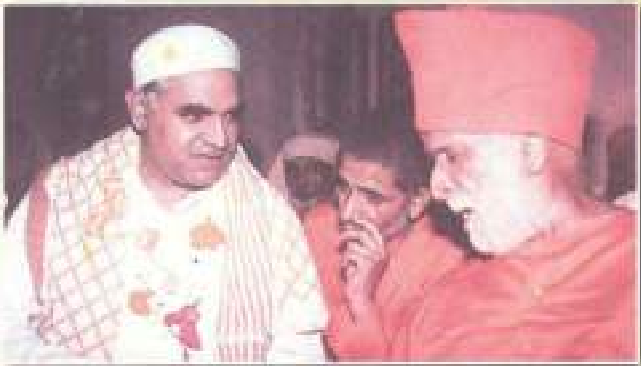

स्वामी शान्ती प्रकाश जी, उल्हासनगर - 5

स्वामी धर्मदास जी, बड़ौदा तथा स्वामी गुरदास राम जी अहमदाबाद

स्वामी ब्रह्म दास, स्वामी नारायण दास जी स्वामी रामदास जी,

स्वामी सन्तोष दास जी, इन्दौर

स्वामी भगत प्रकाश जी, जयपुर

स्वामी अशोक लाल जी, बड़ौदा

स्वामी देवप्रकाश जी, उल्हासनगर - 5

आश्रम में साईं जी के साथ सन्त जन

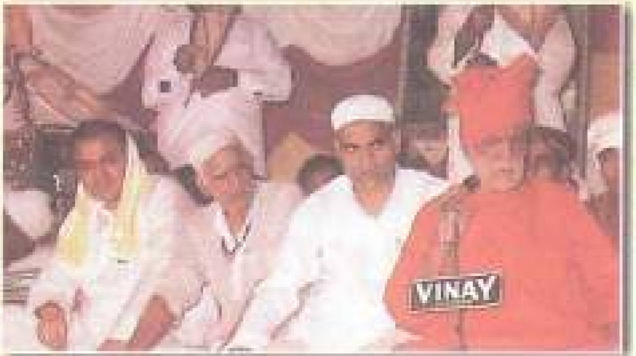

साई गोबिन्द राम, साई जगत राम, साई जी, स्वामी शान्ती प्रकाश

भगत हीराराम, साई गुरुमुख दास, साई जी

साई जशन लाल, साई जी, साई वासदेव राम

भाई द्वारिका दास, भाई छंगाराम-सतना, साई जी

स्वामी हरनाम दास, कानपुर

साई माधव दास, डा० एस० शर्मा, साई जी

भाई शम्भू नाथ, वृंदावन

साई गेलाराम, साई जुगताराम, साई जी

67. स्वामी देवप्रकाश	कल्याण
68. स्वामी वेदप्रकाश	अजमेर
69. स्वामी गुलाब	नागपुर
70. माई मीरा देवी (रोहिड़ी दरबार)	रोहिड़ी
71. भाई चेतनराम (सांई वलीराम साहिब)	पन्नो
72. भाई प्रभुदास (घोटकी दरबार)	नागपुर
73. भाई डीपाराम	मीरपुर
74. स्वामी श्यामपुरी	इन्दौर
75. सन्त पहलाज राम	धुलिया
76. स्वामी नारायण प्रकाश	देवलाली
77. स्वामी चैतन्यवन	जबलपुर
78. महाराज माधौ (महाराज धर्मपाल)	रायबरेली
79. वीर सिंह (समाणाराम दरबार)	ठुल
80. स्वामी राम दास	बैरागढ़
81. भाई जुगतराम – भाई वासुदेव	राजकोट
82. माता सीता देवी	हरिद्वार
83. युगपुरुष स्वामी परमानन्द महाराज	हरिद्वार
84. स्वामी ईश्वरानन्द ब्रह्मचारी (काकोरी)	लखनऊ
85. स्वामी गणपति महाराज	आगरा
86. स्वामी हरदासराम	जयपुर
87. स्वामी शिवभजन महाराज (समाधा आश्रम)	शिकारपुर, कानपुर
88. स्वामी हरदासराम	जयपुर
89. सन्त सिंह मिस्कीन	अलवर
90. बापू नारायण स्वामी	अहमदाबाद
91. महामण्डलेश्वर माता संतोषी	ऋषिकेश
92. स्वामी सनातन श्री (सनातन मंदिर)	लखनऊ
93. माता गंगादेवी (धर्मपत्नी सांई कंवरराम)	अमरावती
94. सांई साधराम साहिब	रहिड़की, सिन्ध (पाक0)
95. भाई गेलाराम साहिब	जलगांव
96. सांई श्रीचन्द (बीरबल आस्थान)	डबरा
97. भाई सीरूराम साहिब	अमरावती
98. भाई आत्माराम साहिब	अमरावती
99. सांई अमरदास	रायगढ़
100. भाई पहलाजराम	नागपुर
101. सांई आत्माराम (वसण घोट)	कल्याण
102. सांई सुखराम दास (वसण घोट)	नागपुर
103. सांई परमानन्द (वसण घोट)	कल्याण
104. सांई गुरुमुखदास (वसण घोट)	कल्याण
105. भाई आचरराम	मऊनाथभंजन
106. स्वामी हरनामदास	कानपुर
107. रंगीली सखी	वृन्दावन
108. स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज	उल्हासनगर
109. स्वामी नारायणदास, (अध्यक्ष : सिन्धी साधु समाज)	उल्हासनगर
110. स्वामी विवेकानन्द (भगवत धाम)	हरिद्वार
111. स्वामी गणेशदत्त शुक्ला (धर्म प्रचारक)	द. अफ्रीका
112. दादा विशनदास	गोण्डा
113. दीवान लक्ष्मणदास साहिब	इन्दौर
114. दीवान मोतीराम साहिब	इन्दौर
115. दादी धन्नी फकीर (राम दरबार)	एटा
116. सांई जगतराम	फैज़ाबाद
117. सांई गोविन्दराम	पाकुड़
118. सांई गोविन्दराम	रायपुर
119. सांई आनन्द राम	कोलकाता
120. बाबा गोपाल दास तालिब	दिल्ली
121. स्वामी चरणदास	इन्दौर
122. स्वामी तीर्थदास	कानपुर
123. सांई युधिष्ठिर लाल	रायपुर
124. सांई लक्खी गिरि	भोपाल

'सिन्धु रत्न' उपाधि प्रदान की उ0 प्र0 सिन्धी सभा ने

राष्ट्रीय सिक्ख संगत ने खड्ग भेंट कर सम्मानित किया सांई जी को

साईं जी के साथ सन्त जन

साईं सुखराम दास एवम भगत बनाराम

स्वामी गोविन्द राम, हालाणी दरबार, अजमेर

दूल्हा दरवेश साईं कन्हैया लाल, रहड़की साहिब, सिन्ध

स्वामी हरिहर दास, बाराणसी, स्वामी हरिदास राम, जयपुर

मौजी बाबा, ग्वालियर

साईं जी के साथ स्वामी जी

साईं विक्रम लाल, रहड़की साहिब, सिन्ध

दादी इन्द्रमोहिनी, ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउन्ट आबू

भगत, गायक एवं कलावन्त आश्रम में

01.	भगत घनश्याम	मुंबई
02.	भगत ठारुराम	दिल्ली
03.	भगत इन्द्र सिंह	दिल्ली
04.	भगत मिट्ठूराम	बालाघाट
05.	भगत शमनगुडी	दिल्ली
06.	भगत सहजराम, सुशीला देवी	नागपुर
07.	भगत गुरुमुखदास	नागपुर
08.	भगत किशनचन्द	अजमेर
09.	भगत प्रीतम	भावनगर
10.	भगत अरजनदास	अहमदाबाद
11.	भगत हासाराम	अजमेर
12.	भगत भाई बन्नाराम	राजनांदगांव
13.	भगत कल्लूराम	अजमेर
14.	भगत हीरानन्द	सिंध
15.	भगत राजाराम	सिंध
16.	भगत लक्खीराम	सिंध
17.	भगत पंजूराम	सिंध
18.	भगत कौड़ाराम	इन्दौर
19.	भगत होलाराम	कोटा
20.	भगत रांझाराम	वाराणसी
21.	भगत राम प्रताप 'कमल'	अजमेर
22.	भगत परमानन्द प्यासी	जयपुर
23.	भगत मीरा देवी	वडोदरा
24.	भगत वीरभान	जयपुर
25.	विशनी ईसरानी	गांधी धाम
26.	मोहन सागर (रेडियो सिंगर)	अजमेर
27.	भाई भगतराम	चक्रभाटा
28.	रागी महिंदरजीत सिंह	दिल्ली
29.	राम श्याम पार्टी	बैरागढ़
30.	आज़ाद सूफी	अहमदाबाद
31.	बालक मण्डली (गोवर्धन–दिलीप)	कटनी
32.	बालक मण्डली	रीवा
33.	दीपक एण्ड पार्टी	कटनी
34.	सोनू एण्ड पार्टी	चिरगांव
35.	शर्मा बंधु (रामकथा वाचक)	मुज़फ्फरनगर
36.	पं० रामदेव शर्मा, रामदरबार	मुज़फ्फरनगर
37.	मामतानी वकील साहिब कलगीधर सत्संग	नागपुर
38.	भगत टोपणदास	
39.	भगत सुदामो कल्लूराम	हयातपिताफी
40.	भगत कन्हैयो, भगत संगीत कुमार	ड्हरकी
41.	मास्टर बूलचन्द (राजगायक)	भरतपुर
42.	माता सत्या देवी	वृन्दावन
43.	भजन गायक अनूप जलोटा	मुंबई
44.	मास्टर महेशचन्द्र (पुत्र मास्टर चन्दर)	मुंबई
45.	सांई शम्भूलाल (मिठड़ी अम्मा)	वृन्दावन
46.	श्रीमती अनिला सुन्दर (नृत्यांगना)	मुंबई
47.	भगत योगीराज श्री ईश्वर आडवाणी	दुबई
48.	कु० विनीता सूद, शालिनी सूद	दिल्ली
49.	सांई बलराम, रत्ना	बैरागढ़
50.	श्रीमती पारू चावला	मुंबई
51.	श्री ठाकुर चावला	मुंबई
52.	श्री लख्मी खिलाणी (सिन्धालॉजी)	गांधी धाम
53.	श्रीमती पद्मा गिदवानी	लखनऊ
54.	श्री केवल कुमार	लखनऊ
55.	श्री होलाराम थदानी	लखनऊ
56.	श्री गोविन्द घनश्यामदासानी	लखनऊ
57.	श्री किशोर चतुर्वेदी	लखनऊ
58.	सोनू बाबा पार्टी	अहमदाबाद
59.	मधुकर गोस्वामी	वृंदावन
60.	आंजनेय शर्मा	मुजफ्फरनगर
61.	श्री विजय परियाणी	राजनांदगांव
62.	देवा एण्ड पार्टी	सतना
63.	भगत घनश्याम दास	सिंध
64.	भगत जमना दास	कानपुर

सिंधी युवकों का संकल्प

महासमर का बिगुल बज उठा, करो सभी तैयारी।
नवल विश्व के सृष्टि सृजन की, आज हमारी पारी।।
हर हर महादेव ....
सिन्धु सन्तरण करने की फिर, सिन्धु पुत्रों ने ठानी।
अब न चलेगी कहीं धरा पर, पशुता की मनमानी।।
शस्त्र और ले शास्त्र करों में, चले अतुल बलधारी।।
नवल विश्व के ....।।
भोगवाद का तिमिर हरेगा, गीता ज्ञान प्रकाश।
सामी की वाणी लायेगी, मधुऋतु नव उल्लास।।
वेद ऋचाओं से अभिमंत्रित, होगी धरती सारी।
नवल विश्व के ....।।
लिखना है इतिहास पुनः अब बप्पा के हय टापों से।
सिंधु पुत्रों के शूल और, दाहर के खड्ग प्रतापों से।।
महासिन्धु में परिवर्तन की, लहरें उठती भारी।
नवल विश्व के ....।।
आर्यशील संस्कृति की शिक्षा, देने निकले हम हैं।
अश्वमेध का अश्व चल पड़ा, रोके जिसमें दम है।।
नयन खोलकर विश्व देख ले, आयी सदी हमारी।
नवल विश्व के सृष्टि सृजन की, आज हमारी पारी।।

'आश्रम' में पधारे राजनेता

1.	श्रीमती शीला कौल, केन्द्रीय मंत्री	दिल्ली
2.	श्री अनिल शास्त्री, केन्द्रीय मंत्री	दिल्ली
3.	मा. अटल बिहारी वाजपेई, प्रधानमंत्री	दिल्ली
4.	मा. लालकृष्ण आडवाणी, उप प्रधानमंत्री	दिल्ली
5.	मा. सुरेश केसवानी, सांसद	दिल्ली
6.	पं. शिव कुमार, निजी सचिव, प्रधानमंत्री	दिल्ली
7.	मा. लेखराज बच्चानी, सांसद	दिल्ली
8.	मा. सुनील शास्त्री, मंत्री	उ.प्र.
9.	मा. श्रीमती दीपा कौल, मंत्री	उ.प्र.
10.	मा. पं. लोकपति त्रिपाठी, मंत्री	उ.प्र.
11.	मा. हरीशचन्द्र श्रीवास्तव, मंत्री	उ.प्र.
12.	मा. वीर बहादुर सिंह, मुख्यमंत्री	उ.प्र.
13.	मा. राजनाथ सिंह, मुख्यमंत्री	उ.प्र.
14.	मा. मोतीलाल वोरा, महामहिम	उ.प्र.
15.	मा. विष्णुकान्त शास्त्री, महामहिम	उ.प्र.
16.	मा. केसरीनाथ त्रिपाठी, अध्यक्ष विधानसभा	उ.प्र.
17.	मा. लालजी टण्डन, मंत्री	उ.प्र.
18.	मा. रमापति शास्त्री, मंत्री	उ.प्र.
19.	मा. श्रीमती शीमा रिज़वी, मंत्री	उ.प्र.
20.	मा. मोहनलाल खट्टर, सदस्य वि0प0	बरेली
21.	मा. सुरेश चन्द्र तिवारी, विधायक	लखनऊ
22.	मा. श्रीमती प्रेमवती तिवारी, विधायिका	लखनऊ
23.	मा. डा. दाऊजी गुप्त, महापौर	लखनऊ
24.	मा. डा. एस.सी.राय. महापौर	लखनऊ
25.	मा. भगवानदास चावला (एम.पी.)	सिन्ध
26.	मा. मेहरुमल जगवानी (एम.पी.)	सिन्ध
27.	मा. गोविन्दाचार्य जी (भा.ज.पा.)	दिल्ली
28.	श्रीमती रीता बहुगुणा (पूर्व महापौर)	इलाहाबाद
29.	माननीय राम जेठमलानी (पू0 के0 मंत्री)	दिल्ली

समाज सेवी, साहित्यकार, प्रशासनिक अधिकारी

अशोक सिंघल

जो आले जर्फ हैं वो आले गरज से झुककर मिलते हैं,
जैसे साकी खुद ही झुककर प्यासों के पैमाने भरती है।

1. पद्मश्री हून्दराज ''दुखायल'' गांधी धाम
2. मा. देवीदास आर्य कानपुर
3. मा. दादा प्रो. परमानन्द पंजवानी कानपुर
4. मा. नानकराम ईसरानी अजमेर
5. मा. द्वारको सुन्दरानी (समन्वय आश्रम) बोधगया
6. बहन राधा देवी (ब्रह्मकुमारी मिशन) लखनऊ
7. डॉ. दयाल आशा मुंबई
8. डॉ. कन्हैयालाल तलरेजा दिल्ली
9. दादी द्रौपदी अमर (शिक्षा विभाग) अमेरिका
10. मा. डा. रोचलदास (कैंसर अस्पताल) नागपुर
11. डा. नारायणदास सिन्धी लखनऊ
12. मा. भरतहरि (सम्पादक) सासाराम
13. मा. अशोक हिन्दूजा (उद्योगपति) मुंबई
14. मा. सरदार नूर सिंह (आर्मी रिटायर्ड) इंग्लेण्ड
15. मा. मोहन शर्मा
(पर्यावरण प्रदर्शिनी आयोजक) लखनऊ
16. मा. सरल झाप्रटे,
सचिव–उ.प्र. सिंधी अकादमी लखनऊ
17. मा. वी.के. वार्ष्णेय,
निदेशक – उ.प्र. सिंधी अकादमी लखनऊ
18. श्रीमती गायत्री देवी शर्मा,
गायत्री परिवार, लखनऊ
19. मा. डा. एस.वी. त्रिपाठी,
एन.सी.के.आर. हॉस्पिटल दिल्ली
20. मा. दीपचन्द सैलानी कटनी
21. मा. झम्मटमल वाधवानी (भा. सिन्धु सभा) मुंबई
22. मा. ज़ेठो लालवानी वडोदरा

पद्मश्री हून्दराज 'दुखायल', गांधी धाम आश्रम में

23. मा. मुरलीधर जैतली दिल्ली
24. मा. कन्हैयालाल लेखवानी पुणे
25. बहन वीना श्रृंगी (AIR) दिल्ली
26. श्रीमती शालिनी सागर (AIR) दिल्ली
27. मा. अशोक करम (AIR) दिल्ली
28. मा. डी.एस. लाखा, (मण्डल आयुक्त) लखनऊ
29. मा. हीरामणि यादव, प्रमुख सचिव, वीज़ा लखनऊ
30. मा. डी.एन. सामल, (आई.जी. पुलिस) लखनऊ
31. मा. अम्बवानी जी (डी.आई.जी.) – लखनऊ
32. मा. अशोक सिंहल, विश्व हिन्दू परिषद–दिल्ली
33. मा. प्रवीण भाई तोगड़िया, विहिप–दिल्ली
34. मा. स्वान्त रंजन, प्रचारक आर.एस.एस.लखनऊ
35. मा. अधीश जी, प्रचारक आर.एस.एस.– लखनऊ
36. मा. आर. के. मित्तल, प्र0 सचिव–वीजा उ0प्र0शा0
37. मा. श्रीधर शास्त्री,
प्रधानमंत्री–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
38. डॉ0 मोतीलाल जोतवाणी दिल्ली
39. मा. रेवाणी टेकचन्द मस्त उल्हासनगर
40. मा. लक्ष्मण दुबे जूनागढ़
41. मा. अर्जुन चावला अलीगढ़
42. डॉ0 रविप्रकाश टेकचन्दानी दिल्ली
43. डॉ0 किशोर वासवानी हैदराबाद
44. मा. हरी आत्माराम सामताणी मुम्बई
45. मा. नारायण सामताणी वाराणसी
46. मा. नरसिंह गोलाणी मुम्बई
47. कु. निर्मला आसनाणी भावनगर

''साईं पच्चीसा''

शिव जटा सा रहड़की साहिब, स्रोत ज्ञानोत्री पन्नोआकिल।
श्री शिव शांति आश्रम रूपी, स्थापित एक आध्यात्मिक महल।

शिव भी यहीं हैं शांति भी है, अद्भुत यह साधना–स्थल।
हर चोडस पर साईं दर्शन, प्रेमी रहते व्यग्र–व्याकुल।

बहती रहती जहाँ ज्ञान–गंगा की सदैव धारा अविरल।
गोते जिसमें लगा सभी, जीवन अपना करते सफल।

यहाँ निकलता ससहजता, हर समस्याओं का है हल।
विवाह–सामूहिक उपनयन, दान विद्या–औषध–धन–अन्न–जल।

अनगिनत मिसकीनों ज़रूरतमंदों के दुख से हो जाते नयन सजल।
निराश्रितों को आश्रय मिलता, परमार्थ की नींव अचल।

अखण्ड पुरुषार्थ से अविस्मरणीय समाज सुधार की पहल।
दिव्य प्रवचन प्रेरणा देता, श्रद्धावानों को प्रतिपल।

पारस भांति स्वयं सा बनावें, हैं मानों अहंता के खरल।
ऋषि मुनियों के पद्चिन्हों पर, चलते–रहते नम्र सरल।

कर्म कांड प्रपंच झूठे कहते, हो केवल वचनों पर अमल।
विषय विकारों को पूर्णविराम, बरसाते भक्तों पर कृपादृष्टि–फल।

शरण–क्षत्र में पहुँचे तो हो, माया का बल–छल–निश्फल।
शिक्षा देते दहेज–दिखावा, है कुरीतियों का दल–दल।

सदाचार अनुशासन के दृढ़ संकल्पों से, जाते हैं दुर्गुण दहल।
निराभिमान कर्मयोग सत्यनिष्ठा सिद्धान्त अटल।

जहाँ परोपकार के कार्य निरन्तर, वहाँ निश्चय प्रगट सुफल।
मस्तक विश्वास से झुकाया जिसने, भाग्य भी जाता है बदल।

मनोकामनाएँ पूरी होतीं, ऐसा है त्याग–तप–बल।
बाबा आसूदाराम की अति सुन्दर, फल–फूल रही है फसल।

मर्यादामूर्ति के मार्ग–दर्शन में खिलता रहे लक्ष्मणपुर का ये कमल।
पच्चीस वर्षों पर पच्चीस पंक्तियाँ, बनी महेश की एक ग़ज़ल।

महेश
(सुपुत्र स्वामी गंगादास उदासीन, हरिद्वार)

सत्यान्वेषी संत सतराम दास
जिसके दर से कोई खाली हाथ न लौटा

सरहद के उस पार पाकिस्तान में सिन्ध प्रान्त के जनपद 'घोटकी' का गांव 'रहड़की' एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है जिसमें ईश्वरीय शक्तियां विद्यमान हैं। नाम है 'सन्त सतरामदास साहिब'। वे सूफी और सत्यान्वेषी थे।

इस सूफी के रहड़की में जन्म के फलस्वरूप यह छोटा सा गांव पतित पावन बन गया है। विश्व के कोने-कोने से लोग यहाँ अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं ऐसा कोई नहीं होता जो खाली हाथ लौटता हो। अश्रुपूरित नयनों से जो भी यहाँ आते हैं; सन्त उनकी इच्छाएं पूरी करते हैं और वे प्रसन्नवदन तृप्त होकर लौटते हैं।

सन्त सतरामदास, संत कंवरराम के गुरु एवं आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे। वे धर्म के सागर एवं आध्यात्मिक नेतृत्वकर्ता थे। सन्त सतरामदास को अपने पिता संत खोताराम साहिब से ईश्वरीय ज्ञान, चमत्कारिक शक्ति की कला और आध्यात्मिकता विरासत में प्राप्त हुयी। वे सांसारिक और शारीरिक मोह से परे ईश्वर भक्ति में निमग्न रहने वाले सन्त थे। सन्त खोताराम साहिब की तीन सन्तानें थीं। भाई सहजराम, भाई सभागचन्द और उनमें सबसे छोटे थे संत सतरामदास साहिब।

संत सतरामदास को अपने महान पिता संत खोताराम साहिब की कृपादृष्टि प्राप्त हुयी थी। यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति की उम्र आने पर ही गुरू से गुण प्राप्त हों अपितु यदि व्यक्ति की आत्मा उसे प्राप्त करने योग्य परिपक्व हो गयी है तो वह कृपा समय से पूर्व ही गुरू से प्राप्त हो सकती है।

रहड़की के निकटवर्ती स्थान जहानपुर के भाई वीरूराम के सानिध्य में संत सतरामदास साहिब ने पवित्र पुस्तकों का अध्ययन किया। संत गीता, महाभारत व रामायण के ज्ञाता थे। वे कबीर, फरीद, नामदेव, तुकाराम और गुरु नानकदेव के भजन गाते थे। मन को सुकून पहुँचाने वाली तथा पीड़ा को हरने वाली मधुरवाणी में गाते थे।

सन्त के अनुयायी पूरे सिंध में फैले हुए थे। दूरस्थ स्थानों से आशीवाद प्राप्त करने के लिए लोग उनके पास आने के अभ्यासी थे। जब भी किसी को कष्ट होता – सहायता के लिए सन्त के द्वार पर दस्तक देता। वे 'मानव सेवा में ही माधव सेवा हैं' ऐसा विश्वासस रखकर गरीबों, बेसहारों की सहायता किया करते थे। उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि प्राणी को ईश्वर के निकट रहना है तो उनके बच्चों की सेवा करों।

सन्त सतरामदास इस पृथ्वी पर न केवल मानव सेवा करते अपितु पशु-पक्षियों की भी देखभाल करते थे। वे घायल पशु-पक्षियों की मरहम पट्टी स्वयं ही करते। पशु-पक्षियों और प्राणियों में प्रभु परमात्मा की सत्ता को वे समान रूप से देखते थे। यह उनकी शिक्षाओं का ही उदाहरण है कि अपने घर में पालतू खरगोश की प्राण रक्षा की।

परस्पर प्रेम पूर्वक रहने के लिए सदा-सर्वदा लोगों को प्रेरित करते रहते और भविष्य के सुखमय,

सुन्दर व शांतिमय संसार की रचना की शिक्षा दिया करते थे। वे ज्यादातर समय महान सूफ़ी संतो के सत्संग सुनने के अतिरिक्त ध्यान करने में व्यतीत करते थे।

उन्हें जब भी पता चलता कि गांव में कोई सन्त आ रहे हैं तो वे उनका सत्संग अवश्य सुनने जाते। यह सर्वविदित सत्य है कि संत सतरामदास हमेशा गरीबों, जरूरतमंदों, अपाहिजों और अनाथों की सहायता किया करते थे। यह मान्यता थी कि जो लोग अपने अनुरोध और इच्छाएं लेकर उनके पास आते थे संत के आर्शीवाद से ही ईश्वर उनकी मनोकामनाएं पूर्ण कर देते थे।

संत में ईश्वरीयवास होने के कारण उनके स्पर्श मात्र से ही लोग स्वस्थ हो जाते थे। उन्होंने कुछ ऐसे चमत्कार दिखाए जिससे गरीबों के दुःख, दर्द दूर हो गये। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन, जरूरतमंदो, गरीबों की सहायता करने में बिता दिया और लोगों के सामाजिक, नैतिक उद्धार के लिए कार्य किये।

सन्त सतरामदास ने जन्म लेने के पश्चात् माँ का दूध नहीं पिया। उनके पिता को यह चौथे दिन बताया गया। दूर द्रष्टा व सन्त पिता को यह सब समझने में तनिक भी विलम्ब न हुआ। पिता ने पुत्र के कान में जाकर कहा कि "कच्चा जीव इस संसार में पक्का होने के लिए आता है। हमें तुम्हारी ख़बर है। दूध पियो 'माया' तुम्हे प्रभावित नहीं करेगी तुम 'माया' से निर्लेप ही रहोगे।" इस पर आश्वस्त हो उन्होंने स्तनपान किया।

यह कथा उस पवित्र व्यक्ति की है जिसने सादा जीवन उच्च विचार को अपनाते हुए जीवन भर एक साधारण व्यक्ति की भांति दूसरों की सेवा करते हुए व्यतीत किया। जो भी उनसे मिलता वह यह समझ ही नहीं पाता था या पहचान पाता कि वे साधारण मानव रूप में महान आत्मा हैं

वे सत्य निष्ठ ईश्वर अनुरागी और अनुयायी थे और सदा सृजनहार की प्रशंसा के गीत गाया करते थे। वे हमेशा मधुरवाणी में भजन गाते थे। यह कहा जाता है कि जब वे सत्संग करते तो लोग भौतिक संसार से परे सुध–बुध खोकर उनके भजन सुनने में भाव–विभोर हो जाते। उनका गायन अबाल–वृद्ध, निर्धन सम्पन् आदि सभी को आकर्षित करने वाला था। वे सिंध की जानी–मानी हस्ती थे उनका नाम स्वयं में सिंध और उसकी सुन्दरता का स्मरण कराता है।

अनुवाद सहित पुर्नप्रस्तुतिः

❑ **श्रीमती अंजलि झाप्रटे**

साभारः सच्चो सतराम डॉट काम

आश्रम सेवकों से अपेक्षा :

नींव के पत्थर भी इमारत का बोझ वर्षानुवर्ष उठाते रहते हैं, फिर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते हैं, न ही टूट जाते हैं। ऊपर जाने की इच्छा नहीं, स्थान छोड़ने का नाम नहीं, टूटने का प्रश्न ही नहीं, लोगों को अपना नाम मालूम कराने का विचार नहीं– ऐसे निःस्वार्थ, दृढ़ पवित्र और विशुद्ध आचरण वाले, अखण्ड– अविरल कर्मशील प्रेरणास्रोत कार्यकर्त्ता होने चाहिए। ऐसे ही व्यक्तियों द्वारा समाज की धारणा होती है।

कर्मयोगी सन्त अमर शहीद कँवरराम साहिब

"आग लगी आकाश में झर-झर गिरें अंगार
संत न होते जगत में तो जल मरता संसार"

सिन्ध की पावन भूमि, अनगिनत साधु, सूफी, संतों एवं दरवेशों की जन्म भूमि रही है। जिन्होंने हज़ारों लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया है। सन्त मात्र माटी के पुतले नहीं हैं। उनके जीवन को यदि हम गहराई से देखें तो हम पाएंगे कि वे स्वयं अपने जीवन में महान आदर्शों को आत्मसात किए हुए हैं। उन्होंने मन की इच्छाओं को वश में कर, कर्मयोग और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाकर, अपनी आत्मा को परमात्मा के अधीन कर, स्वयं को इस संसार से अलिप्त रखा है। ऐसे कर्मयोगी, त्यागी, तपस्वी अमर शहीद सन्त कंवरराम साहिब सिन्ध की देन थे।

संत कंवरराम जी का जन्म 13 अप्रैल सन् 1885 ई. वैसाखी के शुभ दिन सिन्ध प्रान्त में सक्खर जिले के मीरपुर माथेलो तहसील के 'जरवार' ग्राम में हुआ था। उनके पिता ताराचन्द एवम् माता तीर्थबाई दोनों ही प्रभु भक्ति एवं हरि कीर्तन करके सन्तोष और सादगी से अपना जीवन व्यतीत करते थे। उदरपूर्ति के लिए श्री ताराचन्द एक छोटी सी दुकान चलाते थे। उनके जीवन में सन्तान का अभाव था। सिन्ध के परम सन्त खोताराम साहिब के यहाँ माता तीर्थ बाई द्वारा हृदय भाव से सेवा करते, सन्त श्री के आशीर्वाद से उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम "कंवर" रखा गया। **कंवर का अर्थ है "कंवल" अर्थात कमल का फूल। नामकरण के समय संत खोताराम साहिब ने भविष्यवाणी की कि जिस प्रकार कमल का फूल तालाब के पानी और कीचड़ में खिलकर अलिप्त रहता है वैसे ही इस जगत में "कंवर" भी निर्मल, विरक्त होगा और सारे विश्व को सेवा की सुगंध से महकाएगा।**

बाल्यावस्था से ही सन्त कंवरराम जी की रुचि ईश्वर भक्ति और भजन कीर्तन में थी आपके मधुर स्वर की गूंज गांव के आस-पास हर जगह फैली हुई थी। अपनी उदरपूर्ति हेतु उनकी माता उन्हें चने उबाल कर बेचने के लिए देती थीं। वह अपने मधुर स्वर से गाते, आवाज़ लगाते चने बेचा करते थे। एक बार जरवार ग्राम में सिन्ध के महान सन्त खोताराम साहिब के सुपुत्र सन्त सतराम दास जी का संध्या समय कीर्तन हो रहा था। उसी समय चने बेचने के लिए मधुर सुरीली और बुलन्द आवाज़ में किशोर कंवर ने आवाज़ लगाई। चने को सिन्धी भाषा में "कोहर" कहा जाता है। कोहर का अर्थ ऐसा ही समझा जा सकता है कि कोई मेरे पापों को हर ले "शान्त करे"।

संत सतराम दास जी ने सुरीले, कोहर बेचने वाले, किशोर कंवर को सेवादारियों के माध्यम से बुलवाया और उन्हें आग्रह किया कि बुलन्द और मधुर स्वर में पुनः गायें। उनके मधुर और सुरीले स्वरों की मधुरता व अर्न्तभाव ने संत हृदय को द्रवित कर दिया। सन्त सतराम दास जी ने उनके सभी कोहर ले कर

संगत में बंटवा दिये, कोहर की कीमत के पैसे भी कंवर ने न लेकर सम्पूर्ण कोहर उनके चरणों में रख दिए। सन्त जी के आशीर्वाद की अनेक धाराएं निकल पड़ी। पहली मुलाकात में ही कंवरराम जी गुरु महाराज की आध्यात्मिक पूंजी के उत्तराधिकारी बन गये।

गुरु सतराम दास जी भक्ति भाव में पसीने की कमाई को बड़ा महत्व देते थे। कीर्तन में भेंट में आए हुए धन का उपयोग व्यक्तिगत कार्यों में न लगाकर दीन व अपाहिजों में बांट देते थे। इसी उपदेश पर संत कंवर राम जी भी जीवन पर्यन्त अटल रहे।

बाल्यावस्था में शदाणी सन्त तनसुखराम साहिब के शिष्य सूरदास "भाई हासाराम जी" (हयात पिथाफी) के कड़े अनुशासन में रहने के कारण कंवरराम संयमी व नम्र तो थे ही, यौवनावस्था में वे और भी झुक गए। वृक्षों में फलों के लद जाने से जो झुकाव आ जाता है वही झुकाव था इस युवा सन्त में। जन्म भी सन्तों के आशीर्वाद का परिणाम रहा। बाल्यावस्था व किशोरावस्था दोनों ही सन्तों के संग में व्यतीत हुई। सन्तों के प्रभाव के कारण वे सदैव ईश्वर चिन्तन में खोए रहते थे। भाई ताराचन्द को अपने पुत्र का गुमसुम रहना नहीं भाया। वे उसे लेकर रहड़की दरबार में उपस्थित हुए। वहां जैसे सन्त सतरामदास साहिब भी इस कोहर बेचने वाले अलौकिक बालक की मानों व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे। औपचारिक निवेदन के उपरान्त भाई ताराचन्द ने बालक के जन्म का आशीर्वाद सन्त सतरामदास साहिब को उनके पिताश्री सन्त खोताराम साहिब द्वारा दिए जाने की जानकारी भी दी। दिव्यता का आकर्षण एक तरफ नहीं होता अपितु दोनों ओर से होता है। जहां कंवरराम को सन्त सतरामदास साहिब की सेवा में जाने की व्याकुलता थी, वहीं सन्त सतरामदास साहिब को भी सुयोग्य शिष्य को पाने की अभिलाषा व्यग्र किए हुए थी।

मन्द मुस्कान के साथ, उन्मीलित नयनों में अभिराम आह्लाद की वर्षा हो रही थी। गुरु की अधर–सुधा से अभिसिंचित वाणी जब गंभीरता से प्रस्फुटित हुई; कंवरराम साहिब का हृदय कमल खिल उठा। वे रहड़की की लोक प्रसिद्ध दरबार में स्वीकार कर लिए गए। उनके पिता भाई ताराचन्द तो हर्षातिरेक से कण्ठ के अवरूद्ध हो जाने के कारण केवल नमन मात्र ही कर सके। एक भी शब्द उनके मुख से नहीं निकल पाया। हर्ष था पुत्र के स्वीकारे जाने का तो शोक था पुत्र रत्न से बिछुड़ने का दोनों भावों से भरे व सच्चे सन्त से विदा लेकर अपने घर को लौट आए।

मृदुभाषी संत कंवरराम बचपन से ही साधु स्वभाव के थे। उनके मन में कभी अभिमान, कटुता, छल–कपट या लोभ लालच जन्म न ले सका। संगीतज्ञ भाई हासाराम जी से उन्होंने गायन शिक्षा प्राप्त की। अपने गुरु संत सतरामदास साहिब की सेवा में रहकर वे बड़े ज्ञानी ध्यानी बन गए। उनके सदगुणों के कारण उन्होंने कंवरराम जी को गायन, नृत्य व संगीत विद्या में प्रवीण कर दिया। वे अपने गुरु के साथ जगह–जगह परम्परागत 'भगति' कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे। गुरु सतरामदास जी के परम् धाम सिधारने के पश्चात् उनका सारा भार संत कंवरराम जी के कंधों पर आ पड़ा। सिर पर पगडी और तन पर जामा पहनकर तथा पैरों में घुंघरू बांधकर संत कंवरराम गांव–गांव जाकर 'भगति' के माध्यम से ईश–वन्दना, प्रभु भक्ति, आध्यात्मिक, नैतिक व मानवीय आदर्शों और साम्प्रदायिक सदभाव का प्रचार करते थे।

सन्त जी बोलचाल में अत्यन्त सादे व सरल थे, वे सफेद खादी की धोती, कुर्ता, कन्धे पर गमछा, सर पर गोल टोपी या पगड़ी, पैरों में जैसलमेरी जूती धारण करते थे। कीर्तन के समय उनके पहनावे की झलक संत तुकाराम, नामदेव में देखी जा सकती है व गायन के समय प्रभु भक्ति में लीन होकर नृत्य करते रहना श्रद्धालुओं को चैतन्य महाप्रभु का सजीव दर्शन कराता था।

संत कंवरराम जी की दिव्य कंचन काया में अनोखी आकर्षण शक्ति थी। हृदय में मधुरता का झरना था। मुख से मधुर व नम्र बोल निकलते थे। उनकी आवाज़ सुरीली तथा कोमल व मनमोहक थी। गायन में दर्द व तड़प थी। उनकी आवाज़ में अत्यधिक मिठास थी। उनके कलाम, भजन में ऐसी तासीर थी कि सन्त कंवरराम साहिब की भगति की जानकारी मिलते ही हज़ारो की तादाद में आस–पास के गांवों के हिन्दू–मुसलमान एकत्र हो जाया करते थे। वे अक्सर अमृत वेला में गाते थे और दिन के दो पहर तक उनका भजन उसी तन्मयता के साथ चलता रहता था। दूर–दूर से आए हुए लोग उनके मधुर गायन का

आनन्द लेते थे उनके गायन में ज्यादा हिस्सा सूफी कलामों का होता था। वे कलाम केवल लोगों के लिए नहीं बल्कि सिन्धी सूफी संस्कृति के पैगाम को जन–जन में पहुंचाने के लिए प्रचारक बनकर गाते थे। उनमें स्वयं को जानने पहचानने का ज्ञान, निष्कपट प्रेम और नैतिकता समाई हुई थी।

एक बार सिन्ध के सक्खर जिले में महात्मा गांधी जी पधारे। वे वहां पहली बार आए थे। अतः वहां की जनता उनके दर्शन एवं भाषण सुनने के लिए लाखों की संख्या में आतुर होकर बैठी थी। पैर रखने के लिए तिलभर भी स्थान नहीं था। बहुत कोलाहल हो रहा था। सभी मंच पर उपस्थित नेता अनेक प्रयत्न करके हार गए पर कोलाहल शान्त नहीं हुआ। मंच पर आसीन नेताओं ने सन्त कंवरराम जी की ओर देखा और महात्मा गांधी जी से आज्ञा लेकर उन्हें निवेदन किया कि आप इस कोलाहल को शान्त कीजिए तो बापू जी का भाषण आरम्भ किया जा सके। सन्त कंवरराम साहिब ने जैसे ही माइक पर आकर जैसे ही आलाप लगाना आरम्भ किया कि सारा वातावरण शान्त हो गया। तब गांधी जी ने भी इस लाडले भक्त की भूरि–भूरि सराहना की थी।

इस महापुरुष के प्रयासों से भारत के संतों और सूफियों की अमरवाणी सिन्ध के शहर–शहर, गांव–गांव व घर–घर गूंजी। वे कबीर, मीरा, सूरदास, गुरु नानक, शैख फरीद, बुलेशाह, अब्दुल लतीफ, सामी, सचल सरमस्त के अतिरिक्त भारत के अनेक महान कवियों व दरवेशों के दोहों व भजनों तथा राजा विक्रमादित्य, राजा हरिश्चन्द्र, भक्त ध्रुव व भक्त प्रहलाद आदि की गाथाओं को अपनी मधुर और खनकती हुई आवाज़ में गाते थे। ऐसा प्रतीत होता था मानों भक्ति संगीत का कोई विशाल समागम हो रहा हो। उन्होंने धर्म, नस्ल व जाति के भेदभाव को अपने निकट नहीं आने दिया। उनकी बुलन्द आवाज अंधेरे और खामोशी को चीरती हुई मीलों तक सुनाई देती थी। उनके श्रद्धालु भांप जाते थे कि निकट ही किसी गांव में संत कंवर राम की भगति का आयोजन हैं।

उन्होंने भगति के कार्यक्रम के माध्यम से सत्य, अहिंसा, साम्प्रदायिक सौहार्द, विश्वबंधुत्व, ईश–वंदना, मानवीय प्रेम, समता व नैतिक आचरण का संदेश आम और खास तक पहुंचाया।

संत कंवरराम त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति, जीवन के मर्म को जानने वाले ऋषि, दया के सागर, दीन दुखियों, यतीमों और विकलांगों के मसीहा थे। जहां उनके मुख मण्डल पर किसी ऋषि सा तेज झलकता था वहीं उनके नेत्रों से नूर बरसता था। मानव सेवा ही उनका मुख्य ध्येय था। अपंगों नेत्र हीनों, रोगियों एवं कोढ़ियों की सेवा अपने हाथों से करके वे स्वयं को धन्य मानते थे। अहंकार, काम और क्रोध से वे सदैव दूर ही रहते थे।

सेवा के क्षेत्र में संत कंवरराम साहिब का नाम सर्वोच्च स्थान पर आता है, आपके परोपकारी एवं आध्यात्मिक जीवन ने मानव के संस्कारो में कल्याण, सर्व धर्म सम्भाव, परोपकार एवं मानव आदर्शों के अंकुर प्रस्फुटित कर नई दिशा प्रदान की है।

चालीस वर्ष की अद्‌भुत गुरु भक्ति में संत जी के जीवन में अनेक घटनाएं घटीं। शिकारपुर के शाही बाग में प्रभात के समय एक महिला ने अपने मृत नवजात शिशु को संत की झोली में लोरी के लिए दिया। बच्चा मृत है, उसकी माँ के अतिरिक्त सभी लोग अनजान थे, सन्त कंवर राम जी ने हृदय भाव से प्रभु आराधना करके लोरी गाई। सन्त जी की गोद में बच्चा रोने लगा। यह चमत्कार देखकर महिला संत के चरणों में गिर कर फूट–फूटकर रो पड़ी। उसने बालक के मृत होने की बात सारी संगत को सुनाई। वहां उपस्थित संगत स्तब्ध हो गई। ऐसे मधुर भाषी व महान् सन्त थे सन्त कंवरराम साहिब। इसी क्रम में कई अन्य उदाहरण भी मिलते हैं।

वे सदैव सामाजिक समरसता, एकता व भाईचारे का प्रचार करते रहे। साम्प्रदायिक सद्भाव के विरोधी एक बड़े हठधर्मी पीर ने हिन्दुओं से बदला लेने के लिये अपने अनुयाइयों को उकसाया। उन दिनों संत कंवरराम जी हिन्दुओं में एक प्रसिद्ध और गौरवशाली व्यक्ति थे। उन्हें ही इस प्रतिशोध का केन्द्र बनाया गया।

1 नवम्बर सन् 1939 ई0 का दिन मानवता के इतिहास में अति कलंकित और दुखदायी रहा। जिला दादू में मांझादन की दरबार में भाई गोविन्दराम जी के वर्सी महोत्सव में भजन के पश्चात्

दादू नगर में किसी बालक के नामकरण अवसर पर पहुँचे। भजन के पश्चात भोजन करने के समय उनके हाथ से कौर छूट गया और सन्त मन ही मन प्रभु की माया को समझते हुए उनकी कृपा का स्मरण करते रहे और उन्होंने समक्ष रखी भोजन की थाली एक तरफ कर दी। अपनी भजन मण्डली के साथ संत **कंवरराम जी गाड़ी बदलने की दृष्टि से रात्रि 10 बजे "रुक" जंक्शन स्टेशन पर पहुंचे। दो बंदूकधारियों ने आकर उन्हें प्रणाम किया और अपने कार्य सिद्धि के लिए संत जी से दुआ मांगी। त्रिकालदर्शी सन्त कंवरराम साहिब ने उन्हें प्रसाद में अंगूर देते हुए, उनसे कहा कि अपने पीर, मुर्शिद को याद करो। उनमें विश्वास रखो आपका कार्य अवश्य पूरा होगा।**

संत जी रेल के डिब्बे में प्लेटफार्म की दूसरी ओर वाली सीट पर खिड़की से सट कर बैठ गए और अपने अंगरक्षकों की बन्दूकें ऊपर की सीट पर रखवा दी। अंधेरी रात में, गाड़ी चलते ही बंदूक धारियों ने संत जी को निशाना बना कर गोलियां दाग दी। "हरे राम" कहते हुए संत जी अव्यक्त ब्रह्म में समा गये। सिन्ध की पावन धरती एक महात्मा के पवित्र खून से रंग दी गई। सर्व धर्म सद्भाव का ध्वज फहराने वाले, मानवता के मसीहा ने प्राण त्याग दिए। पूरे सिन्ध में हाहाकार मच गया। उनके शहीद होने के खबर पूरे सिन्ध, हिन्द के कोने–कोने में आग की तरह फैल गयी। यह खबर सुनते ही स्कूल, कॉलेज, ऑफिस, बाज़ार सभी बंद हो गए। चारों तरफ मातम छा गया। समस्त नर–नारी, बच्चे, हिन्दू–मुसलमान बिलख–बिलख कर अपने आत्मीय के लिए रो रहे थे। सिन्ध में दीपावली के पर्व पर दिए नहीं जलाए गए।

अमर शहीद संत कंवरराम साहिब जी की स्मृति में सन् 1940 ई0 में सिन्ध के बड़े–बड़े नगरों, करांची, हैदराबाद, लाड़काणा, शिकारपुर, सक्खर, पन्नो आकिल, रहिड़की आदि अनेक स्थानों पर श्रद्धा और विश्वास के साथ संत जी की पुण्य तिथि के कार्यक्रम आयोजित किये जाने लगे। आज भी सम्पूर्ण देश व विदेश के अनेक स्थानों पर सन्त कंवरराम साहिब की जयन्ती व पुण्य तिथि मनाई जाती है।

आज भारत के कोने–कोने में संत कंवरराम साहिब जी की स्मृति में सिन्धी जनों द्वारा गठित सामाजिक संगठन जनता जनार्दन की सेवार्थ मानव कल्याण केन्द्र, पौशालाएं, धर्मशालाएं, शिक्षण संस्थाएं, अस्पतालें, विधवाश्रम आदि सुचारु रूप से चला रहे हैं।

ऐसे सत्पुरूष को सम्पूर्ण राष्ट्र का शत शत नमन्।

q **प्रस्तुति : सत्यानन्द सावलानी**
सौजन्यः **"अमर शहीद संत कंवरराम मिशन"**
शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम,
वी.आई.पी. रोड, आलमबाग, लखनऊ।
फोन : 2457573
E-Mail : ssa01@sify.com

साहित्यकारों की दृष्टि में – सन्त कँवरराम

पाकिस्तान के **'जीए सिन्ध'** आंदोलन के प्रवर्तक, वयोवृद्ध चिंतक एवं लेखक जी.एम. सैय्यद ने अपनी बहुचर्चित सिन्धी पुस्तक 'जनमु गुज़ारियुम जिनि सॉ' (जिनके साथ जन्म व्यतीत किया) में संत कंवरराम को बड़ी श्रद्धा के साथ स्मरण किया है। वे लिखते हैं–

"भगत साहब शक्ल सूरत से सुंदर थे और आंखें रौनकदार। उनकी आवाज़ में हद दर्जे की मिठास और दर्द था। उनके कलाम में ऐसी तासीर थी कि कंवरराम की 'भगत' की जानकारी मिलते ही हज़ारों की तादाद में आसपास के हिन्दू और मुसलमान एकत्रित हो जाते थे। वे अक्सर रात के बारह बजे के बाद गाते थे और प्रभात होने तक गाते रहते थे। **जैसे–जैसे रात गहराती जाती थी, वैसे–वैसे उनकी आवाज़ का प्रभाव बढ़ता जाता था।** दूर–दूर से आए हुए लोग सारी रात बैठ कर उनके मधुर गायन का आनंद लेते थे। उनके गायन में ज्यादा हिस्सा सूफी कलामों का होता था। मुझे केवल दो बार ही उनके कलाम सुनने का अवसर मिला। एक बार 'सन' गांव में और दूसरी बार 'मांझादन' में भाई धर्मदास की दरबार में।............अब भी, कभी रेडियो पर उनकी यह काफी सुनता हूं– **'आउ कांगा करि गाल्हि, मुंखे तिनि मारूअड़निजी'** तो उस समय

खाना खाता हूं या पढ़ रहा होता हूं, दोनों छूट जाते हैं और मैं किसी गहरे सोच व चिंता में डूब जाता हूं। कई ख्याल मन में तैरने लगते हैं और सोए हुए दर्द जाग उठते हैं।"

•जी.एम. सैय्यद आगे लिखते हैं–

"किसी समय हिन्दू–मुसलमानों का खुशी व ग़मी में आना–जाना, आशूरों, ईद मिलन, दीवाली, दशहरे के अवसर पर पीर–फकीरों, साधु–संतों की मजलिसों–गोष्ठियों, तसव्वुफ़ (सूफ़ीवाद) और वेदांत की बुनियाद पर टिके मानवीय मूल्यों व विश्वासों की याद ताज़ा हो जाती है। कभी तो सिन्ध की प्राचीन सभ्यता, मोअन–जो–दड़ो की संस्कृति, समा और सूमरों के दौर की बातें, ससुई–पुन्हूं, मूमल–राणो, लीला–चेनसर, उमर–मारूई, जाम तमाची और नूरी की दास्तान आंखों के सामने विचरने लगती हैं।..........**वे, कलाम लोगों के मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सिन्ध के सूफ़ी–कल्चर के पैग़ाम को पहुंचाने के लिए, प्रचारक बनकर गाते थे।** उनमें स्वयं को जानने– पहचानने का ज्ञान, निष्कपट प्रेम और नैतिकता समाई हुई थी।"

पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध सिन्धी साहित्यकार एवं पत्रकार शेख़ अज़ीज़ अपने आलेख 'भगत–कदीम सिन्धी अन्दाज़ मोसीकी' में संत के प्रति अपनी श्रद्धा और निष्ठा प्रकट करते हुए लिखते हैं–

'सिन्ध में भगत गायकों' को एक तरह से आशाओं का दीपक, शांति–दूत तथा नए चिंतन को मानव ह्रदय तक पहुंचाने वाला माध्यम समझा जाता था। भगत कंवर उन सभी 'भगत–गायकों' में प्रथम श्रेणी में आते हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन संगीत की स्वर लहरियों में व्यतीत कर दिया और सुरों के सहारे, काव्य के आदर्शों की ज्योति सर्वत्र जलाते रहे। **इस महापुरूष का पूरा जीवन आम लोगों और पीड़ितों की सेवा करने तथा उनमें प्रेमनिधि बांटने में व्यतीत हुआ।** वे अपनी गायन–कला एवं सुरीली आवाज़ के माध्यम से श्रोताओं को लोरियां देते थे।'

इसके अतिरिक्त एक अन्य मुस्लिम विद्वान एवं वरिष्ठ साहित्यकार करीम बक्श खालिद ने संत कंवरराम के सम्बंध में अपने संस्मरणों में लिखा है–

"उस रात सेवा मंडली के सामने, गौशाला के पास संत कंवरराम की 'भगत' का कार्यक्रम था। छोटे–बड़े सभी आमंत्रित थे। अचानक मेरी आंख खुली। उस समय रात का एक बज चुका था। दूर से एक मन मोहने और व्याकुल करने वाले आलाप ने मेरी आंखों की नींद चुरा ली। पूर्व दिशा से, पूर्व के दरवेश की आवाज़ थी......**'नाले धणीअ जे बेड़ो तार मुंहिंजो..........।'** मैं बिस्तर से उठा और घर से निकल कर, तेज़ी के साथ, चकोर की भांति चंद्रमा की ओर खिंचता हुआ बढ़ा। शामियाने में पहुंचते ही मैं आश्चर्य चकित हो गया क्योंकि संत कंवरराम के श्रद्धालु एवं अभिलाषी, मालिक के वास्तविक दीवाने–मस्ताने, शांति और संतोष के वाहक हज़ारों की संख्या में लोग पूर्णिमा की रात को, लहराते समुद्र की भांति मुक्त और निश्चिंत होकर 'इश्के–इलाही' के नशे में थे। युसुफ (पैगम्बर) के इस गरीब चाहक को भी एक कोने में जगह मिली। गौशाला के चारों ओर मुसलमानों के घर थे। उनकी **छतों पर भी पर्दानशीं मुस्लिम औरतों के झुंड और बच्चों की फौज, आंखों में निद्रा के दीपक जलाए, आत्मिक आनंद और संतोष प्राप्त करने को व्याकुल थीं।** भगत कंवरराम अपनी दर्द भरी आवाज़ में रोहल फकीर, शाह अब्दुल लतीफ भिट्टाई, सचल, मीराबाई, कबीर तथा साईं बेदिल के कलाम और दोहे सुनाते रहे–

'आउ कांगा करि गाल्हि...............'
'अव्वल अल्लाह नूर उपाया..................'
'जोई आहियां सोई आहियां...................'
'वाग धणी तुंहिंजे वसि...................'

मधुर वाणी में उक्त कलाम सुनकर मैं आनंद विभोर हो उठा।'

इस प्रकार ऐसे कर्मयोगी संत के पुण्य स्मरण में कई हिन्दू–मुस्लिम विद्वानों और साहित्यकारों ने उनकी महानता का बखान किया है।

❑ **संकलन : वासुदेव 'सिन्धु भारती'**
सभार : सिंधियत – 2002

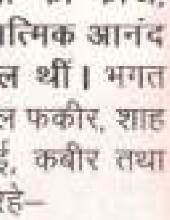

जीवन झांकी

सखी बाबा आसूदाराम साहिब

सिंधु देश संतों और दरवेशों व सूफियों का देश माना जाता है। सक्खर और रोहड़ी तो जैसे सिंध के मुख्य तीर्थ स्थान है जहाँ पर कई महापुरूषों और संतों ने जन्म लिया।

सन्त बाबा आसूदाराम भी उन्ही महान संतों में से एक थे। सिंध की पवित्र भूमि के सक्खर जिले में पन्नों आकिल तालुके के जतोइन गाँव में भाई लुधड़ेमल के घर माता चइनी बाई के गर्भ से सन्त बाबा आसूदाराम का जन्म रामनवमी को 3 मार्च सन् 1895 ई0 में हुआ। वे बाल्यावस्था से ही नम्र स्वभाव के थे। दूसरे बालकों की अपेक्षा वे शान्त स्वभाव के थे। उनमें चंचलता लेशमात्र भी न थी जिससे गाँव के समस्त नर–नारियाँ उनकी ओर आकर्षित होते थे, जब वे पढ़ने–लिखने के योग्य हुए तो उनका दाखिला स्कूल में कराया गया किन्तु वे अधिक पढ़ लिख न सके क्योंकि ''दुनियावी'' शिक्षा में उनकी कोई दिलचस्पी न थी। अधिकांशतः वे एकान्त में वैरागियों की भाँति बैठे रहते थे। यही वैराग्यवृत्ति उनके पिता की चिन्ता का कारण बनी।

एक बार ''भगत शिरोमणि संत सतरामदास साहिब जी'' हाजी खान गाँव में पधारे जो कि जतोईन गाँव से एक मील की दूरी पर था। रात्रि में भजन कीर्तन का कार्यक्रम था। जतोइन गाँव के समस्त श्रद्धालु, प्रेमी भी वहाँ पर पहुँचे, भाई लुधड़ोमल भी बालक को लेकर वहाँ पहुँचे और भजन कीर्तन का कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात सांई सतराम दास जी से प्रार्थना की कि बालक आसूदाराम को, वे अपनी सेवा में रखना स्वीकार करें। सांई सतरामदास जी ने उनकी विनती स्वीकार करते हुए कहा ''मैं इसको अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करता हूँ किन्तु जब यह थोड़ा जवान और पानी से भरे हुए मटके उठाने में समर्थ हो जाय तो इसे रहड़की दरबार में भेज दें''। उस जमाने में ''गुरू सेवा'' के लिए स्वीकार किया जाना बहुत बड़ी बात थी (वो भी समर्थ गुरू सांई सतराम दास जी सरीखे सन्त महापुरुष के द्वारा)

संत सतराम दास जी की कृपा दृष्टि पड़ते ही बालक आसूदाराम के मन में संसार के प्रति मोह हट गया और प्रभू के लिए अनुराग उत्पन्न हो गया। वे सदा सतगुरु से मिलने की प्रबल इच्छा प्रकट करते रहते थे परन्तु इसी बीच सांई सतराम दास जी की ज्योति प्रभू की ज्योति में समा गयी। सतगुरु सतराम दास जी के स्थान पर उनके पूरे कार्यक्रमों की सेवा आपके प्रमुख शिष्य सन्त कंवरराम जी संभालने लगे। सतगुरु के पूर्व आदेशानुसार बालक आसूदा राम को रहड़की में संत कंवरराम जी के सुपुर्द कर दिया गया। संत कंवर राम जी ने उन्हें स्थान की सेवा हेतु स्वीकार किया, न केवल इतना वरन् सांई सतराम दास जी की इच्छानुसार ठीक वैसी ही दया दृष्टि भी उन पर डाली जैसी कि सांई सतराम दास जी ने संत कंवरराम पर

डाली थी और संत आसूदाराम ने भी अपने गुरु चरणों की सेवा "मनसा वाचा कर्मणा से" वैसी ही की जैसी संत कंवरराम जी ने अपने गुरू की की थी।

संत आसूदाराम गायों की हृदय भाव से सेवा करते थे। यहाँ तक कि गायों के बैठने के स्थान की भूमि को नर्म करते और उस पर खुद नंगे बदन लेटकर देख लेते थे कि कहीं कोई कंकड़, पत्थर या कांटा तो नहीं पड़ा है जो मेरी गऊ माता को चुभ न जाये और इस प्रकार संतुष्ट होने पर ही गायों को गऊशाला में बांधते, यह गऊशाला आज भी सेवारत है।

यद्यपि संत आसूदाराम जी की हार्दिक अभिलाषा थी कि वे आजीवन गुरु चरणों की सेवा में रहें। संत कंवरराम जी की आज्ञानुसार उन्होंने अपने गृहस्थ जीवन की नींव रखी। गृहस्थ जीवन में गृहस्थ आश्रम के समस्त नियमों का निर्वाह करते हुए गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की, क्योंकि संत कंवरराम जी का मानना था **"सच्ची सेवा केवल गृहस्थ जीवन में ही सम्भव है।"**

गुरु की आज्ञानुसार ही उन्होंने "पन्नोआकिल" शहर में सन् 1940 को "दरबार साहिब" की स्थापना की जो भारत व सिंध में प्रसिद्ध है, जहाँ मानव उत्थान के अनेक कार्यक्रम आज भी चल रहे हैं। सन्त आसूदाराम जी की दरबार में सदाव्रत 24 घण्टे चला करता है। कोई भी भूखा वहाँ से बैगर खाये पीये नहीं जाता। भोजन के साथ–साथ ठण्डे, मीठे जल की भी सेवा होती है। यह सब बिना किसी जाति और धार्मिक भेद–भाव के हो रहा है। सबसे बड़ी सेवा थी दुखियारों के दुख दूर करने की, वहाँ से कोई भी सवाली खाली नहीं जाता। वह ऐसा दरबार है कि जो भी निराश आता था आशावान होकर लौटता। अनेक असाध्य शारीरिक और मानसिक रोगियों को संत आसूदाराम जी गुरुवाणी द्वारा ठीक कर देते थे। कई निःसन्तानों को सन्तान मिलने पर यहाँ आत्म संतोष मिला है। कई अबला और असहाय नारियों की सहायता कर सन्त आसूदाराम जी ने उनके कष्ट हरे।

इस दरबार में गुरुमुखी की शिक्षा आरम्भ से ही दी जाती थी और सन् 1975 ई० से यहाँ विधिवत पाठशाला चलने लगी है जहाँ गुरुमुखी के साथ–साथ हिन्दी की शिक्षा भी दी जाती ग्रहण कर रहे हैं और अभी तक हैं जिसमें लगभग 250 विद्यार्थी प्रति वर्ष शिक्षा ग्रहण कर रहें और अभी तक हजारों विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। जहाँ वृद्धजनों की सेवा के लिये एक वृद्धाश्रम भी चल रहा है व बेसहारा वृद्धों और शारीरिक रूप से विकलांग लोगों की जी जान से सेवा की जाती है। **इस प्रकार संत आसूदाराम दरबार न केवल एक धार्मिक आस्थान है वरन् एक सामाजिक चेतना और मानव कल्याण का केन्द्र बन चुका है और पन्नोआकिल शहर में जितने भी सामाजिक कार्य होते हैं वे सब संत आसूदाराम दरबार के माध्यम से ही हो रहे हैं।**

बाबा आसूदाराम जी अनन्त चतुर्दशी रविवार 4 सितम्बर 1960 (मिती 19 माह भादो सम्वत् 2017) को प्रभु के कार्यों को पूर्ण करते यह संसार छोड़कर परमधाम सिधारे। बारहवीं के दिन सतगुरु दर (रहड़की दरबार) के हाजिर सन्त भगत चन्दीराम साहिब जी ने सन्त आसूदाराम जी के सुपुत्र श्री चाण्डूराम जी को 14 वर्ष की अल्प आयु में नवीन परम्परा अपनाते हुए पिता की गद्दी पर बैठाया और गुरु दरबार की पाखर (सिरोपा) पहनाकर सुशोभित किया। तब से लेकर उनके सुपात्र सांई चाण्डूराम जी के तत्वाधान में हर वर्ष सिंध "पन्नोआकिल" दरबार और भारत में बाबाजी की उनकी वर्सी तथा जयन्ती "शिव शान्ति आश्रम" आलमबाग, लखनऊ में बड़े उत्साह व श्रृद्धा से मनाई जाती है। इस वर्सी के उत्सव पर समस्त भारत के संत, भगत, गुणीजन और महात्माओं का संगम होता है, जिसके बीच सांई चाण्डूराम जी, "चन्द्रमुखी" की भांति सुशोभित होते हैं और उस समय ऐसा लगता है कि जैसे संत आसूदाराम जी समस्त श्रृद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण करते हुए प्रगट रूप में स्वयं आर्शीवाद दे रहे हों।

❑ **किशनलाल**
सचिव,
शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम, लखनऊ

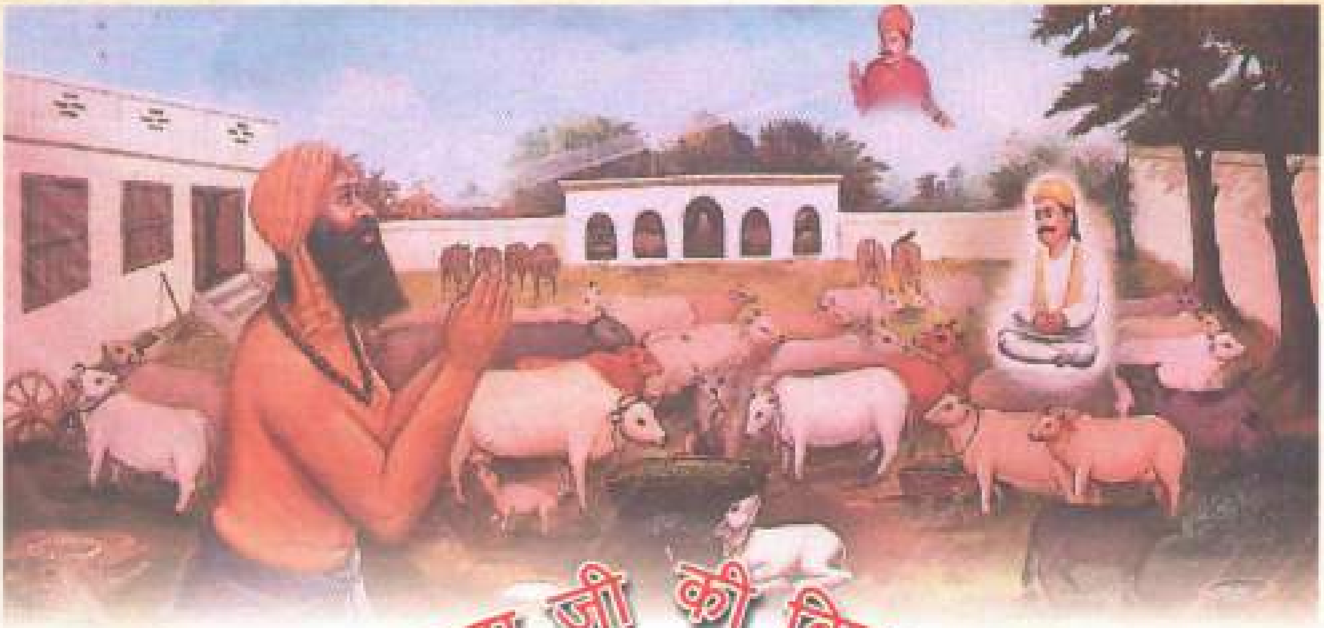

संत आसूदाराम जी की विलक्षण गोभक्ति

आसूदारामजी नाम के एक बड़े संत हो गये हैं। वे चारे–पानी आदि द्वारा गौओं की सेवा बड़े प्रेम से करते ही थे, किंतु एक सेवा बड़े विलक्षण ढंग से करते थे– जब गौएँ चरने जाती थीं, उनके बैठने का स्थान खाली रहता, तब आप झाड़ू लेकर बड़े मनोयोग से वहाँ की सफाई करते थे, बिल्कुल अच्छी तरह सफाई हो जाने पर भी आपको संतोष नहीं होता था, 'मेरी गोमाताओं को जरा सा भी काँटा– कंकड़ न लगे' इसलिये आप उस भूमि पर स्वयं परीक्षण करने के लिए लेट जाते और उस पूरी गो–भूमि पर लोट–पोट हो जाते थे। जरा–सा भी कहीं कंकड़–काँटा आदि लगा तो तुरंत साफ कर देते, स्वयं सोकर–लेटकर धरती के औचित्य का अनुभव लेते। जब भूमि पर लेटने में पूरा आराम मिलता, जरा–सा भी कंकड़–पत्थर–काँटा आदि न लगता तब उसे गोमाता के योग्य समझते थे।

पाठक अनुमान लगा सकते हैं, जो गौओं के आराम का इतना ख्याल रखते थे, वे अन्य सेवा में क्या कमी रखते होंगे।

साभार : कल्याण (मासिक)
मार्च 1995 पृष्ठ 515

हिन्द-सिंध के सरताज सन्त चाण्डूराम साहिब

सिन्ध भूमि दानवीरों, दरवेशों, सूफियों व सन्तों की धरती है। जहाँ बिना किसी भेद–भाव, भाषा, धर्म, पन्थ, जाति, वर्ग, कुटुम्ब तथा कबीलों आदि की परवाह किये बगैर सेवा की गयी है, फकीरी कृपा की वर्षा हुयी है। अपनी जातीय अस्मिता और उपलब्धियों को बाँटा गया है।

भाई चाण्डूराम भी उनमें से एक हैं जो अपने प्रभाव विद्वता, ध्यान व ज्ञान, दानवीरता और उदारता के कारण हिन्द व सिन्ध में प्रसिसद्ध हैं और अपनी वक्तृता, सम्यता तथा वाणीगत शैली से मानों सिन्ध के महान सन्त भगत कंवरराम का दूसरा रूप है। भाई चाण्डूराम साहिब का जन्म सन्त आसूदाराम के यहाँ 'दरबार साहिब' पन्नो आकिल, सिन्ध में 9 सितम्बर सन् 1947 ई0 को हुआ था। उस दिन गोकुलाष्टमी थी। अष्टमी के दिन वृन्दावन में प्रत्येक वर्ष भगवान श्री कृष्ण का जन्मदिन मनाया जाता है। सन्त आसूदाराम रहड़की के सन्त सतरामदास के शिष्य व चाहक थे। आपकी भगत कँवरराम के प्रति अत्यन्त विनम्रता थी।

भगत कँवरराम सन्त आसूदाराम की आन्तरिक भक्ति से पूरी तरह परिचित थे। सुख–दुख के समय वे आप पर कृपा करने पन्नो आया करते थे। सन्त आसूदाराम साहिब जिनकी आज भी पन्नों आकिल में विशाल, भव्य दरबार साहिब है, एक फकीर मानव, दयालू तथा आकाश वृत्ति मनुष्य थे। आपसे प्रत्येक व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहता था।

भाई चाण्डूराम अपनी प्राथमिक शिक्षा सिंधी प्राइमरी स्कूल पन्नो आकिल से प्राप्त की। पन्ने आकिल के नामवर शिक्षक मो0 नवाज भुहो आपके अध्यापक थे। अभी भी वे सिंध में रहते हैं। साईं चाण्डूराम अपने शिक्षक को 'गुरु' रूप में अत्यन्त आदर देते हैं। उन्होंने अपनी पूर्व माध्यमिक शिक्षा जिला परिषद के विधायक से प्राप्त की थी।

सन्त चाण्डूराम साहिब मुहब्बत की मूर्ति, स्नेह की ज्योति एवं प्यार की प्रतिमूर्ति हैं। वे एकत्व और सूफीवाद के दर्शन पर पूरी तरह पकड़ रखने वाले वक्ता तथा परमात्मा पर पूरी तरह भरोसा रखने वाले इन्सान हैं। आपका मत है कि एक से मांगो तो दूसरे से नहीं। प्रभू का कभी भी विस्मरण न करो। निर्धन, दुःखी, असहाय, पीड़ित हिन्दू हो या मुसलमान सबकी सेवा करें, सहायता करें। उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें ईश्वर के प्रति निश्छलता रखें। वह ईश्वर हमसे परे नहीं है हमारे अन्तर्मन में ही है। आपका कोई भी कृत्य प्रभू से छिपा नहीं है। सत्यता पर स्थिर रहें। ईश्वर का स्मरण करें। पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, प्राणिमात्र उस ईश्वर को प्रातः समय गुणगान करते हैं। आप सदा सर्वदा कुछ न कुछ देते ही रहें।

भाई साहब भी स्वयं देते ही रहते हैं। कहीं जरूरतमंद की आर्थिक सेवा, आत्मदर्शन के इच्छुकों को आत्मिक रहस्य की जानकारी एवं जिज्ञासुओं की आध्यात्मिक प्यास बुझाते हैं व मानव वादियों को सम्मान, सन्त के पास जो भी आता है झोली भरकर वापस लौटता है।

भाई चाण्डूराम बड़े विद्वान हैं। सिंध के सभी सूफियों और सन्तों के चाहक हैं। शाह, सचल, सामी, वेदन एवं रोहल के प्रति आपकी गहरी चाहत है और रहड़की वाले दरवेशों के विशेष स्नेह पात्र हैं। आपके पास विभिन्न प्रकार की ज्ञानात्मक सूचनाओं का भण्डार है। आप 'सामी' के श्लोकों के ज्ञाता हैं। आप सामी के श्लोकों का भाष्य घन्टों तक करने की क्षमता रखते हैं। सामी के श्लोकों की व्याख्या करते समय आपमें एक अजीब प्रकार की खुमारी रहती है जो कि सुनने वालों पर जादुई असर करती है।

भाई चाण्डूराम पारिवारिक गुरू रहड़की साहिब वाले हैं किन्तु आप स्वयं डहरकी दरबार के 'भाई भोजाराम साहिब' के कृपा पात्र हैं जिनमें गुरू रहड़की वाले फ़कीर दरयाखांन' साहिब हैं। इस प्रकार भाई साहब परोक्षरूप से कण्डड़ी वालों के शिष्य हैं।

भाई साहब पन्नो आकिल से सन् 1979 में सिंध से भारत गये। जहाँ विशाल भव्य शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम नामक स्थान आपका है। जहाँ चौबीसो घन्टे लंगर और सेवा के क्रम जारी रहते हैं। आपके अनुयायी हिन्द व सिन्ध में हजारों की संख्या में हैं। भाई साहब ने 'पन्नो आकिल' में जन सामान्य व विशिष्ट लोगों की सेवा के लिए सखी बाबा प्रसूतिगृह खुलवाया है। जहाँ इस समय सभी रोगों के विशेषज्ञ चिकित्सक कराची या हैदराबाद से आते हैं और सेवा करते हैं। इसके लिए नियमानुसार संस्था गठित है जो डा0 हरीलाल, डा0 राजेन्द्र प्रसाद की देखरेख में कार्यरत हैं।

सिन्धी साहित्य के शेक्सपियर शाह अब्दुल लतीफ की 'भिट्ट साहिब' (पाकिस्तान) की दरगाह पर सिजदा करते हुए सन्त चान्डू राम साहिब

सूफी फकीर बेदल व बेकस की दरगाह पर सिर नवाते साईं जी

इस चिकित्सालय में होने वाले व्यय का अस्सी प्रतिशत खर्च भाई साहब और उनके अनुयायी वहन करते हैं इसके अतिरिक्त सिन्ध व हिन्द में अनेक संस्थाएं आपके संरक्षण में कार्यरत हैं।

भाई साहब संगीत और वैराग्य के भी ज्ञाता हैं। आप स्वयं जब स्वर लहरियाँ बिखेरते हैं और आलाप लगाते हैं तो आन्तरिक आनन्द उत्पन्न होता है, मन को शान्ति प्राप्त होती है। आपकी वाणी में जबरदस्त खिंचाव और रस है जो भी उसको सुनता है; आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

भाई साहब निर्धनों के मित्र, असहायों के सहायक, दुखियों के लिए दिलदार हैं। वे अपने हाथों से आंख बन्द करके 'सेवा' करते हैं। बैर–विरोध से परे, दुई से दूर रहने वाले हैं। अपने नित्य सत्संग से अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न करते हैं और स्वयं को सभी का सेवक कहलाते हैं। सभी से हाथ जोड़कर मिलते व अत्यन्त विनम्रतापूर्वक वार्ता करते हैं। सिन्ध धरती के इस दयावान सुपुत्र, विद्वान, समाजवादी, ज्ञानी व आध्यात्मिक रहस्यों को गहराई से जानने वाले भाई चाण्डूराम के लिए पन्नो आकिल और पन्नो निवासियों को गर्व है।

❒ **प्रो0 सरवर शेख**
पन्नो आकिल, सिंध (पाकिस्तान)

सामार : सुरहाण पब्लिकेशन पत्रिका

मूल आलेख सिंधी से हिन्दी भावानुवाद – **ज्ञाप्रटे 'सरल'**

संत चाण्डूराम साहिब

जिनका 'आचरण' ही संदेश है

सन्त चाण्डूराम साहिब ने 'कर्म–प्रधान विश्व रचि राखा' को अपनाया है। आप वाणी की अपेक्षा कर्म को प्रधानता प्रदान करते हैं। मानव कल्याण हेतु सतत् प्रयत्नशीलता उनके आचरण में है।

सादगी की प्रतिमूर्ति : 'सादा जीवन उच्च विचार' यह पक्तियां आपके जीवन में पूरी तरह रची बसी हैं। गुरूदेव के रहन–सहन, खान–पान, पठन–पाठन में कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये वे ही स्वामी जी है जिनके चरणों में देश के प्रधानमंत्री से लेकर कई हस्तियाँ आकर नतमस्तक होती रही हैं। उत्तर–प्रदेश शासन के पूर्व मंत्री मा0 लालजी टंडन के अनुसार "स्वामीजी का सादगी पूर्ण आचरण हमें बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। वस्तुतः ऐसे सादगी पसंद संत के प्रति ही मन में अगाध श्रद्धा उत्पन्न होती है।"

संदेश : पूज्य बाबाजी का सादगी पूर्ण आचरण हमारे लिये संदेश है कि मनुष्य के जीवन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है अतः जो मनुष्य सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करेगा उसे कोई भी विपरीत परिस्थिति दुःखी नहीं कर पायेगी अथवा यों कहें कि उस मनुष्य में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता अधिक होगी।

2. विनम्रता के कुबेर : संत कबीर ने कहा है "लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर। चींटी ले शक्कर चली हाथी के सिर धूर।।" मुझे ऐसा लगता है कि पूज्यवर ने इन पक्तियों को आत्मसात् कर लिया है। पंचतंत्र में उल्लेख है कि यदि किसी व्यक्ति को दौलत, सुंदरता, जवानी, ज्ञान, विद्या, सत्ता, धन आदि में कोई भी एक चीज मिल जाये तो वह पागलपन और मदहोशी में कुछ भी कर सकता है परंतु हमारे गुरुदेव जहाँ एक ओर ज्ञान के पुंज हैं वहीं दूसरी ओर प्रभु सत्ता से सीधे जुड़े हुये हैं फिर भी अंहकार उन्हें छू तक नहीं पाया है और उन्होंने विनम्रता को अपने व्यवहार का एक अविभाज्य अंग बना लिया है।

संदेश : विनम्रता से परिपूर्ण आचरण के माध्यम से पूज्य गुरूदेव का यह संदेश मिलता है कि हमें हर हाल में विनम्र बने रहना है। कारण यह कि विनम्रता से न केवल यश एवं कीर्ति बढ़ती है वरन् विनम्र व्यक्ति परम पिता परमात्मा के निकट पहुँचने का मार्ग भी प्रशस्त कर सकता है।

3. श्रेष्ठ पुत्र : पंडित श्रीराम शर्मा का कथन है कि "जो मनुष्य अपने माँ–बाप के प्रति कृतज्ञ नहीं है वह संसार में किसी के भी प्रति कृतज्ञ नहीं हो सकता" गुरूदेवजी की अपने माता–पिता के प्रति कृतज्ञता देखते ही बनती है। जिस सम्मान और भाव के साथ संतजी नित्य पिताश्री उदारमना बाबा सन्त

आसूदाराम साहिब के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं वह उनके श्रेष्ठ व कर्त्तव्यपरायण पुत्र होने को प्रमाणित करती है।

संदेश : पूज्य गुरूदेव नित्य सत्संग प्रारम्भ करने के पूर्व व सत्संग के मध्य जिस विनम्रता के साथ पूज्य पिता–माता का स्मरण करते हैं वह हमें यह संदेश देता है कि जो पुत्र अपने माँ–बाप के प्रति सम्मान व श्रद्धा नहीं रखता वह न केवल अपना जीवन व्यर्थ करता है अपितु भावी पीढ़ी के लिये भी बुरे संस्कार पैदा करता है।

4. कर्त्तव्य परायणता : "कर्म है गीता का उपदेश महाभारत है शांति का संदेश" यह उक्ति स्वामीजी के चरित्र में समायी हुयी है। वे प्रत्येक मानव में नारायण का रूप देखकर उसके प्रति उदार भाव रखते हुये उसके लिये कुछ न कुछ करना चाहते हैं। यह खास उनके मानव कल्याणकारी एवं अव्वल दर्जे के कर्त्तव्यपरायण होने की पुष्टि करती है।

संदेश : पूज्यपाद गुरुदेव की कर्त्तव्यपरायणता हमें संदेश देती है कि संसार में अवतारी पुरूषों को केवल इसलिये अवतरित होना पड़ा क्योंकि मानव मात्र तक संसार के 'कर्मभूमि' होने का संदेश पहुँच सके। भगवान श्रीराम युगपुरुष श्रीकृष्ण, गुरुनानकदेव जी महाराज आदि ने मानव के रूप में सतत् कर्म कर मनुष्य को पुरुषार्थी बनने का मार्ग दिखाया जिसे अब पूज्यवर गुरुदेव समझा रहे हैं।

5. सर्वश्रेष्ठ समाजसेवी : पूज्य गुरुदेव का अटल विश्वास है कि जो शिव अर्थात् कल्याणकारी नहीं हो सकता वह निश्चित ही शव के तुल्य है। इस मान्यता के आधार पर ही स्वामीजी निरंतर समाज के पीड़ित वर्ग यथा विधवा, अनाथ, जरूरतमंद, अपंग, निराश्रित, बीमार आदि की सेवा के प्रति सजग बने रहते है। वे स्वयं न केवल उनके प्रति सेवा हेतु तत्पर रहते हैं वरन् प्रत्येक समर्थ मनुष्य से यह अपेक्षा करते हैं कि वह इन दुखियों के प्रति करूणा व सेवा भाव रखे।

संदेश : पूज्यवर के इस महान आचरण से हमें यह शिक्षा और संदेश मिलता है कि पीड़ित व जरूरतमंद की सेवा ही नारायण सेवा है अतः इसमें कोई चूक नहीं होनी चाहिये।

6. परम ईश्वर भक्त : गुरुदेव ने अपने को ईश्वर भक्ति के लिये ही समर्पित कर रखा है। प्रत्येक समय ईश्वर का स्मरण स्वामी जी के आचरण में सतत् देखने को मिलता है। उनकी यह दृढ़ मान्यता है कि परमात्मा के स्मरण बिना, उनकी कृपा दृष्टि के बिना कुछ भी संभव नहीं है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने गीता में भक्ति का संदेश दिया है उसी प्रकार स्वामी जी भी प्रत्येक कार्य ईश्वर को समर्पित करते हैं।

संदेश : पूज्य गुरुदेव का ईश्वर के प्रति समर्पण भाव हमें यह संदेश देता है कि ईश्वर ही सब कुछ है और उसके सामने हमें सभी सांसारिक चीजों को तुच्छ समझना चाहिये। हमारी यही प्रवृत्ति मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

7. सर्वोत्तम चिकित्सक : जिस प्रकार एक श्रेष्ठ चिकित्सक अपने मरीज को ठीक करने के लिये मीठी, कड़वी दवाई देने अथवा इंजेक्शन लगाने से परहेज नहीं करता ठीक उसी प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव जी भी अपने शिष्यों और शरणागत भक्तों के चहुँमुखी कल्याण हेतु दुलार और ताड़ना के माध्यम से उपदेश देते रहते हैं। आपके इस आचरण से हमें गुरुदेव के सर्वोत्तम चिकित्सक के होने का प्रमाण मिलता है।

संदेश : पूज्यपाद का चिकित्सक रूपी आचरण हमें यह सीख और संदेश देता है कि जिसे हम प्यार करते हों और जिसका भला चाहते हों उसे सत्य से भी अवगत कराना चाहिये। जिससे वह पथभ्रष्ट होने से बच सके।

गुरुदेव के व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में सीमित नहीं किया जा सकता है। मेरी इच्छा है कि गुरुदेव के जीवन चरित्र को एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करूं। यह केवल आपकी कृपा दृष्टि से ही सम्भव हो सकेगा।

❒ डॉ0 रतन सूर्यवंशी
श्रीमती रेणु सूर्यवंशी
आलेख प्रेरक : घनश्याम सूर्यवंशी

प्रभुभक्ति एवं मानव का सर्वांगीण कल्याण जिनके जीवन का लक्ष्य बन गया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम, शिरोमणि सन्त साईं चाण्ड्रराम साहिब साक्षात् विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं। प्रभु भक्ति एवं मानव का सर्वांगीण कल्याण उनके जीवन का अभिन्न लक्ष्य है। ऐसे ज्ञानवान् और सेवा भाव रखने वाले का दर्शन मात्र ही परम सौभाग्य है एवं आपका सानिध्य और निकटता किसी तीर्थ से कम नहीं है।

मैं, उन चन्द सौभाग्यशालियों में से एक हूँ जिसे शिरोमणि सन्त साईं चाण्ड्रराम साहिब का दर्शन, सत्संग, निकटता और स्नेह प्राप्त हुआ है। जो कुछ भी मैंने अपनी अल्प बुद्धि अनुसार सन्तवाणी कर्णप्रिय की, उनके दर्शन किये और समझ पाया हूँ, कह सकता हूँ कि वे चलते-फिरते 'इनसाइक्लोपीडिया' हैं; अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि जीवन के प्रत्येक विषय पर आपका गहन अध्ययन व सूक्ष्म पकड़ है तथा दैनिक जीवन की लघुत्तम एवं महत्तम वस्तुओं की परख, समझ और उसका भाष्य करने की पूर्ण विशेषता प्राप्त है।

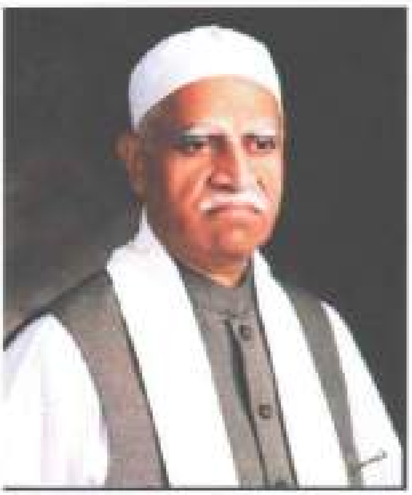

बाल्यकाल से ही आपका मात्र यह प्रयास ही नहीं रहा है अपितु सद्भावना पूर्वक जनसेवा करने की रुचि रही है। आपके ह्रदय पटल पर प्रत्येक समय पर सुझाव और योजनाएं मचलती रहती हैं कि जहाँ-जहाँ पर जिस सीमा तक मानव को सुख पहुँचाया जा सकता है तो पहुँचाया जाय या उसकी व्यवस्था की जाय जिसका साक्षात् प्रमाण है 'सखी बाबा प्रसूति गृह' का पन्नो आकिल में निर्माण।

पन्नो आकिल (सिन्ध) जैसे लघु नगर में एक सुन्दर चिकित्सालय स्थापित कर इस क्षेत्र के लोगों की सेवा का जो अप्रितम कार्य सन्त श्री की प्रेरणा से हुआ है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम ही है।

इस चिकित्सालय से बड़ी संख्या में स्त्रियां बच्चे और पुरुष, हिन्दू व मुसलमान अनेक सुविधाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। ऐसे सेवा कार्य हिन्द व सिन्ध के अनेक नगरों में चल रहे हैं। न केवल स्वास्थ्यलाभ की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं अपितु अन्य विभिन्न कार्य जिसमें कन्याओं के विवाह की सेवा तथा जरूरतमंद परिवारों की आवश्यकताएं पूरी करना इत्यादि सम्मिलित हैं

उनके साथ ही साथ आध्यात्मिक उन्नति के सन्दर्भ में मानव चरित्र एक विशेष उदाहरण हैं। वे स्वयं की प्रगति देखकर एवं अनुभव कर संतुष्ट नहीं होते हैं बल्कि इस हेतु हर समय चिन्तित रहते हैं कि उनके अनुयाई और श्रद्धालुओं की न केवल आध्यात्मिक उन्नति हो बल्कि वे लोग समाज की दृष्टि में अनोखे और विशिष्ट परिलक्षित हो। इसी कारण वे अपने अनुगामियों को अपने अनुभवों तथा प्रयोगों को बारम्बार सुनाते हैं जिस आधार पर उन्होंने स्वयं संत मण्डल एवं समाज में विलक्षण स्थिति प्राप्त की है। सांसारिक व्यवहार के अन्तर्गत जिन नीतियों एवं मर्यादाओं को आपने अपना आभूषण बनाया है और इतने बड़े संत पद की प्राप्ति के पश्चात् भी मानव जन्म की मर्यादाओं को सर्वदा स्वीकार किया है।

मैंने तो ऐसा अनुभव किया है कि इन सभी विशेषताओं का एक ही चरित्र में समाहित होने का आधारभूत कारण सच्चाई, ईमानदारी एवं एक 'भरोसो एक बल एक आस विश्वास' अर्थात् प्रभु में पूर्ण आशा विराजमान है। सन्तों के संग का जितना भी समय मिला और सत्संग श्रवण का जो अवसर प्राप्त होता है प्रत्येक क्षण, प्रत्येक समय नित नूतन वास्तविकताएं सामने आती है जिसकी अनुभूति मात्र से अन्तर्मन गौरवान्वित हो उठता कि हम कितने न सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे महापुरुष का साथ मिला है जिस एक ही चरित्र में इतनी बड़ी और अधिक विशेषताएं पिरोई हुयी है, ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें परमेश्वर सम्मति प्रदान करें कि सन्तों के जीवनादर्शों को अपनाकर अपने जीवन में परिवर्तन लाकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति करते हुए इस जीवन को सफल बनाएं।

मूल– डा० हरी लाल मागिया, पन्नो आकिल सिन्ध
अनुवाद सहित पुर्न प्रस्तुति – झाप्रटे

सन्तों का महिमा मण्डन साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं

सन्त के घर में जन्म लेना ही अपने आप में वैशिष्ट्य है। इसी प्रकार सन्त चाण्डूराम साहिब जन्म से ही ऐसी प्रभु कृपा के कृपापात्र हैं कि एक हरिभक्त भजनीक, शान्ति स्वरूप और सन्त आत्मा, उदारमना, साईं बाबा आसूदाराम साहिब के घर उन्होंने जन्म लिया। एक सन्त आत्मा का पिता के रूप में प्राप्त होना एवं एक सुघड़ स्त्री का माता के रूप में मिलना और जीवन में सन्तों को साथ वह सभी कृपाएं साईं जी की आध्यात्मिक यात्रा में सहायक सिद्ध हुयीं। जिसका प्रकटी करण स्वयं साईं अपनी जन्मभूमि पन्ने आकिल (सिंध) में अपने 50वें जन्मदिवस के अवसर पर कर चुके हैं।

बाल्यकाल से ही साईं जी वैराग्य वृत्ति से भरे रहे इस कारण किसी भी सांसारिक बन्धन में उनका मन नहीं अटका। ईश्वरीय प्रेम ही आपके हृदय की सच्ची प्रसन्नता रही है जिस कारण ही आपके गायन में ऐसी तो पीड़ा भरी हुयी है कि सुनने मात्र से ही प्रत्येक के हृदय रुपी उपवन में बसंत ऋतु आ जाती है।

एक सच्चे फकीर में सच्चाई के जो गुण होने चाहिए। सत्य सदृश्य साईं के जीवन में परिलक्षित होते हैं। मानवता की प्रत्येक प्रकार से 'सेवा' करना ही आपके जीवन का मूल उद्देश्य है। उस विधेय की प्राप्ति हेतु आप सदैव तत्पर रहते हैं। प्रातः से सायं नित्यप्रति भजन एवं सत्संग के माध्यम से अपने अनुभवों से आप सर्वदा समाज को इस नश्वर जीवन की सफलता की सच्ची और सुलभ राहों को रोशन करते रहते हैं। जीवन की सफलता हेतु ऐसे सुन्दर और मधुर वचन सुनकर समाज बहुत अधिक सुख और शान्ति का अनुभव करता हैं।

सिंध भूमि को अतृप्त छोड़ हिन्दू को तृप्त करने के लिए आपने लखनऊ की धरती पर कदम रखा। दिन–रात, गरमी–सरदी की परवाह किये बगैर कठिन श्रम साध्य एवं दूरवर्ती यात्राएं करके नगर–नगर जाकर प्रेम का सत्य संदेश सुनाकर लोगों को अपना अनुयाई बनाया। श्रद्धालुओं की श्रद्धा एवं साईं के अथक परिश्रम से शिव शान्ति आश्रम को एक सुन्दर स्वरूप प्राप्त हुआ; जो आज एक रमणीक स्थान के रूप में साक्षात् है जहाँ प्रत्येक आने वालों को ईश्वरीय रूप मान (अथई इन्दनि मंझि अलाहु) श्रद्धा और प्रेम से सेवा की जाती है और लौटने वालों को साईं याद सदा अबाद के साथ सन्त द्वार से आर्शीवाद प्राप्त होता है। अभिप्राय यह है कि आश्रम में प्रवेश और सन्त दर्शन से स्वयमेव हरिभजन करने की शुभ इच्छा मन में उत्पन्न होती है। यह सब कुछ इस स्थान पर रहकर सन्त श्री ने जो सेवा, सत्संग, भजन और सुमिरन किया है वह सब उसका प्रताप ही है। सच्चे सन्त की सच्ची पहचान भी यही है कि जिसके दर्शन मात्र से मन स्वयमेव ईश्वर भजन की चाहत प्रदर्शित करे। धर्म,

नीति और मर्यादा के पु०ज साईं जी ने अपने जीवन में अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया है परन्तु गुरुग्रन्थ साहिब की अमृतवाणी के प्रति आपकी चाहत और प्रेम का वर्णन शब्दों की परिधि से परे है।

साईं जी ने गुरुग्रन्थ साहिब की वाणी का मनोयोग पूर्ण एवं 'गहरे पानी पैठ' अध्ययन किया है। एक ही 'शब्द' की अनेक प्रकार से व्याख्या करना इसका प्रमाण है। गुरुवाणी के 'शबद' की टीका करने की उनकी अपनी शैली है। श्री सुखमनी साहिब के प्रत्येक अष्टपदी के प्रत्येक पद की सुन्दर टीका सिंधियों के लिए साईं जी का अनुपम उपहार है। जिसे सुनकर जिज्ञासु के हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है। इस प्रकाश से लोगों के अन्धकार मय जीवन में प्रकाश फैलता है। अनुयायी, श्रद्धालु उन टीकाओं को कैसेट्स एवं सीरीज में संग्रह करके अद्वितीय सेवा कर रहे हैं। ऐसी सेवा को ईश्वर अवश्य स्वीकार करेगा। तात्पर्य यह कि विशाल हृदय के स्वामी साईं जी ने स्वयं को प्रत्येक पथ, धर्म से सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास किया है। जिसके रूप श्याम स्वरूप हो विविध समाज बन्धुओं से स्वयं को जोड़ने में सफल हुए हैं। श्रीराम जी की मर्यादा, श्रीकृष्ण के से स्नेह, श्री गुरुनानक देव सी फकीरी और भक्ति से अपने जीवन का तो श्रृंगार किया है किन्तु समाज को अलंकृत करने के लिए तन–मन–धन से प्रयासरत हैं। ईश्वर आपका सैदव मार्ग दर्शन को जो कि दिन–रात ईश्वरीय कार्य में निमग्न रहते हैं। जनता में जनार्दन है और नारायण नरों में है। सभी साईं के लिए प्रत्येक समय शुभाकाक्षाएं करते रहते हैं कि प्रभु आपको अपनी कृपा में रखे और आपके विधेयों को पूरा करने में सफलता प्रदान करें।

हाजिर गुरु 'गुरु ग्रन्थ साहिब' के समक्ष हृदय से नतमस्तक

❒ राधाकृष्ण कन्ध कोट, सिंध
सिन्धी से हिन्दी अनुवाद : झाप्रटे 'सरल'

विनम्र साईं चाण्डूराम

सन्त चाण्डूराम साहिब नम्रता की साक्षात् मूर्ति हैं। आपके दर्शन में ईश्वर दर्शन की अनुभूति सी होती है। अक्टूबर 2003 में मुझे साईं जी के साथ सिंध (पाकिस्तान) की यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर हिन्दू तो हिन्दू मुसलमानों में भी अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत अधिकारी, जमींदार, बुजुर्ग आदि न केवल सतों के समक्ष नतमस्तक हो रहे थे अपितु अपना जन्म धन्य हो गया मान रहे थे। ऐसे सतगुरु के सानिध्य को मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ।

सन्त जी की प्रेरणा से अनेक परमार्थी प्रकल्प आश्रम के अनुयाइयों द्वारा संचालित किये जा रहे हैं। यह सेवा का अद्वितीय कार्य है। साईं जी के आकर्षक व्यक्तित्व से जन सामान्य ही नहीं राजनीतिक हस्तियाँ भी प्रभावित है। जो भी एक बार यहाँ आता है। आश्रम की सेवा और सन्त दर्शन से वशीभूत फिर आता ही रहता है। यहाँ आने वालों को दिव्य आनन्द प्राप्त होता है। सन्त की महिमा अपरम्पार है। सच्ची श्रद्धा से यहाँ आने वालों के मनोरथ अवश्य पूर्ण होते हैं।

साईं जी के आर्शीवाद की बदौलत ही मैं तीन बार लखनऊ नगर महापालिका का पार्षद बना हूँ।

❒ नानकचन्द लखमानी

एकान्तवास के चौदह सौ दिवस

(सन्त चाण्डूराम के परिप्रेक्ष्य में)

पृष्ठभूमि : सिन्ध की साँस्कृतिक धरोहर उत्सर्ग होने में प्रफुल्लित होती रही है। अखण्ड भारत की पश्चिमी सीमा का रक्षक सिन्ध प्रान्त अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने में गौरवान्वित होता रहा है। सिन्ध ने ऐसे सपूतों को सदैव जन्म दिया जो भारत की पश्चिमी सीमा की रक्षा में अपने तन–मन–धन को उत्सर्ग करने में कभी हिचके नहीं। उन्होंने प्राण–प्रण से प्राणों की बाजी लगाकर भारत की रक्षा की।

सिन्धियों के इसी भाव से प्रभावित होकर महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास "सिंह सेनापति" की रचना की। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सिंह सेनापति ने अन्त तक देश की रक्षा की लड़ाई लड़ी। उसने अपने प्राणों को बलिदान कर दिया किन्तु अपने कर्त्तव्य से अडिग रहा, विमुख नहीं हुआ। ऐसे रण–दुर्धर्ष, बाहुबली, वीरोचित योद्धाओं की जननी "सिन्ध" धन्य है।

साहित्यकार वीरेन्द्र पाण्डे ने अपने आध्यात्मपरक ऐतिहासिक उपन्यास "युग–सूर्य" में सिन्धियों के उत्सर्ग भाव से अभिप्रेरित होकर सिन्ध बाला चित्ररेखा की अवधारणा की है जो तत्कालीन सिन्ध के आध्यात्मिक प्रतीक के साथ ही सिन्ध के शौर्य की भी साक्षात् प्रतिमा है। उन्होंने अपने उपन्यास में चित्ररेखा के माध्यम से आर्यावर्त एवं विदेशी आक्रामक मलेच्छों के धर्म एवं संस्कृति की विषद् व्याख्या की है। अतः पुनःश्च सिन्ध धन्य है।

सिन्धियों का मर्म : सिन्धी विश्व भर में बिखरे हुये हैं। उनसे उनका प्रान्त छिन गया है। वे दुःखी हैं– अब उन्हें अपना सिन्ध पुनः नहीं मिल पायेगा किन्तु उनकी धमनियों में अभी भी उत्सर्ग होने के अणु शेष हैं। वे दूसरों के दुःखों का निवारण करने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। उनमें भेद–भाव की भावना लेशमात्र भी नहीं है। यही कारण है कि वे उत्कर्ष की नैसर्गिक धरोहर को संरक्षित रख पाये हैं।

वणिक कर्म : पण्डित राहुल सांस्कृत्यायन ने "सिंह सेनापति" में इस रहस्य को भली–भाँति उद्घाटित किया है लड़ते–लड़ते थक कर चूर हो जाने के कारण जिन सिन्ध वासियों के शरीरों पर कभी चर्बी नहीं चढ़ती थी वे जहाँ–जहाँ पहुँच गये वहीं पर बस गये एवं युद्ध की विकराल विभीषिका से विमुख होकर वैश्यावृत्ति (वणिक कर्म) को अपनाते गये। व्यापार में भी उन्हें पराजित करना उतना ही दुस्तर था जितना कि युद्ध में। उन्होंने रण कौशल के समान ही व्यवसाय कौशल भी अर्जित किया। धन उनके लिये अस्तित्वहीन रहा। वे धन को लोक कल्याण में लगाने हेतु प्रवृत्त हुये।

आध्यात्म के प्रति समर्पण : अपनी सांस्कृतिक धरोहर "उत्सर्ग" के वशीभूत सिन्धी शनैः–शनैः आध्यात्म के प्रति उन्मुख हुये। सिन्ध में अनेक सन्तों ने जन्म लिया। वर्तमान युग में भारतीय आध्यात्म के शिखर पर आरूढ़ दादा जे0पी0 वासवाणी तथा सन्त आसाराम बापू के नाम उल्लेखनीय हैं। उनके उदात्

विचार एवं सहृदयता की अखण्ड ज्योति चहुँ ओर आलोकित हो रही है। स्वामी टेऊँराम महाराज, महायोगी सन्त लीलाशाह महाराज, समर्थ सन्त स्वामी हरनाम दास साहिब, सूफी सन्त डा0 रोचलदास साहिब, सच्चे सन्त साईं सतरामदास साहिब आदि कतिपय उदात् मनीषियों तथा उनकी परम्परा में वर्तमान सद्पन्थों द्वारा सम्पादित किये जा रहे व्यापक आध्यात्मिक सेवाओं एवं सामाजिक लोक कल्याण की सेवाओं को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

आलोक : ज्योति से प्रकाश आलोकित होता है। उसकी आलोकमयी रश्मियाँ जन–जन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। उसी सन्त परम्परा में गुरु नानक देव महाराज के पन्थ की एक विशेष शाखा निर्गुण के प्रति प्रेमा–भक्ति का संचार करती रही है। इस विशेष शाखा में सच्चे सन्त सतरामदास साहिब, भगत कँवरराम साहिब, सन्त बाबा आसूदाराम साहिब एवं वर्तमान में – सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब उसी सन्त परम्परा की अक्षुण्य ज्योति को अपने आध्यात्मिक ज्ञान के आलोक से आलोकित कर रहे हैं।

व्यक्तित्व : लखनऊ के सन्त चाण्डूराम साहिब, शिव शान्ति, सन्त बाबा आसूदाराम आश्रम के संस्थापक, पुरुषोचित्त उदात् भावों से अभिपूरित, विशाल हृदयधारी, उन्मुक्त सेवाओं के कर्णधार, सिन्धी संस्कृति के मूर्त रूप, परम्पराओं के संरक्षक, सशक्त समाज सुधारक, मितभाषी, मिताहारी, गुरु गम्भीर वाणी के उन्नायक, जीवन के अद्‌भुत संचालक, मोहक मुस्कान मण्डित मुखाकृति वाले, सौम्य परमानन्द में निमग्न सन्त, वर्तमान युग पर स्वर्णिम हस्ताक्षर, जिनके दर्शन मात्र से लोग आत्म विभोर हो उठते हैं, उन्हें शत–शत सुमनाँजिल से कोटि–कोटि नमन!

सत्संकल्प :

अवधारणा : संकल्पों को सत्य में परिवर्तित करना ही सत्संकल्प की अवधारणा है। संकल्पों से लक्ष्यों का भेदन होता है जो चरम परिणति को प्राप्त कराता है। संकल्पों को विकल्पों में परिवर्तित करना लक्ष्य से विचलित होना है। अतः आध्यात्म के मार्ग में आगत अवरोधों, विरोधों, कष्टों, विपदाओं से निर्भीकतापूर्वक, वीरोचित भाव से संघर्ष करना, उन्हें पद–दलित करके आगे बढ़ते रहना ही सत्संकल्प को सिद्ध कर लक्ष्य को भेदना है। इस कसौटी पर खरे उतरने पर दशरथ पुत्र श्री राम को भगवान राम का अवतार एवं मर्यादाओं की रक्षा करने वाले होने के कारण "मर्यादा पुरुषोत्तम" नाम से विभूषित किया गया। सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब अपने जीवन में आदर्शों एवं मर्यादाओं के उत्कृष्ट स्वरूप को परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त करने के कारण "मर्यादा पुरुषोत्तम" के पावन अर्थ का मूर्त एवं व्यावहारिक रूप प्रशस्त कर चुके हैं।

नव–शताब्दी : नव शताब्दी की पूर्व संध्या पर अपने मार्मिक उदगारों की अभिव्यंजना करते हुये। सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब ने यह भाव प्रकट किया कि यह शताब्दी, भविष्यवाणी के आधार पर, अपने साथ अनेक कष्टप्रद, भयावह, आपदाओं–विपदाओं से आप्लावित है। उसके विनाशकारी दंश से होने वाले कष्टों को कम करने, निवारण करने अथवा शान्त करने के निमित्त सन्त जनों द्वारा विशेष सत्कर्म करने अपेक्षित हैं। इसके प्रभाव से जन–साधारण को बचाने के प्रभावशाली प्रयास किये जाने समीचीन है। अतः जन–जन के कल्याणार्थ उन्होंने 1400 दिवस एकान्तवास का निश्चय किया। एकान्तवास की इस सुदीर्घ अवधि को उन्होंने आठ पुरुश्चरणों में विभक्त किया। जिससे बीच–बीच में एकान्तवास से बाहर आकर सत्कर्मों को प्रतिपादित करने में उन्हें सुगमता हो सके तथा संकल्प का उद्देश्य भी सफलीभूत हो।

प्रथम पुश्चरण : अपने गरिमा–मण्डित संकल्प को साकार करते हुये सन्त चाण्डूराम साहिब ने 1 जनवरी, 1999 की

कुम्भ मैला 2000 इलाहाबाद में सन्त समागम

रात्रि शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी के सत्संग की पूर्णाहुति कर संगत की संहमति से पूर्णिमा के पावन प्रातःकाल से विधि–विधान का औपचारिक नियम पूर्ण कर उन्होंने एकान्तवास का शुभारम्भ किया। एकान्तवास से उन्हें दिन–प्रतिदिन एकान्तिक आराधना से अनेक आध्यात्मिक उपलब्धियाँ अर्जित होती रहीं। उनके इस प्रथम पुरुश्चरण का उपसंहार 10 जनवरी 2000 को हुआ जिसका भव्य महोत्सव बसन्त पंचमी के दिन 7 जनवरी से शुभारम्भ गुरु गोविन्द सिंह साहिब के जन्मदिन के पावन अवसर पर हुआ। इस अवसर पर उन्हें श्रद्धा–सुमन अर्पित करने हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। अपनी मनोहारी आभा का, दर्शनाभिलाषी समाज को, दर्शन देकर कृतार्थ किया। सन्त जी ने इस प्रथम 400 दिनों की अवधि के समापन पश्चात् 125 दिन की बाह्य अवधि में निम्न पारमार्थिक सेवा सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन किया :

सन्त शिरोमणि साईं जी ने अपना प्रथम पदार्पण हरी ओम मन्दिर में किया तत्पश्चात् अपनी 40 दिवसीय सिन्ध यात्रा की अवधि में :

1. पन्नो आकिल सिन्ध, में पन्नो आकिल दरबार के नव निर्मित (खण्ड) भवन का शुभ उद्घाटन अपने कर कमलों से सम्पादित किया।
2. पूज्य माता साहिब श्रीमती बैंसर देवी की भाव स्मृति में निर्मित "पूज्य सखी बाबा आसूदाराम प्रसूति–गृह का उद्घाटन किया।
3. पूज्य कँवरराम साहिब हाल, घोटकी में साईं चान्दूराम दरबार के नव–निर्मित हाल, पूज्य गुल्लूराम दरबार एवं श्मशान घाट में सन्त श्री द्वारा सेवा अर्पित की गई।
4. बैसाखी के पावन पर्व पर पूज्य रहड़की साहिब में आयोजित अमर शहीद सन्त कँवरराम साहिब की जयन्ती 11 से 13 अप्रैल 2000 तक में अपनी गरिमामय उपस्थिति से श्रद्धालु समाज को अपने सौम्य दर्शनों से अभिभूत किया।
5. रामनवमी के पर्वावसर पर पूज्य पन्ने आकिल दरबार में उदारमना सन्त बाबा आसूदाराम के जन्मोत्सव का आयोजन 12 से 15 अप्रैल तक बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास से सन्त श्री द्वारा सम्पन्न कराया गया।

भारत पुनरागमन पर भारतवासी श्रद्धालु

कुम्भ मेला 2000 इलाहाबाद में सन्त समागम

समाज को गद्–गद करते हुये सन्त जी द्वारा अधोलिखित, सत्कर्मों को सम्पादित किया गया :

1. निर्गुण बालक सत्संग मण्डल द्वारा सोलन (हिमाचल प्रदेश) में दादा चेलाराम साहिब के साधना स्थल पर नव–निर्मित हाल के निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम में सम्मिलित होते हुये अपने कर कमलों से सेवा समर्पित की।
2. शिव शान्ति, सन्त आसूदाराम आश्रम, लखनऊ के मुख्य दरबार कक्ष में सिन्ध के महान सन्तों की वाणियों के संग्रह ग्रन्थों– "नूरी–ग्रन्थ" सन्त साधू वासवाणी विरचित; "प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" स्वामी टेऊँराम जी महाराज रचित; तथा "पूज्य दादा जिनि जा पत्र" दादा चेलाराम साहिब जी की रचना; के ग्रन्थों की विधिवत् स्थापना सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन।
3. देश के विभिन्न अंचलों से आये श्रद्धालु जनों के अनुरोध पर सत्संग के कार्यक्रमों के आयोजन एवं उनमें अपने अमृत वचनों से श्रद्धालु जनों को तृप्त करने की कृपापूर्ण स्वीकृति प्रदान कर उन्हें अनुगृहीत किया। राजनाँदगाँव, दुर्ग, रायपुर, भाटापारा, टिल्डा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) तथा रीवा, सतना, सीधी (मध्य प्रदेश) आदि नगरों में सत्संग के भावपूर्ण कार्यक्रमों में अपनी आध्यात्मिक गुरु–गम्भीर वाणी से संगत को आत्मिक आनन्द की अनुभूति से लाभान्वित किया।
4. पूज्य माता बैंसर देवी की पावन स्मृति में, दतिया (मध्य प्रदेश) में, नवनिर्मित भव्य सत्संग भवन का,

कुटिया साहिब पूज्य माता साहिब अस्थान दतिया

6 जून, 2000 को उदघाटन एवं सेवा कार्य किया, सन्त शिरोमणि के कर कमलों द्वारा सम्पादित हुआ।

द्वितीय पुश्चरण : सौभाग्यशाली संगत को शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी की मंगलमयी रात्रि का सत्संग अपनी पीयूषमयी वाणी से श्रवण कराकर 16 जून, 2000 से सन्त चाण्डूराम साहिब ने अपने एकान्तवास के द्वितीय पुरुश्चरण में सफलतापूर्वक प्रवेश किया। अपने आध्यात्मिक अनुभवों को प्रखरता प्रदान करने एवं उनसे समाज को अधिकाधिक लाभ देने के सद्विचार से उन्होंने अपने इस द्वितीय 200 दिवसों के पुरुश्चरण को 31 दिसम्बर 2000 को विराम दिया। इस अन्तराल में उन्होंने निम्न कार्यों का सम्पादन किया।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम ''महाकुम्भ'' प्रयाग में सम्मिलित होकर सन्तों के अखाड़ों, अन्नक्षेत्र, पण्डालों तथा सत्संग पण्डालों में दर्शन एवं सेवा कार्य किये।

भगत बालचन्द, वाराणसी निवासी के सुपुत्रों श्री सीतलदास, दयाराम मंगलाणी मुखी द्वारा गंगाजी के सुरम्य तट पर अपने पिताश्री द्वारा निर्मित 15 कक्षों एवं भव्य मन्दिर से सुसज्जित वृद्धाश्रम को सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम के श्रीचरणों में समर्पित किया। इस पावन स्थल पर सत्संग का आयोजन सन्त श्री की सद्प्रेरणा से सम्पादित हुआ।

दिल्ली में श्री राजकुमार आनन्दाणी, (मधुर कोरियर सर्विस) द्वारा स्थापित ''पूज्य सखी बाबा आसूदाराम'' धर्मशाला का विधिवत् उद्घाटन किया।

तृतीय पुश्चरण : इस पुरुश्चरण का शुभारम्भ, पूर्वोक्त सदकार्यों के पूर्ण होने पर 8 फरवरी 2001 शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी के शुभ अवसर पर श्रद्धालु संगत को सत्संग का रसास्वादन कराने के उपरान्त, से प्रारम्भ हुआ। इस एकान्तवास से अपनी साधना को सन्त चाण्डूराम साहिब ने एकादशी के सुअवसर पर 200 दिवसों की अवधि सम्पूर्ण कर 19 मई, 2001 को विराम दिया। इस तृतीय अन्तराल के निमित्त हुये अधोवर्णित गरिमामय शुभ कार्य :

पूज्य माता साहिब बैंसर देवी के वर्सी महोत्सव को अपनी गरिमामयी उपस्थिति से सुशोभित करने हेतु दतिया पधारे। वहाँ जन कल्याण हेतु सन्त बाबा आसूदाराम नेत्र चिकित्सालय का शिलान्यास अपने कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया।

सन्त चाण्डूराम साहिब ने दुर्ग की संगत के विशेष आग्रह को स्वीकारते हुये ''सन्त बाबा आसूदाराम सत्संग भवन'' का विधिवत् उद्घाटन समारोह पूर्वक किया तथा अपनी कल्याणी वाणी से संगत को भाव विभोर किया।

चिरगाँव, जिला झाँसी की संगत के विशेष अनुरोध को स्वीकार करते हुये उनके द्वारा नव निर्मित ''सन्त बाबा आसूदाराम भवन'' का मनोरम उद्घाटन समारोह पावन कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। वहाँ सन्त जी ने अपनी माधुर्यमयी वाणी से सत्संग सरिता को प्रवाहित कर संगत को भाव विभोर कर दिया।

लखनऊ के श्रद्धालु भाई दर्शन लाल खेमाणी के निवास स्थान में निर्मित ''सन्त बाबा आसूदाराम सत्संग हाल'' का शुभारम्भ सम्पन्न कराकर सत्संग रूपी गंगा में, उपस्थित संगत को सौभाग्य प्रदान करते हुये, स्नान कराया।

रीवा नगर निवासी श्री जीवतराम, रमेशलाल, विनोद कुमार आदि द्वारा किये गये विनम्र निवेदन को स्वीकार करके ''सन्त सखी बाबा भवन'' में आयोजित

सत्संग को अपनी निर्मल कोमल वाणी से उपस्थिति संगत को प्रेमा भक्ति का उपदेश देकर सत्कर्मों की ओर उन्मुख किया।

चतुर्थ पुश्चरण : 20 सितम्बर, 2001 एवं 21 सितम्बर 2001 के मध्य शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी की शुभ रात्रि को सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब ने अपनी सौम्य मधुर वाणी से आगत संगत को सत्संग की निर्मल शीतल धारा में नहला कर भावविभोर करने के उपरान्त प्रातः 21 सितम्बर, 2001 से एकान्तवास के इस महत्वपूर्ण पुरुश्चरण में प्रवेश किया। स्वनाम धन्य सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब ने अपने गहन आध्यात्मिक चिन्तन को अग्रसर करते हुये जन–जन के कष्ट निवारण हेतु इस पुरुश्चरण की अवधि 12 अप्रैल 2002 तक सीमित की। 13 अप्रैल, 2002 बैसाखी के अति पावन पर्व, अमर शहीद सन्त कँवरराम साहिब की जयन्ती उत्सव के सुअवसर पर अपने 100 दिनों के एकान्तवास के चतुर्थ पुरुश्चरण को पुनः विराम देकर धर्मार्थ एवं सेवा सम्बन्धी सत्कर्मों में प्रवृत्त हुये।

सन्त कँवरराम सेवा मण्डल लखनऊ के गत वर्ष में की गई सेवाओं का विस्तृत विवरण संगत के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। उत्तर प्रदेश के बेरोजगारों को स्व–रोजगार हेतु आर्थिक सेवा प्रदान कराने, शिक्षा के क्षेत्र में सेवा, जरूरतमंद परिवारों को विवाहों के निमित्त सेवा, कम्बल, गद्दा, रजाई, साइकिल एवं सिलाई मशीनों की सेवा हेतु पुनः लगभग 13 लाख रुपये की सेवा की व्यवस्था कराकर उक्त कार्यों हेतु 'सन्त कँवरराम सेवा मण्डल' को अर्पित किये गये।

सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम द्वारा सन्त कँवरराम प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात सन्त कँवरराम चैरिटेबुल ट्रस्ट, मवइया का शुभारम्भ किया। श्री मुरलीधर आहूजा एवं लखन लाल आहूजा तथा उनके अन्य सभी भाइयों द्वारा क्रय किये हुये भवन को सन्त चाण्डूराम साहिब के श्रीचरणों में समर्पित किया जाना, जिससे उस भवन में कोई भी परमार्थिक कार्य आरम्भ किया जाये।

पाकोड़ निवासी श्री भम्मा राम, नामदेव व दुर्गादास जी ने अपने पिताश्री ओटणदास की स्मृति में निर्मित गौशाला में पूज्य सखी बाबा हाल का शुभारम्भ करने हेतु निवेदन किया, जिसे सन्त ने स्वीकारते हुये विधिवत् सम्पन्न कराया तथा हाल का समर्पण स्वीकार किया।

राधा स्वामी संगठन के इटारसी निवासी श्री राठौर द्वारा सन्त सखी बाबा आसूदाराम के नाम से सत्संग भवन बनाने हेतु भूमि समर्पित की।

इटारसी–हौशंगाबाद मार्ग पर स्थित सेठ गोपीचन्द एवं सेठ सीरूमल द्वारा निर्मित विशाल सन्त सखी बाबा आसूदाराम गौशाला का उद्घाटन प्रतिपादित किया। वहाँ सत्संग की अमृतमयी वाणी का संगत को रसास्वादन कराया।

राजनांव गाँव, छत्तीसगढ़ में उदयाचल धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र में श्री सन्तोष कुमार बुद्धा द्वारा पूज्य सखी बाबा आसूदाराम सत्संग हाल बनवाया गया और उसे सन्त चाण्डूराम साहिब के श्री चरण कमल में श्रद्धाभाव से समर्पित किया।

सन्त सखी बाबा आसूदाराम साहिब के विशाल वर्सी महोत्सव के आयोजन में, अन्य सन्तों महात्माओं के अतिरिक्त रहड़की सद्गुरु दरबार सिन्ध से पूज्य सन्त साधराम साहिब का आगमन हुआ। अपार संगत की उपस्थिति के साथ सन्त कँवरराम सेवा मण्डल, सन्त बाबा आसूदाराम सेवा मण्डल तथा सन्त बाबा आसूदाराम सेवा समितियों के देश भर से आये हुये सेवादारियों को एक सूत्र में बाँधने का सन्देश सन्त साधराम साहिब ने दिया।

पंचम पुश्चरण : यह पुरुश्चरण 24 जुलाई 2002; गुरुपूर्णिमा के शुभ पर्व पर अपने साधक भाई–बहिनों

को सन्देश व आशीर्वाद रूपी अमृत वचन प्रदान करने के पश्चात आरम्भ हुआ और 2 नवम्बर, 2002 को 100 दिवसीय अवधि के पश्चात् निम्न सत्कर्मों को विधिवत सम्पादित करने हेतु अमर शहीद सन्त कँवरराम के बलिदान दिवस पर अन्तराल का निश्चय किया :

श्रीमती शालिनी सागर व वीना श्रृंगी के विशेष निवेदन पर 'मारूई' संस्था द्वारा आयोजित सन्त कँवरराम सेमीनार दिल्ली में "तूँ छप्पर तूँ छाँव" कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का गरिमामय पद स्वीकार किया।

अस्वस्थता के कारण दिल्ली व लखनऊ में उपचार करवाया।

30 नवम्बर, 2002 को अपनी दो सुपुत्रियों आयुष्मती सुमन एवं आयुष्मती जयवन्ती का शुभ विवाह सम्पन्न कराया।

शदाणी दरबार रायपुर निवासी सन्त गोविन्दराम साहिब के ब्रह्मलीन सिधारने पर उनकी अन्त्येष्टि से लेकर पगड़ी रस्म 24 अप्रैल से 28 अप्रैल तक का समय उनके परिजनों के साथ रहकर शोकाकुल परिवार को सांत्वना प्रदान की।

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ में पथरी की शल्य क्रिया कराई।

दतिया के जिला चिकित्सालय में 50 गद्दों की सेवा की गई।

वृन्दावन के हितदास आश्रम में 75000/– की सेवा गौशाला हेतु की गई।

समाधा आश्रम–कानपुर में नये हाल के निर्माण हेतु 25000/– की सेवा की गई।

सन्त सखी बाबा आसूदाराम जी के विभिन्न स्थानों पर शीतल जल की मशीनें लगाकर प्याऊ सेवा कार्य आरम्भ किया गया। यह कार्य दतिया, गोण्डा, देवरिया, परभणी में दो, इटारसी, नागपुर तथा रायगढ़ रेलवे स्टेशनों पर भी सेवा कार्य सम्पन्न किया गया।

षष्टम् पुश्चरण : सन्त शिरोमणि साईं चाण्डूराम साहिब ने अपने एकान्तवास का यह चरण 14 जून, 2003 को पूर्णिमा की पावन तिथि से आरम्भ किया। अपनी जन कल्याणकारी साधना के इस पड़ाव को 24 सितम्बर, 2003 को 100 दिनों की अवधि तक सीमित किया। इसके उपरान्त हुये अन्तराल में निम्न सत्कर्मों का सम्पादन हुआ :

सिन्ध यात्रा का शुभारम्भ 15 अक्टूबर 2003 को हुआ। संगत से विदा लेकर बस द्वारा दिल्ली के लिये प्रस्थान किया, वहाँ से 17 अक्टूबर, 2003 को सिन्ध के लिये सद्भावना बस द्वारा प्रस्थान किया। उनके साथ सिन्ध यात्रा में 25 श्रद्धालु प्रेमियों ने भी सहयोग दिया। जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। सन्त चांदूराम साहिब की निर्वाण शताब्दी महोत्सव में मुख्य अतिथि पद को गौरवान्वित किया।

पूज्य रहड़की सद्गुरु दरबार में पूज्य सन्त साधराम जी के आमन्त्रण पर सच्चे सन्त साईं सतराम दास साहिब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्तम् मेले को अपनी गरिमामयी उपस्थिति से सुशोभित किया।

सिन्ध से 28 दिसम्बर 2003 को पुनरागमन पर दिल्ली में, हरिद्वार निवासी स्वामी विवेकानन्द एवं उनके अनुयायियों द्वारा आयोजित स्वागत समारोह तथा रात्रि भोज में सम्मिलित हुये।

लखनऊ में 26 जनवरी की पुण्यमयी वेला पर सन्त चाण्डूराम साहिब ने अपनी दो सुपुत्रियों आयुष्मती सुनीता व आयुष्मती संगीता का शुभ पाणिग्रहण संस्कार विधिवत् सम्पन्न कराया।

लखनऊ में 9 फरवरी, 2004 को सन्त श्री ने अपनी सुपुत्री आयुष्मती लक्ष्मी का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराया। उन्होंने अपनी सभी कन्याओं का कन्यादान अपने ही निवास स्थली से सम्पन्न कराया।

लखनऊ में 22 फरवरी, 2004 के पावन दिन को सन्त के ज्येष्ठ सुपुत्र शहजादा साईं मोहनलाल का आदर्श विवाह, जुगत निवास, हरिद्वार निवासी डा० स्वामी गंगादास की सुपुत्री तृप्ति के साथ सम्पन्न हुआ।

सप्तम् पुश्चरण : शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की महत्वपूर्ण रात्रि को सत्संग के पश्चात् 6 मार्च, 2004 से, सन्त साहिब ने इस पुरुश्चरण का शुभारम्भ किया। अपनी साधना को प्रखरतम स्तर पर लाने के प्रयासों के इन चरणों में उन्होंने वाणी की धैर्यता एवं शालीनता की सीमातीत सफलता का रसास्वादन किया। उन्हें पूज्य माताश्री के निर्वाण दिवस पर दतिया में आयोजित महोत्सव में सम्मिलित होने के लिये 20 मई, 2004 को मात्र 80 दिनों के एकान्तवाद के पश्चात् अन्तराल देना समीचीन जान पड़ा। इस अन्तराल में उन्होंने निम्न सत्कर्म सम्पादित किये।

सिन्ध से आये हुये पूज्य सन्त साधराम साहिब को भावभीनी विदाई देने दिल्ली पहुँचे।

पूज्यनीय माता साहिब बैंसर देवी की पुण्यतिथि महोत्सव दतिया में सम्मिलित हुये।

मध्यप्रदेश के नगर डबरा में सन्त बाबा आसूदाराम सेवा समिति की ओर से आयोजित सत्संग में तथा उत्तर प्रदेश में क्रमशः चिरगाँव, मोठ, उरई व कानपुर में आयोजित सत्संगों में संगत को अपनी वाणी का अमृतपान करा कर पुनः चर्तुदशी की पावन रात्रि का सत्संग सम्पन्न करके 2 जून, 2004 को इस अन्तराल की पूर्णाहुति की।

अष्टम् पुश्चरण : सन्त ने अपने संकल्प को मूर्तरूप देते हुये इस पुरुश्चरण को 2 जून, 2004 से एकान्तवास हेतु आरम्भ किया है जिसका समापन 14 जनवरी, 2005 को मकर संक्रान्ति के पावन अवसर से प्रारम्भ होकर गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती पर्व के आयोजन के साथ 16 जनवरी को 1400 दिवसीय एकान्तवास अपनी पूर्णता को प्राप्त होगा।

❒ **हरीश वाधवाणी, सत्यानन्द सावलानी**

वचनों से मोहित करते हैं सन्त चाण्डूराम

सन्त चाण्डूराम साहिब अपने वचनों से सभी का मन मोह लेते हैं। उनके वचन मनुष्यों के दिलों में अजनबी धड़कनें पैदा करते हैं इससे ईश्वरीय आनन्द और शांति सभी के मन में प्राप्त होता है। वे मानव हृदयों को दया और सांतवना प्रदान करते हैं।

शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम में निराश्रितों के लिए आश्रय की परिपूर्ण व्यवस्था मुहय्या करायी गयी है। मुहय्या ही नहीं अपितु उनका पूर्ण रूप से हर तरह से ध्यान रखा जाना आश्रम का अपना वैशिष्ट्य है।

मैं अपने उद्‌गारों को शब्दों में समेट नहीं पा रहा हूँ। सतगुरु साईं चाण्डूराम के सुपुत्र साईं मोहनलाल के विवाह समारोह में फरवरी 2004 में सिंध से हिन्द की यात्रा के लिए वीजा आदि की सुविधाएं सद्‌गुरू कृपा से बड़ी आसानी से प्राप्त हुयी।

आश्रम के पवित्र वातावरण ने खूब प्रभावित किया। ऊपर से सन्त के स्नेह और कृपा रूपी वर्षा से मैं व मेरे साथ सिंध से आए लगभग 200 लोग अभिभूत हो गये। हृदय से ईश्वर को प्रार्थना करते हैं कि उनका स्वास्थ्य बनाएं रखें और उन्हें लम्बी उम्र प्राप्त हो जिससे प्राणिमात्र का भला हो; असहाय, पीड़ित, दुःखी लोगों को सन्तों की कृपा प्राप्त होती रहे।

मूल आलेख अंग्रेजी में :
❒ **डा0 द्वारिकादास**, सक्खर, सिंध
अनुवाद : झाप्रटे 'सरल'

सात्विक सेवक के गुण :

मुक्त संगोऽनहंवादी धृत्युत्साह समन्वितः।
सिद्धयसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते।। (श्रीमदभगवदगीता)

– अर्थात् जो निःसंग और निर्लेप है, जिसमें अहंकार नहीं है, जिसके पास धैर्य है, जिसके मन में आकांक्षा और उत्साह है तथा जो कर्म की सिद्धि–असिद्धि से एवं लाभ–हानि से विचलित नहीं होता है– उसी को सात्विक कार्यकर्त्ता कहते हैं।

अवतारों का जीवन संसार के जहर को पीकर अमृत रूपी मिठास को बांटने की प्रेरणा देता है !

एक भजन हैं – "शान्ति का आयेगा जब सवेरा दूर हो जायेगा सब अन्धेरा।" शान्ति कैसे आयेगी इस प्रश्न का उत्तर है एकता द्वारा शान्ति आयेगी। संसार में तकलीफ तथा दुःख हैं। मनुष्य संसार से मुक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। अवतारों को भी संसार में आकर दुःख झेलना पड़ता है उन्हें भी संसार के दुःखों से मुक्ति नहीं हैं वरन् वे युग–युग में विविध रूपों में बार–बार मनुष्य का कल्याण करने संसार में आते हैं। कुछ लोग संसार से भागकर हाथ में भीख का कटोरा थाम लेते है। किसी को संसार से मुक्ति नहीं है। इस संसार में सबको आना है। संसार के पास जो है वह देगा अर्थात् संसार की दुकान में दुःख, तकलीफें तथा कष्ट हैं। परमात्मा के पास जो है वह मिलेगा। संसार में आकर अवतारों तथा संतों को भी बहुत कष्ट मिलते हैं। संसार में अवतारों तथा संतों को वनवास, सूली, जेल तथा जहर का प्याला मिलता है। संसार से ये पाकर अवतार–संत क्या करते हैं ?जैसे– वृक्ष कार्बन डाईआक्साइड लेते हैं तथा उसे आक्सीजन के रूप में वापिस कर देते हैं। इसी प्रकार अवतार तथा संत भी संसार के जहर को पीते हैं और उसे अमृत रूपी मिठास बनाकर बांटते हैं।

इंसान तथा जानवर में निद्रा, भूख, मैथुन तथा डर एक समान है। फर्क केवल धर्म का है। धर्म मायने कर्तव्य। सभी अवतारों ने मनुष्य का एक ही कर्तव्य बताया कि मेरी आज्ञाओं को जानकर उसे अपने जीवन के द्वारा प्रतिविम्बित कर कुछ लोग ईश्वर की आज्ञाओं को समझे बिना ही लोगों से घृणा करने लगते हैं। धर्म के नाम पर एक–दूसरे को जीवित जला देते हैं। एक–दूसरे के पूजा स्थलों के साथ ही मकान तथा दुकान को भी तोड़ देते हैं तथा जला देते हैं। यह धर्म का अज्ञान है।

सत्संग मायने सत्य का साथ है। परमात्मा के सत्य को जानवर नहीं जान सकता। जानवर में समझने की क्षमता नहीं है। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में जहाज टकराकर हजारों को मार देने वाला विमान चलाने की दक्षता रखने वाला प्रतिभाशाली व्यक्ति तो होगा ही तभी उसने विमान को काफी ऊँचाई से बड़ी कुशलता से उड़ाते हुए ठीक लक्ष्य पर लाकर टकरा दिया। इस व्यक्ति की प्रतिभा जानवर से भी ज्यादा खराब थी। आज की उद्देश्यहीन शिक्षा ने मनुष्य को चार चीजों (अनास्था, संशय, अनिश्चयात्मक वृत्ति तथा मन का संघर्ष) की जंजीरों से जकड़ दिया है। उद्देश्यपूर्ण शिक्षा ही इन चार चीजों से मुक्ति दिला सकती है। बल्ब का संबंध पावरहाउस से कट जाये तो उसमें रोशनी नहीं रहती। प्रार्थना द्वारा परमात्मा से वार्तालाप नहीं हो रहा है। कैकेयी को उसकी नौकरानी मंथरा समझा रही है कि राम के गद्दी पर बैठते ही कौशल्या राजमाता बन जायेगी। राजमाता एक ही होती है। कैकेयी तू रानी क्या, पटरानी भी नहीं रहेगी। कैकेयी मंथरा की बात में आकर एक पल के लिए स्वार्थ में चली गयी। परमात्मा से उसका संबंध एक पल के लिए विच्छेद हो गया। मन में संशय आने से अनिश्चय की स्थिति में चली गयी। मन में संघर्ष शुरू हो गया। जैसे कोई व्यक्ति अन्धेरी गली में जा रहा हो, सामने मेनहोल आ जाये तो वह धड़ाम से मेनहोल में गिर जायेगा। स्वार्थ आ जाने से बड़े से बड़े लोगों का विनाश हो जाता है। कैकेयी धनवान राजा की बहुत ही

सुन्दर बेटी थी। मन में स्वार्थ आ जाने के कारण अपने पूरे परिवार को लेकर डूब गयी।

हृदय में दो को बैठने की जगह ही नहीं है। स्वार्थ या परमात्मा में से एक ही के लिए जगह है। परमात्मा ने अपने रहने के लिए मनुष्य का हृदय बनाया है। परमात्मा के पूजा स्थल मंदिर, गिरजा व गुरुद्वारा मनुष्य के अपने बनाये हुए हैं। परमात्मा का कोई मंदिर नहीं है। संत भी एक परमात्मा के न होकर अलग–अलग धर्मों के हैं। जिसके मन में जाति–धर्म का भेदभाव आ जाये तो वह कैसा संत है। परमात्मा के न होकर अलग–अलग धर्मों के हैं। जिसके मन में जाति–धर्म का भेदभाव आ जाये तो वह कैसा संत है। परमात्मा का भी जो निष्ठावान नहीं है। वह आपका भला क्या करेगा। जो पवित्र ग्रन्थों में बताया गया वह सही है। तेरे हृदय में सबकी भलाई हो, जो मेरी तरह सोचते हैं वे मुझे प्रिय हैं। परमात्मा घट–घट वासी है। राम शरीर नहीं वरन् राम आत्म तत्व है। आत्मा की तुलना में शरीर का कोई मूल्य नहीं है। धरती पर जब–जब कष्ट बढ़ते हैं परमात्मा अपने अवतार को यह कहकर भेजता है कि संसार से मिलने वाले दुःख को पीना तथा सुख बांटना। राम ने संसार में आकर ऐसा सुन्दर समाज दिया जिसमें दैहिक, दैविक तथा भौतिक कष्ट न हो। राम को इसके बदले 14 वर्ष वनवास मिला। हृदय से हे ! राम ! कहने पर रावण को माफ कर दिया। प्रभु की इच्छा का कार्य–सत्य कर्म है। प्रभु की इच्छा के विरुद्ध किये जाने वाले कार्य दुष्कर्म हैं। कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि यह जो तू दो–तीन घण्टे तक पूजा करता है यह पूजा नहीं है। पूजा क्या है ?मेरी इच्छा को समझकर युद्ध कर। तू अपनी करेगा तो दण्ड दूंगा।

परमात्मा अपना ख़जाना लेकर हमारे हृदय में रहता है। हमारे स्वार्थ के गंदे हाथ उस खजाने को लूट न ले। तेरे हाथों में पवित्र किताबें हो। परमात्मा ने यह शरीर भी अपने काम के लिए दिया है। इस शरीर से अच्छे कार्य हो।

विज्ञानियों का मानना है कि किसी उच्च उद्देश्य को लेकर लगभग 3.80 अरब वर्ष पूर्व सृष्टि का निर्माण हुआ है। परमात्मा ने प्रथम स्त्री–पुरुष के रूप में में एडम–ईव को संसार में सृजित करके भेजा। परमात्मा ने एडम–ईव से कहा कि घर में न तो पति की चले और न पत्नी की चले, घर में परमात्मा की चलेगी तो घर अच्छा रहेगा। यदि तुमने आपस में झगड़ा किया तो संतान बरबाद होगी।

अब बद्रीनाथ–केदारनाथ में तीर्थ नहीं है, वरन् पति–पत्नी दोनों को मिलकर घर–घर को तीर्थ बनाना है। प्रभु मेरे घर को यह वर दो, माता–पिता की सेवा हो, घर ही मेरे लिए तीर्थ हो। **अज्ञानता के कारण आज हम भगवान को अपने कहने पर चलाना चाहते हैं। भगवान को दस रू0 का प्रसाद चढ़ाकर कहते हैं कि हमारे सब काम करना। भगवान के लिए केवल प्रसाद तथा उसके बदले अपने लिए सब कुछ चाहते हैं। आज प्रभु ईशु को मानने वाला सच्चा ईसाई बनने को तैयार नहीं है। कोई हिन्दू राम की मानने को तैयार नहीं है।** रामायण में लिखा है "परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई"।

संसार का जहर लें तथा प्रार्थना–प्रभु भक्ति के द्वारा अमृत बनाकर समाज को दें। संसार में आते ही हमें यह भली–भांति समझ लेना चाहिए कि मैं संसार में जहर पीने आया हूँ तथा जहर के बदले में अमृत देने आया हूँ। मीरा का जहर का प्याला संसार के लिए प्रभु भक्ति से अमृत बन गया। तुलसीदास की रामायण पण्डे चुराकर ले जाते थे। तुलसीदास उससे विचलित नहीं हुए, यह जहर वे चुपचाप पीकर प्रभु का कार्य करते रहे। तथापि रामायण जैसा अमृत रूपी पवित्र ग्रन्थ संसार को दिया। ईशु को फाँसी मिली उसके बदले में उन्होंने संसार को करुणा का सन्देश दिया। करोड़ों–करोड़ों लोगों के जीवन अच्छे बनते चले गये। संसार का जहर पीने के लिए इंसान का जन्म हुआ है। संसार को अमृत देकर मुक्ति होगी। इंसान को स्वतंत्र इच्छा दी है। अच्छे कार्य करोगे तो कल्याण करूँगा। परमात्मा का कोई आकार– प्रकार नहीं है। हमने अपनी सुविधा के लिए शून्य के रूप में परमात्मा को माना। वैसे परमात्मा शून्य भी नहीं है। परमात्मा तो सदैव रहता है, न तो जाता है, न आता है। बाजार से साफ दर्पण लाइये उसमें से सूर्य की किरणें प्रतिबिम्बित होंगी। लकड़ी से सूर्य की किरणें प्रतिविम्बित नहीं होती हैं। हृदय साफ होने पर परमात्मा के गुण प्रतिविम्बित होते हैं। आत्मा में परमात्मा की आत्मा चलकर नहीं आयेगी। मात्र हृदय को पवित्र

करने की आवश्यकता है, आत्मा से ईश्वरीय गुण प्रतिविम्बित होने लगेंगे।

अर्जुन जब तक कृष्ण की बातों पर संशय करके उनसे वाद–विवाद करता रहा तब तक उसकी आत्मा प्रतिविम्बित नहीं हुई। भट्टे जैसी आंखों से परमात्मा के दर्शन नहीं होते। आत्मा को साफ करने पर परमात्मा के दर्शन होते हैं। नाली में जब तक कीचड़ भरा है तब तक उसमें कितना भी बढ़िया से बढ़िया, इतर डालो कोई फायदा नहीं। पहले कीचड़ साफ करना होगा। अर्जुन जब पछाड़ मारकर गिरता है, शरणागत् होता है, तब कृष्ण उसे मुँह खोलकर दिव्य ज्ञान देते हैं। वही जान सकता है जिसे परमात्मा जानता है। परमात्मा का ज्ञान कब होगा जब श्रद्धा होगी।

मिट्टी के माता–पिता भी अच्छा बेटा चाहते हैं। आत्मा बेटा चाहते हैं। आत्मा का पिता परमात्मा तो उससे भी अच्छा बेटा ही चाहेगा। अपना नाम सीताराम या राधेश्याम रख लेने से कोई व्यक्ति परमात्मा को धारण करने वाला नहीं बन जाता। भगवान के प्रति ईमान लाना जरूरी है। दशरथ भी अपने पुत्र को नहीं पहचान पाये। राम तो त्रिलोकी थे। कई बार उन्हें राम की त्रिलोकी होने की पहचान मिली। जैसे– विश्वामित्र के साथ जाकर जब राम ने भयंकर राक्षसों को मारा, जब राम ने शिव का धनुष तोड़ा, पिता की चौदह वर्ष वन जाने की आज्ञा सुनकर खुशी–खुशी कहने लगे पिताजी चौदह वर्ष क्या चौदह जन्म भी दे सकता हूँ। आपने तो मुझे कानन का राज्य दे दिया। फिर भी दशरथ राम में स्थित त्रिलोकी को नहीं पहचान पाये। परमात्मा की पहचान उसका शरीर नहीं उसके गुण हैं। दशरथ बेटे के दुःख में मरकर चले गये। समाज की कोई चिन्ता नहीं की। समाज टूटता हो तो टूटे। राजा का जीवन अपने जीने के लिए नहीं होता। इस संसार में आना फायदे के लिए है, दुःख, कष्ठ व बीमारी रूपी जहर पीने को मिलेगा। राम का लाभ क्या है। समाज का सुन्दर निर्माण तथा सुन्दर शिक्षायें देना। सीता वन न जाती तो सारे संसार को सन्देश जाता कि पति दुःख में हो तो साथ में न जाना। सीता ने अपनी अंर्तआत्मा की आवाज सुनकर पति के साथ जिद करके वन में साथ गयी। राम–सीता के शरीर के साथ ही आत्मा का भी विवाह हो गया सीता महान कब बनी जब आत्म तत्व राम की बात मानी। सीता ने राम की आत्मा को समझ लिया। राम की आत्मा क्या चाहेगी कि संसार की स्त्रियां अपने पति का साथ दें। राम के अंदर जो रामत्व है उसे पहचाने। मनुष्य का जन्म परमात्मा के शरीर को नहीं आत्मा को जानने के लिए हुआ है।

कैकेयी जानवर के रूप में आयी जानवर के रूप में मर गयी। रावण जानवर के रूप में आया किन्तु मरते वक्त इंसान बन गया। धृतराष्ट्र, भीष्म को मरते दम तक भी कृष्ण के दर्शन नहीं हुए। दिल से हे राम ! निकालिए सफलता मिल जायेगी। 'मैं' अच्छी चीज है। मेरी अपनी इच्छा है अवतार की नहीं। अवतार का हानि–लाभ कुछ नहीं है। मैं राम का कार्य करूं। मेरे को जीवन पर्यन्त भगवान का कार्य करना है।

❐ **जगदीश गांधी**

रामनवमी 2002 के अवसर पर महिला जागृति यात्रा लखनऊ का एक दृश्य

सद् गृहस्थ महान संत परिवार

डा० स्वामी गंगादास उदासीन की दृष्टि में

सच्चे साई सतराम दास साहिब जी महाराज के कृपापात्र–मर्यादा पुरुषोत्तम–प्रकाश पुंज स्वरूप, जंगम तीर्थ, परम् श्रद्धेय सन्त शिरोमणि साई चाण्डूराम साहिब जी के कुशल मार्गदर्शन एवं उदारता ने, माताश्री की ममता–वात्सल्य भरी भावनाओं ने, परम् प्रिय–लोकप्रिय–सर्वपरिचित साई मोहनलाल जी के अपार मधुर स्नेह ने, करुणासिन्धु–तपस्वी साई हरीशलाल जी के सुखद सानिध्य–गुप्त आशीषों ने, जन्म–जन्मान्तरों से सुसंस्कारित मईया हर्षा रानी जी की सरलता सहजता भरी अद्‌भुत उपस्थिति ने, कर्मठ–मिलनसार–धैर्यवान साई किशन लाल जी सहित असंख्य श्रद्धालू–शिष्यों–भक्तों की निष्काम सेवा–समर्पण भावना ने एवं शासनाध्यक्षों के भरपूर सहयोग ने श्री शिव शान्ति आश्रम को बहुत ही ऊँचा मुकाम प्रदान करने का अतुलनीय–अविस्मरणीय कार्य किया हैं। साथ ही साथ इस महान यज्ञ में गंगापुत्री तृप्ति जी के सम्मिलित हो जाने से 'सर्वजन हिताय' नई उमंग, नई दिशा, नई ऊर्जा का संचार निश्चित रूप से हुआ है।

त्याग मूर्ति–ज्ञान मूर्ति–अमर शहीद संत कवँर राम साहब से अभिन्न स्वामी चाण्डूराम जी महाराज की जीवन शैली एवं आदर्श पर्यायवाची शब्द हो चुके हैं। जिन्होंने अपने साधन, शक्ति का अधिकांश भाग जनता की सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से समर्पित कर स्वतः ही प्रकाश स्तंभ सिद्ध होते हुए सन्मार्ग के राजमार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने तथा सभी पंथों और सम्प्रदायों के बीच आपसी सद्‌भाव बढ़ाने में अपना सक्रिय योगदान दिया है। उनके ही श्रीमुख से वर्षों से निकलते वचन सार्थक हो चुके हैं–

''किसी के काम जो आए–उसे इंसान कहते हैं, पराया दर्द अपनाए–उसे इंसान कहते हैं।'' ....

उन्होंने अपनी शीतल छाया से समाज को शीतलता प्रदान करते हुए अपने मुखारविंद से

सद्उपदेशमयी–हृदय स्पर्शी वाणी की अमृत वर्षा द्वारा उच्चकोटि के विद्वान से लेकर साधारण मनुष्य तक को एक साथ समान रूप से मुग्ध कर दिया है।

परम् पूज्य गुरुदेव स्वामी बाबा जुगत राम साहिब एवं उनके श्री हरिः शरणम् के पावनतम उपदेश, अखण्ड साधना–त्याग तथा ऊँचे आदर्शों के प्रति संतश्री की अटूट श्रद्धा भी उल्लेखनीय हैं

सर्वधर्म समभाव धारी संतश्री के कल्याणकारी जीवन के संदर्भ में अब तो जितना कहा जाए, सूर्य को दीपक दिखाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। अनगिनत यशस्वी कृत्य, परोपकार, दहेज आदि कुप्रथाओं–पाखंडों के उन्मूलन के भगीरथ प्रयास एवं अवर्णनीय योगदान से समस्त सभ्य समाज प्रभावित एवं ऋणी है।

त्रिलोकी के अधिनायक परम् पिता परमात्मा, माँ भगवती गंगा, सखी बाबा आसूदाराम साहिब एवं श्री सद्गुरुदेव भगवान के पावन चरण कमलों में रजत जयंती के मांगलिक अवसर के उल्लासपूर्ण क्षणों में यही हार्दिक कामना करता हूँ–समारोह निर्विघ्न तथा सफलता पूर्वक सम्पन्न हो, धर्म ध्वजा फहराती रहे, भक्तगण शुद्धआहार–शुद्धविचार–शुद्धविहार की त्रिवेणी में स्नान करते रहें, समाज का पथ–प्रदर्शन होता रहे, प्रभु–मिलन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु 'मेले' लगते रहें। इस सद्गृहस्थ महान संत परिवार की कृपा दृष्टि पाकर सर्व संगत का जीवन धन्य होता रहे।

''यह गुलाब का फूल है, खुश्बू लिया करें।
सदा महकता रहे, यह दुआ किया करें।।''

वर्तमान समय की कठिन परिस्थिति में ऐसे दुर्लभ संतश्री एवं महान विभूति की दीर्घायु एवं सुस्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

अपनी लेखनी को विश्राम देते हुए, मैं ऐसे संत के सम्मान में अभिनन्दन ग्रंथ की माला के एक अकिंचन पुष्प के माध्यम से कोटिशः पुष्पांजलि अर्पित कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ।

❒ **डा0 स्वामी गंगादास उदासीन, हरिद्वार**

संत चाण्डूराम के तीन लाल अजीत, मोहन, हरीशलाल

मनोकामनाएं पूरी करने वाले 'रहड़की' स्थान के सन्त वसणशाह की वर्सी के अवसर पर सिंध में सन्त सतरामदास साहिब ने पूज्य साई अमरदास साहिब को तीन श्लोक कहलवाए और तीन पुत्र रत्नों की प्राप्ति का आशीर्वाद प्रदान करके गजब के आत्म विश्वास पूर्वक कहा कि अगले वर्ष पुत्र की छठी के अवसर पर आकर मालपुआ और खीर खायेगें।

वचन सत्य हुआ और अगले वर्ष साई अमरदास को 'चेतनराम' पुत्र प्राप्त हुआ। यह था सन्त का

साई अजीत लाल

सत्य वचन किन्तु पत्नी का देहान्त हो गया। सन्त वचन असत्य नहीं हो सकते परिस्थितियां समर्थक हुयीं दूसरा विवाह हुआ 'गोपाराम' उत्पन्न हुए। दूसरी पत्नी भी स्वर्ग सिधारी तो तीसरे विवाह का योग बना और तीसरे पुत्र 'सुखरामदास' पैदा हुए।

इससे मिलती–जुलती घटना सन्त चाण्डूराम साहिब के साथ हुयी। सन् 1980 लखनऊ में बाबा आसूदाराम की 19वीं वर्सी अवसर पर साईं पेशूराम ने सन्त चाण्डूराम साहिब के पुत्र रत्न हेतु

(पल्लव डाला) प्रार्थना की जिसमें साथ दिया रायपुर के साईं गोविन्दराम, पाकोड़ के साईं गोविन्दराम, कोलकाता के साईं आनन्दराम, कानपुर से परमानंद पंजवाणी के अलावा साईं गेलाराम, साईं आत्माराम, स्वामी ईश्वरानंद ब्रहमचारी एवं भाई ढ़ीपाराम सहित 13 संतों ने उपस्थित सन्तों में साईं आत्मा राम ने घोषणा की कि सभी सन्त अलग–अलग दावत करेंगे अर्थात वचनों में पूर्ण आत्म विश्वास प्रदर्शित हो रहा था। साईं पेशूराम ने इसे संशोधित कराया कि सभी सन्त मिलकर भोज करेंगे अन्यथा लगेगा कि सन्तों में संगठन नहीं है।

ज्ञातव्य हो कि सन्त चाण्डूराम को साईं अजीत लाल के रूप में जनवरी 1968 में ईश्वर कृपा से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ था किन्तु अस्वस्थता के कारण सितम्बर 1970 दो वर्ष 9 माह की अल्पायु में प्रभु ने वापस बुला लिया।

सन्त वचन सत्य हुए। 25 जुलाई 1981 को साईं मोहनलाल के रूप में पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। इसके पूर्व सन्त को ईश्वर ने 9 देवियां प्रदान की थी। 30 जुलाई छठी के दिन लखनऊ के सन्त रामदास ने एक भजन बनाकर अपनी कल्याणी वाणी प्रस्तुत की।

संत कृपा का फल हैं साईं मोहनलाल

सन् 1981, सितम्बर माह की अनन्त चर्तुदशी बाबा आसूदाराम की वर्सी की रात सन्त के मामा श्री गमनदास चन्दनानी (रायबरेली) ने छठी का भोज किया। अगले दिन मध्यान्ह में सन्तों की ओर से सामूहिक रूप से दिव्य दावत हुयी और रात्रि में आश्रम की ओर से भोज किया गया। अनेक अनुयाइयों ने भी अपनी श्रद्धा से व्यंजन परोसे किन्तु भाई दीपचन्द के 700 गुलाब जामुन आज भी लोगों को स्मरण हैं। इन दावतों में कानपुर से दादा परमानंद, श्री देवीदास आर्य, भाई दीपाराम–रायपुर तथा भाई आवरराम मऊ की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

1982 में प्रभू कृपा से सन्त जी को हरीशलाल के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी। उन्हें तीन दिन बाद ही पोलियो हो गया किन्तु 9 दिन बाद इसका पता चल पाया और तब तक पीलिया साईं हरीश लाल के मस्तिष्क को प्रभावित कर चुका था किन्तु ईश्वर ने प्राण रक्षा कर दी। जिस प्रभु ने प्राण बचाए उसी ने इस बालक को संतत्व प्रदान किया। आज साईं हरीशलाल के संत स्वभाव, दिव्य दृष्टि के समक्ष सभी नतमस्तक रहते हैं।

❐ झाप्रटे 'सरल'

सिन्धी युवा हृदय सम्राट साईं मोहनलाल

साईं मोहनलाल सन्त चाण्डूराम साहिब के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं। आपका हंसमुख स्वभाव बरबस ही सबको आकर्षित कर लेता है। उदारमना सन्त आसूदाराम के पौत्र होने का सौभाग्य भी है आपको। 25 जुलाई 1981 को साईं मोहनलाल का जन्म सन्तों की कृपा से प्रातः 11 बजकर 10 मिनट पर हुआ।

दादा सन्त, पिता सन्त, सन्तों के आर्शीवाद स्वरूप सन्त स्थान पर जन्म होने का पूर्ण प्रभाव आप पर पड़ा और आभा मण्डल निखर उठा। व्यक्तित्व चुम्बकीय बन गया। परिणाम स्वरूप मित्र मण्डली बढ़ती रही। जिस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान के इर्द–गिर्द बाल–गोपाल फिरा करते उसी प्रकार मोहन की मोहिनी सूरत और सीरत के दीवाने आधुनिक ग्वाल उनकी खुशी में अपनी खुशी एवं सानिध्य में अभिभूत रहते।

आपकी गम्भीरता, शालीनता, मर्यादा, संगठन क्षमता, नेतृत्व के गुण व प्रत्युत्पन्नमति से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। किशोरावस्था आते–आते आपकी बौद्धिक परिपक्वता दृष्टिगोचर होने लगी। सन्त पिता श्री ने आश्रम की गतिविधियों में व्यावहारिक रूप से भी परिपक्व होने के लिए अवसर प्रदान किये। ज्यों–ज्यों परिपक्वता बढ़ती जा रही है आभा मण्डल निखरता जा रहा है। जिसकी परिधि में आने वाले युवा स्वयं प्रेरणा से धूम्रपान, शराब, क्रोध, मांस इत्यादि का न केवल त्याग करते जा रहे हैं अपितु

उनमें 'सेवा' भाव बढ़ता जा रहा है।

अधिक से अधिक युवा उनका सानिध्य पाकर गौरवान्वित अनुभव करते हैं। वे आपके प्रभाव से सत्संग में आते, आश्रम की सेवा में हाथ बँटाते हैं। इससे उनका विवेक जागृत होने लगा। युवाओं में आए इस परिवर्तन को मूर्तरूप मिला सन् 1999 में 'सखी बाबा युवा मण्डल' के गठन के साथ। सन्त पिता ने एक अवसर पर संगत के मध्य कहा कि "मोहन बचपन से ही साईं कंवर राम साहिब की आरती बड़े प्रेम से गाते थे। सात–आठ वर्ष की अवस्था से ही वे उनकी क्रियाओं का अनुसरण किया करते थे।" साईं मोहनलाल की 9 वर्ष की वय में सन्त पिता ने संगत के समय कहा था कि 'यह मेरा ही प्रतिरूप है।"

साईं मोहनलाल ने सहज ही स्वीकार किया कि उनके पिता ने उनसे कभी कुछ नहीं कहा, किसी भी बात के लिए आग्रह नहीं किया। हाँ एक बार साईं मोहन की माँ ने उनके सन्त पिता से अवश्य कहा कि "मोहन को 'गुरुमुखी' पढ़ने के लिए कहें" इस पर सन्त श्री ने अपनी धर्मपत्नी से कहा था कि "आज तो कहा। फिर कभी नहीं कहना, स्वयं ही वह सब कुछ सीख जायेगा।"

आज की आधुनिक शिक्षा पद्धति में दण्ड से शिक्षा नहीं अपितु खेल–खेल में शिक्षा दी जा रही है किन्तु इस पद्धति को अधिक पढ़े–लिखे न होने के बावजूद बाबा आसूदाराम ने पुत्र चाण्डूराम के लिए स्वयं ही सीख लेगा, छोड़ दिया था। कदाचित उन्हें ज्ञान था कि प्रकृति और सामाजिक वातावरण सबसे बड़े शिक्षा केन्द्र हैं। उसी प्रकार सन्त चाण्डूराम साहिब ने भी अपने सुपुत्र को प्रकृति और वातावरण से सीखने के लिए छोड़ दिया। सेवा में भी अग्रणी रहकर सन्त बाबा की मासिक पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बचपन में स्वेच्छया सफाई किया करते, जूते, चप्पल के स्टाल पर भी सेवा करते किन्तु 1999 से जब से सन्त पिता एकान्तवास में है तब से मासिक पुण्यतिथि उत्सव अवसर पर सारी रात सत्संग में अपलक अनुयाइयों के मध्य बैठकर गाम्भीर्य, धैर्य, दृढ़ता व एकाग्रचित्तता इत्यादि का प्रमाण दे रहे हैं। सन्त पिता के साथ अपने विशेष अनुभवों का स्मरण करते हुए बताते हैं कि कई बार "मुझे उनकी अन्तर्यामिता का अनुभव हुआ जिससे यह प्रेरणा मिली कि सन्त का कहना मानो अन्यथा वक्त तुम्हें बड़े प्यार से सिखा देगा। सन्त समय से पहले ही स्नेह से समझा देते हैं। दुःख भले ही आए परन्तु सन्त की बात मान लेने से कष्ट का अनुभव कम हो जाता है। सन्त की बात उसी समय मान लेनी चाहिए क्योंकि उसमें अनेक रहस्य छिपे रहते है।"

साईं मोहनलाल कहते हैं कि यूं तो हर बात के दो पहलू होते हैं किन्तु बाबा की बातों में उन्हें तीन पहलू नजर आते हैं। उन्होंने बताया कि बाबा (पिता श्री) जी की बड़ी दयालुता है कि वे कुछ भी थोपते नहीं हैं। बाबा जी करनी करके कथनी करते हैं।"

सन्त स्थान की गरिमा में अभिवृद्धि करते हुए साईं मोहनलाल ने युवा होने पर सत्य सनातन परम्परा को स्वीकारते हुए संसार चक्र को चलायमान करने के लिए ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप गंगा पुत्री तृप्ति के साथ 22 फरवरी 2004 को पवित्र संस्कार को अंगीकार कर विवाह रूपी संस्था की सदस्यता ग्रहण कर ली।

❒ झाप्रटे 'सरल'

शहजादा साईं मोहनलाल के-
आदर्श विवाह की अनूठी मिसाल

सन्त चाण्डूराम साहिब आदर्श सामाजिक जीवन जीने के लिए न केवल प्रवचन करते हैं, उपदेश देते हैं, अपितु अवसर आने पर स्वयं साक्षात् आदर्श का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि "जब तक स्वयं में परिवर्तन नहीं आयेगा तब तक उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

22 फरवरी, 2004 को अपने सुपुत्र साईं मोहनलाल के विवाह अवसर पर 'आदर्श विवाह' के सम्पूर्ण प्रमाण प्रस्तुत कर समाज के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। सगाई के समय ही दहेज रहित विवाह के संकेत मिल गये थे जब 'सगाई' की पुष्टि स्वरूप मात्र रस्म अदायगी के लिए एक केसरिया रंग के टॉवेल में गंगा स्नान से युक्त एक श्रीफल ही कन्या पक्ष की ओर से स्वीकार किया गया।

विवाह वेदिका पर वधू रूप में पहने वस्त्रों में ही बहू को स्वीकार किया। गृहलक्ष्मी के श्रृंगार के लिए आभूषण सुसराल पक्ष से ही पहनाए गये। एक भी गहना बहू के मायके का स्वीकार नहीं किया गया। विवाह के दूसरे ही दिन ससुराल में वस्त्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर, अपनी पंसद के वस्त्र मायके से ही तैयार करवाकर लेती आए, यह धन भी सन्त श्वसुर ने भेजकर आदर्श वादिता का चरम उदाहरण प्रस्तुत किया।

सिन्धी परम्परा में मुकुट बन्धन के समय वर को उसकी बहनें व बहनोई अंगवस्त्र भेंट करते हैं; उसके लिए भी मना कर दिया गया। बारात को हरिद्वार न ले जाकर कन्या पक्ष वालों को यहीं लखनऊ में आमन्त्रित किया गया। इतना ही नहीं उनके स्वागत, भोजन, आवास आदि की सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएं वर पक्ष की ओर से करके आदर्श परिस्थिति प्रकट की गयी। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल मा0 विष्णुकान्त शास्त्री ने वर–वधू को आर्शीवाद प्रदान करते हुए कहा कि 'यह विवाह अपने आप में अनूठा है। सन्त चाण्डूराम साहिब ने अपने पुत्र का विवाह दहेज रहित करके समाज को दिशा प्रदान की है। गृहस्थ जीवन सबसे बड़ी तपस्या है, गृहस्थ रहकर सन्त जीवन का निर्वाह आज के युग में सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

विवाह के साक्षी स्वरूप पहुँचे हजारों अनुयाइयों ने स्वेच्छया उपहार लेकर आए किन्तु किसी से भी 'भेंट' स्वीकार नहीं की गयी। निमन्त्रण पत्र में तो पहले से ही स्पष्ट कर दिया गया था कृपया किसी प्रकार की भेंट/गिफ्ट आदि न लाएं। बावजूद इसके 'भेंट' लेकर आए अनुयाइयों को वापस ले ही जानी पड़ी।

विद्वान व चिन्तक श्री जगदीश गाँधी ने इस विवाह की प्रंशसा करते हुए कहा कि, "जिस विवाह में दहेज व आडम्बर का प्रयोग नहीं होता वह विवाह एक पवित्र अनुष्ठान होता है; ऐसे विवाह में सम्मिलित होकर मैं अपने को भाग्यशाली मान रहा हूँ।" रहड़की सदगुरु दरबार सिन्ध से आकर हजूरी रूप पूज्य सन्त साईं साधराम साहिब ने आर्शीवाद स्वरूप कहा कि, "हमें सुखद गृहस्थ जीवन जीवन के लिए अपने कर्त्तव्य का बोध होना चाहिए, इसके लिए घर परिवार में प्रेम व सौहार्द बनाए रखना जरूरी है।' उन्होंने पति–पत्नी, सास–बहू, के मध्य सम्बन्धों की व्याख्या भी सविस्तार की। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी लखनऊ में उपस्थित होते हुए जब सुरक्षा कारणों से विवाह समारोह में न पहुँच सके तो उन्होंने अपना आर्शीवाद संदेश प्रेषित किया।

यह विवाह सन्त घरानों के इतिहास में एक नई कड़ी के रूप में जुड़ गया है। इस विवाह के साक्षी बने समाधा आश्रम–शिकारपुर सिंध के स्वामी शिव भजन महाराज, रायपुर –शदाणी दरबार के सन्त साईं युधिष्ठिर लाल साहिब, प्रेम प्रकाश मण्डल–अमरापुर स्थान –जयपुर के स्वामी भगत प्रकाश के प्रतिनिधि, इन्दौर से अखिल भारतीय सिन्धी साधू समाज के महामन्त्री साईं सन्तोषदास, अमरापरी से सन्त कँवरराम के पौत्र साईं जशनलाल, डबरा से बीरबलदास आस्थान के साईं श्रीचन्दलाल., फैजाबाद,

से साईं जगतराम दरबार के साईं वासदेवलाल के पुत्र, हरिद्वार से महामण्डलेश्वर डा0 श्यामसुन्दर शास्त्री, स्वामी विवेकानन्द, वृन्दावन से डा0 शिशुपाल शर्मा, कोलकाता से सन्त कँवरराम की पुत्री व दामाद श्री गोपीचंद निहलानी, साईं साधराम साहिब के बहनोई श्री रामचन्द्र आदि।

साईं मोहनलाल को पुरुषोत्तम भाव से सज्जित किया गया। भारतीय परिवेश धोती, कुर्त्ता, कमर में दुपट्टा और सिन्धी परम्परा स्वरूप कटार। रहड़की सदगुरु दरबार से लाए गये मुकुट को पिता बने पूज्य साईं साधराम ने तत्कालीन महामहिम राज्यपाल उ0प्र0 मा0 विष्णुकान्त शास्त्री को सौंपा; उन्होंने वर के सिर पर रखा और सेहराबन्दी की रस्म पूरी हुयी। इस वेश में साईं मोहनलाल साक्षात् मोहन स्वरूप नज़र आ रहे थे। बस कमी थी एक वंशी की। नव दुर्गा स्वरूप नौ भगिनियों के आर्शीवाद एवं नवरत्न स्वरूप बहनोइयों की छत्रछाया में वर को सात धर्म स्थलों पर से माथा नवाकर देवी, देवताओं के आशीष दिलवाकर आलमबाग चौराहे पर ले आया गया जहाँ पर वर ने अमर शहीद सन्त कँवरराम की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और गायत्री मंत्रो व सदउपदेशों के स्वर सानिध्य में वर यात्रा वधू को ब्याहने के लिए शिव शान्ति आश्रम स्थित जनवासे की ओर बढ़ चली। उल्लेखनीय है वर यात्रा में केवल पुरूष वर्ग ही सम्मिलित था। मार्ग में श्रद्धालुओं, अनुयाइयों ने स्वेच्छया स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार सज्जित किये, मिष्ठान, मेवे और शर्बत आदि सहर्ष वितरित किये।

सखी बाबा आसूदाराम के जयकारों के मध्य स्वयमेव पहुँचे सिंधी शहनाई वादकों के ढोलों की थाप, शहनाई की धुन पर सिंध से आए एक रंग, एक देश, एक वेश, एक भूषा, एक भाषा के साथ 'छेज' (सिंधी लोक नृत्य) करती टोलियाँ अदभुत दृश्य उत्पन्न कर रहीं थी।

जब बारात जनवासे पहुँची तो पलक पावड़े बिछाए प्रतीक्षारत कन्या पक्ष वाले तथा हरिद्वार से स्वामी जुगत आश्रम के अनुयायी व श्रद्धालू उनकी अगवानी को आये। सेवा, मानव कल्याण, आध्यात्मिक उत्कर्ष व ईश्वर भक्ति में लीन दो आश्रमों का यह मिलन सिन्धु संस्कृति के अनुरुप एक यज्ञ स्वरूप प्रतीत हो रहा था।

शहजादा साईं मोहनलाल के आगमन की सूचना पाकर आश्रम के एक कक्ष में दुलहन रूप में मायके की औरतों के मध्य बैठी गंगापुत्री तृप्ति के अन्तर्मन में उमंग, उल्लास के सुखद सपने उसी प्रकार तैर रहे थे जैसे प्रभु श्रीरामचन्द्र जी की बारात के विदेहराज जनक के द्वार मिथिला पहुँचने पर जगत जननी माँ सीता के हृदय में उत्पन्न हुए थे। प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुयी वर पक्ष की ओर से पूज्य साईं साधराम साहिब एवं सन्त चाण्डूराम अपने पक्ष के अन्य सन्तों के साथ तथा कन्या पक्ष की ओर से डा0 स्वामी गंगादास उदासीन एवं महामण्डलेश्वर डा0 श्यामसुन्दर शास्त्री अपने पक्ष के अन्य सन्तों के साथ आकर एक दूसरे को माल्यार्पण कर 'मिलनी' रस्म को पूरा किया। इस दृश्य ने सभी को आत्मविभोर कर दिया। कुछ एक के नयन भावातिरेक से सजल हो गये। जिनकी आँखों में खुशी के आंसू थे वे टकटकी लगाकर अर्श की ओर यूं निहार रहे थे मानों उन्हें वह दृश्य परिलक्षित हो रहा था जिसमें आकाश से ब्रहमलीन उदारमना आसूदाराम साहिब व ब्रहमलीन स्वामी जुगतराम साहिब भी दो पवित्र आश्रमों के इस पवित्र मिलन पर आर्शीवाद प्रदान कर रहे हों। मिलनी के पश्चात् विवाह के अन्य धार्मिक संस्कार भी भारतीय संस्कृति के अनुरुप पूर्ण आदर्श एवं मर्यादापूर्वक सम्पन्न हुए। बहुचर्चित जूता चुराने जैसी ओछी प्रथा को वर्जित रखा गया। 'पन्ने दरबार' सिंध से संस्कारित होकर आए मुकुट को पहनकर साईं मोहनलाल 'वेदी' पर बैठे और सप्तपदी

पूरी की। साईं मोहनलाल व तृप्ति का परिणय अर्थात् गंगा–गोमती का मिलन हुआ। कानुपर से पधारे पं0 देवीदास तोलाराम शर्मा व पंडित राजेश शर्मा ने विवाह संस्कार पूर्ण कराया। सन्तों के पूर्ण सानिध्य में हुए इस विवाह समारोह में घरातियों, बरातियों और अतिथियों का मनोरंजन विवाह गीतों से सारी रात दुबई से आए ईश्वर आडवाणी एवं सिंध से पधारे भगत लखमी एवं साथियों ने किया। विवाह समारोह के आमन्त्रण पर पहुँचे श्रद्धालुओं, अनुयाइयों, गणमान्य व्यक्तियों के लिए प्रातः काल से जलपान परोसना प्रारम्भ हुआ तो दोपहर तक चलता ही रहा तब तक सबसे पहले जलपान कर चुके लोगों के लिए भोजन का समय हो गया, दोपहर भोज रात्रि तक चलता रहा तब तक पहली पंगत में दोपहर का भोजन कर चुके लोगों को रात्रि भोज के व्य०जन परोसे गये। समारोह की सब प्रकार की चुस्त–दुरुस्त एवं सफल व्यवस्था आश्रम सचिव भइया किशन लाल के मार्ग दर्शन में संचालित होती रही।

विदा के वक्त कन्या के पिता डा0 गंगादास महाराज ने वर–वधू को अपनी मधुर वाणी में भजन, गीत गाकर न केवल आर्शीवाद दिया अपितु अपनी विद्वता से वशीभूत कर दिया।

❒ **विशन कुमार रूपानी झाप्रटे 'सरल',**

साईं हरीश लाल : एक महान संत

संत आसूदाराम साहिब के सुपौत्र तथा साईं चाण्डूराम जी के छोटे सुपुत्र साईं हरीश लाल जी का जन्म 22 सितम्बर 1982 को लखनऊ में हुआ। इनके ज्येष्ठ भ्राता साईं मोहनलाल जी के जन्म के समय इनके संत पिताश्री ने कहा कि मेरा दूसरा पुत्र 'फकीर' आयेगा। हुआ भी ऐसा ही। साईं हरीशलाल जी के लक्षण गुरुनानक देव जी के फकीर स्वभाव की भाँति ही वैराग्यवृत्ति से भरे हुए हैं। प्रथम तो उन्होंने अपनी वाणी को ही मानो संयम की डोर से बाँध रखा है। वे बचपन से ही शांत, सरल तथा अति मृदुल स्वभाव के हैं। उनके मुखमण्डल पर सदैव एक अलौकिक शक्ति का दर्शन होता रहता है। उनके सम्मुख होते ही उनके चरण स्पर्श करने को बरबस ही

लोग झुक जाते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि एक अलौकिक शक्ति उनकी ओर आकर्षित कर रही है। वे सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। कभी रोष नहीं, कभी क्रोध नहीं।

9 वर्ष की अवस्था से ही उनकी अंतर्यामिता के अनुभव उनके सानिध्य में आने वालों को हुए हैं। एक बार श्री राजकुमार आनन्दानी दिल्ली वालों से उन्होनें खाने के लिये कोई चीज मंगाई न जाने कैसे उनके मुख से ये निकल पड़ा कि साईं नमक की कीमत चुकायेंगे। इस पर साईं हरीशलाल जी बड़ी देर तक रोते ही रहे। श्री राजकुमार ने हृदय से क्षमा माँगी, उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ कि कैसे उन्होंने ये कह दिया। बड़ी देर मनाने के बाद उन्होंने खाया। उसी दिन वे ट्रेन से दिल्ली से वापस लखनऊ लौट पड़े तथा सारी रात वे नहीं सोये।

राजकुमार भी रातभर उनके साथ ही जागते रहे। वे संत तो हैं ही, सांसारिक दृष्टि से देखने पर भी इतनी सुकुमार अवस्था में उनकी ऐसी प्रतिक्रिया उनकी अति परिपक्व बौद्धिकता की परिचायक है। वे तो मानो बिना कहे ही न जाने कितना दे रहे थे और न जाने कितना देना चाहते थे किन्तु राजकुमार ने मानो उनको उतना न देने दिया जितना वे देना चाहते थे। उस घटना के बाद से राजकुमार की दिनों दिन बढ़ती सम्पन्नता, समृद्धि तथा सुकीर्ति मानो उनके आदर्श सेवक होने की प्रेरणादायक मिसाल बन गयी है। लोग कहते हैं कि राजकुमार ने ही साईं हरीशलाल जी को संत रूप में पहचाना। राजकुमार स्वयं कहते हैं कि फकीर साईं स्वयं मालिक हैं।

साईं हरीशलाल जी की करूणा कृपा के दर्शन अनेक लोगों ने चमत्कार के रूप में किये हैं। सन् 1996 में ज्योतिस्नान महोत्सव पर आश्रम के मोदी ज्ञानचन्द का स्वास्थ्य अचानक बहुत बिगड़ गया। वे कहते, न सेवा कर पा रहा हूँ न बैठ ही पा रहा हूँ। वे लेटे हुए थे कि अचानक साईं हरीशलाल जी आये और बाल स्वभाववत् उनको लात मार दी। वे तो तुरन्त ही स्वस्थ हो गये उनकी बीमारी काफूर हो गयी।

रायबरेली निवासी फोटोग्राफर सुंदर एक बार बम्बई में थे कि उनकी कमर एक जगह स्थिर हो गयी। वे न झुक पा रहे थे न चल पा रहे थे। बम्बई में इलाज करवाया, लखनऊ इलाज करवाया, रायबरेली इलाज करवाया। लाभ नहीं हुआ। तबियत यूँ ही बनी रही। एक दिन वे शिव शान्ति आश्रम में कुटिया साहिब के सामने वाले हॉल में लेटे हुए थे कि साईं हरीश लाल जी आये और उनकी कमर को ऐसे दबाया कि वो तुरन्त ही उठकर खड़े हो गये पूर्णतः स्वस्थ।

राजकुमार से उन्हें विशेष प्रेम हो गया है। एक बार राजकुमार से फोन पर बात करने के लिये वे श्री रेलूमल की लखनऊ स्थित दुकान पर गये। उन्होंने टेलीफोन पर नम्बर मिलाया तथा राजकुमार से दिल्ली बात की श्री रेलूमल से भी कहा कि वे भी राजकुमार से बात करें। उन्होंने भी बात की। आश्चर्य यह कि उनके टेलीफोन में एस.टी.डी. सुविधा थी ही नहीं।

राजकुमार के पास एक ही स्कूटर थी। उन्होंने साईं हरीशलाल जी से विनती की कि आपकी दया से इतने पैसे कमा लें कि एक स्कूटर और खरीद लें। साईं हरीशलाल जी ने कहा कि तिजोरी खोलो। तिजोरी खोली तो देखा कि जितने की स्कूटर खरीदनी थी उतने पैसे पड़े हुए हैं। उनके आशीर्वाद से कई लोगों को बेटे हुए, रोग दूर हुए, दुःख दूर हुए।

वे मानों परखते रहते हैं कि दुनिया क्या चल रही है। सबको उन्होंने खुश रखा है। छोटे–छोटे बच्चों को अपनी ओर से खुश करना उनका स्वभाव है। वे बचपन से ही निर्भय हैं। उनके लिये डर नाम की कोई चीज ही नहीं है। वास्तव में वे एक महान संत हैं।

❐ **अतुल, अनुपम दीक्षित**

।। हम सुधरेंगें जग सुधरेगा ।।

बहुमुखी व्यक्तितत्व की धनी : हर्षा

इस छोटी सी बहुमुखी व्यक्तित्व की धनी हर्षा उम्र में ही हर्षा बौद्धिक परिपक्वता स्वरूप अनुभवी सज्जनों का भी मार्गदर्शन करती है। किस प्रकार छोटे बच्चों को प्रसन्न रखा जाये, किस प्रकार अतिथि–सत्कार किया जाये, किस प्रकार 'हर्षा बालिका मण्डल' की बालिकाओं का मार्गदर्शन किया जाये; सभी के साथ उनकी व्यवहार –कुशलता देखते ही बनती है एक कुशल प्रशासक के गुण उनमें स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। वे छोटे बच्चों को गुरुमुखी पढ़ाने के लिये अध्यापक की भूमिका में आ जाती है तो कभी सखी बाबा जी की महिमा में भजन गाते हुए सबको मंत्रमुग्ध कर देती हैं। तीव्र स्मरण शक्ति की धनी 'महारानी हर्षा माता' को सखी बाबा जी की महिमा में अनेक पद याद हैं। वे सखी बाबा जी की महिमा में गाये भजनों को धर्मग्रन्थ से ज्यादा मानती हैं उनकी हाजिर जवाबी का तो कोई जवाब ही नहीं। वे सबसे घुल मिलकर रहते हुए भी सबसे न्यारी है। किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थिति में उनको लेशमात्र भी आसक्ति नहीं है। उनकी अंतर्यामिता सबको नतमस्तक कर देती है। वे वक्त से पहले ही भविष्य की घटनाओं को जान लेती हैं। इतनी विशेषताओं के होते हुए भी वे सहज बाल स्वभाव से ही रहती हैं।

हर्षा बालिका मण्डल

प्राचीनकाल में नारी के महत्व को अंगीकार किया गया था। तत्समय नारी का सर्वांगीण विकास हुआ था। नारी ही परिवार की अगुआ व निर्णायक थी। सिंधी नारी सावित्री ने काल के गाल से पति को छीनकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जिसे आज तक कोई नारी भंग नहीं कर पायी है। सीता, गार्गी, कैकेयी जैसी विदुषियों, लक्ष्मीबाई, लाडलीबाई आदि वीरांगनाओं ने इस देष की भूमि को अंलकष्त किया। अर्वाचीन काल में इसी कारण यहाँ का आदर्ष था 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' समय परिवर्तित हुआ। कुप्रथाएं फैली, नारी का महत्व घटना आरम्भ हुआ। नारी को स्वयं इसका मान न हुआ स्थिति यहाँ तक बन गयी कि पति की मनस्तष्प्ति करने, उसकी उचित–अनुचित प्रत्येक इच्छा के समक्ष नतमस्तक होने के लिए ही मानों उसकी सर्षष्टि हुयी हो। तब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कह उठे –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

बीसवीं शताब्दी में राजाराम मोहनराय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी के प्रयासों से स्थिति में सुधार आया। धारणा बलवती हुयी बिना नारी के विकास के यह समाज अधूरा है

सन्त चाण्डूराम साहिब ने कहा कि पत्नी–पति की अर्धांगिनी है जैसे वैसे ही नारी समाज का अर्द्धांग है। आधे अंग के अस्वस्थ तथा अविकसित रहने पर पूरा अंग ही रोगी और अविकसित रहता है। यदि मनुष्य शिव है तो नारी शक्ति है, यदि पुरुष विश्वासी है तो नारी श्रद्धामयी है, यदि पुरुष पौरुषमय है तो नारी लक्ष्मी है। वह पुत्र के रूप में पोषणीय, पत्नी के रूप में अभिरणीय तथा माता के रुप में वह पूज्यनीय है। नारी के कल्याण और विकास की कामना करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

जब नारी का सम्मान बढ़ेगा।
भारत का कल्याण तभी है।।

उपर्युक्त विचारों को समेट कर नातिन हर्षा के नाम पर सन् 2000 में हर्षा बालिका मण्डल का गठन सन्त चाण्डूराम जी की प्रेरणा से हुआ। 'हर्षा' अब महारानी शक्ति स्वरूपा हर्षा के रूप में सभी को हर्ष प्रदान कर रही हैं। इस मण्डल का उद्देश्य है" बालिकाओं में सुसंस्कारों का सिंचन, सेवा भाव का विकास तथा सनातन संस्कृति के प्रति आस्था।"

वर्तमान में हिन्द–सिन्ध के 17 स्थानों – **लखनऊ, रायबरेली, गोण्डा, फैजाबाद, इलाहाबाद, सीतापुर, कानपुर, उरई, मोठ, समथर, चिरगाँव, दतिया, रीवा, दिल्ली, होशंगाबाद, दुर्ग एवं पन्नो आकिल (सिंध) पर यह मण्डल है।** भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं अभिवृद्धि हेतु सतत् प्रयत्नशील है। इस मण्डल की सदस्यों के लिए कतिपय नियम निर्धारित किये गये हैं। यथा – नाखून न बढ़ाना, केश न कटवाना, पश्चिमी संस्कृति के पोषक वस्त्रों को न पहनना, मांसाहार न करना, आश्रम में साप्ताहिक आगमन, सत्संग श्रवण, प्रत्येक शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी को भण्डारे की सेवा, सादगीपूर्ण जीवन। एक बार हर्षा ने अपनी बाल सुलभता से कह दिया कि वह तो सखी बाबा की माँ है। तत्समय तो होनी हो गयी परन्तु सन्त चाण्डूराम साहिब ने इसे गम्भीरता से लिया और उसी दिन से उसे माता के भाव रूप में मान लिया। अब सन्त चाण्डूराम साहिब हर्षा को न केवल माता मानते हैं अपितु व्यवहार में उनके सार्वजनिक रूप से चरण स्पर्श कर पूर्ण सम्मान प्रदान करते हैं। सन्त जी कहते है कि "हर्षा माता के अंर्तमन में होता है वही बाहर व्यकितत्व में आता है। वह जो कहना है, कह लेती है; जो करना है, कर लेती है; जो मनाना है, मना लेती है।"

स्वभाव परिवर्तन : मण्डल में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं के स्वभाव में परिवर्तन हुआ है यथा सरलता, मृदुलता, अनुशासन, सेवाभाव, ईर्ष्या–द्वेष से विमुखता हुयी है।

व्यवहार में परिवर्तन : मण्डल में शामिल होने के फलस्वरूप उनमें प्रेमपूर्ण मधुर व्यवहार, परस्पर समन्वय सहयोग की भावना का विकास हुआ है। न केवल बालिकाओं अपितु उनके अभिभावकों, परिवार के अन्य सदस्यों तथा सहेलियों पर भी इसका व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

❒ सविता तुलस्यानी, प्रियंका लालवानी "पिंकी"

संत बाबा आसूदाराम सेवा समिति

"परमार्थ सेवा ही ईश्वर प्राप्ति का साधन है।" संत कंवरराम का यह ध्येय था। सन्त बाबा आसूदाराम की कृपा से सन्त चाण्डूराम साहिब ने पुनः इसका स्मरण कराया ही नहीं अपितु व्यवहार में लाने के लिए प्रेरणा प्रदान की। गरीबों, अनाथों, असहायों अपंगों एवं अबलाओं की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहना आपका स्वभावगत वैशिष्ट्य है। फलस्वरूप अनेक जरूरतमंद लखनऊ के अतिरिक्त सुदूर नगरों से यहाँ आने लगे। उनमें अनेकों को आश्रम तक पहुँचने के लिए किराये के लिए भी अन्य का मुंह ताकना पड़ता; यह पीड़ा अत्यन्त ही हृदय विदारक रहती।

तब इस उदारमना सन्त ने मन ही मन उनकी सेवा की दिव्य योजना निर्धारित की और "सन्त बाबा आसूदाराम जन्म शताब्दी" अवसर पर 10 अप्रैल 1995 ई0 को 'संत बाबा आसूदाराम सेवा समिति' का गठन देश भर में जनकल्याण के सेवा कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए हुआ। 36 नगरों में समितियों का गठन स्वयं प्रेरणा से उसी दिन हो गया। फिर निकल पड़े देश के 101 नगरों में शताब्दी समारोह के सन्दर्भ में न केवल सत्संग करने अपितु सत्संग के माध्यम से समाज के सुप्त 'सेवा भाव' चेतना को जागृत करने के लिए। उन्होंने इस ओर इंगित किया कि किसी भी नगर का कोई भी जरूरत मंद दूसरे नगर में मांगने न जाय। यदि जाता है तो यह उन नगर वासियों के लिए चिन्ता और खेद का विषय है।

इस विवेक जागृति के फलस्वरूप अब तक **54 नगरों में 'संत बाबा आसूदाराम सेवा समिति' सक्रियतापूर्वक कार्यरत है।** प्रारम्भिक सेवा कार्य आश्रम सचिव भइया किशन लाल और कार्यालयीन कार्य श्री बी0 डी0 तुलस्याणी ने सम्भाला।

सेवा समितियों के लिए 5 कार्य निर्धारित किये गये 1. सत्संग का आयोजन करना 2. प्याऊ की स्थापना 3. अन्न सेवा करना 4. होमियो चिकित्सा केन्द्र की स्थापना 5. विविध सेवाएं।

1. सत्संग : नगर में किसी एक अथवा आबादी की दर से एक से अधिक पावन स्थलों पर प्रत्येक सोमवार को सुविधानुसार समय का चयन करके एक घण्टे का सत्संग आयोजित करना। प्रत्येक सहाय सोमवार को दो घण्टे का एकत्रीकरण करना जिसमें डेढ़ घण्टा सत्संग व आधा घण्टा समिति के कार्यों का अब तक का लेखा–जोखा एवं आगामी माह की गतिविधियों पर चिन्तन कर निर्णय लेना। सत्संग, आश्रम द्वारा निर्धारित रूप देखा में किया जाना।

2. प्याऊ : नगर की आवश्यकतानुसार अधिकाधिक प्यासों को पानी पिलाने के लिए प्याऊ स्थापित करना जिसका नाम करण 'सन्त बाबा आसूदाराम जलाश्रम' किया जाय।

3. अन्न सेवा : जरूरतमंद निर्धन एवं सफेद पोश (अपनी अस्मिता के संरक्षण स्वरूप आवश्यकता होने पर भी किसी के आगे हाथ न फैलाना) परिवारों को चिहिन्त करके बिना उनका नामोल्लेख प्रचार किये यथा सम्भव अन्न सेवा करना।

4. होमियो चिकित्सा : समाज को निरोगी करने के उद्देश्य से 'संत बाबा आसूदाराम धमार्थ–होम्योपैथिक चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना व संचालन करना।

5. विविध क्षेत्र : जरूरतमंद परिवारों में असाध्य रोगों

के निदान हेतु सेवा करना, सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करना, जरूरतमंद परिवारों की मासिक आर्थिक सेवा करना, नेत्र शिविर का आयोजन व सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार कार्यक्रमों का आयोजन करना इत्यादि। सेवा कार्य आरम्भ करने के लिए सर्वप्रथम उस नगर के 5 ऐसे व्यक्तियों को चयन करके नामित किया गया जो निम्न नियमों का पालन कर सके।

जूप (जुआ) मांस, मद, वेस्वा, हिंसा, चोरी, नारि।
सप्त लोक में सप्त हैं सप्त न हुए उदारि।।

जुआ, मांसाहार, नशा, वेश्यावृत्ति, हिंसा, चोरी तथा परस्त्री गमन। उपर्युक्त नियमों को पालन करने वालों को "पाँच प्यारे" कह कर सम्बोधित किया जाता है। सेवा कार्यों को सुचारू रूप से क्रियाशील करने के लिए इन पाँच प्यारों के अतिरिक्त अन्य सदस्यों को भी सहयोगी रूप में सम्मिलित किया गया है उन्हें पंच प्यारों में सम्मिलित किये जाने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है जब तक कि वे इन नियमों के पालन के लिए अपना अभ्यास न बना लें।

सेवा कार्य आरम्भ करने के लिए समितियों ने अपने-अपने नगरों से सहयोग प्राप्त कर अथवा सदस्यों के स्वयं प्रेरित सहयोग से उल्लिखित सेवा कार्य आरम्भ किये। आज 54 नगरों में कार्यरत समितियां इस प्रकार है।

क्र.सं.	प्रांत	नगर
1	महाराष्ट्र	1. अमरावती 2. जलगांव 3. नागपुर 4. उल्हासनगर 5. यवतमाल 6. भूसावल
2	छत्तीसगढ़	1. राजनांदगांव 2. दुर्ग 3. भिलाई 4. रायपुर 5. पॉवर हाऊस 6. धमतरी 7. बिलासपुर 8. भाटापारा 9. टिल्डा 10. रायगढ़
3	मध्यप्रदेश	1. सतना 2. सीधी 3. रीवा 4. कटनी 5. भोपाल 6. होशंगाबाद 7. इटारसी 8. इंदौर 9. देवास 10. डबरा 11. दतिया
4	बिहार	1. कटिहार 2. पूर्णिया 3. दरभंगा
5	उत्तरप्रदेश	1. मवइया (लखनऊ) 2. आलमबाग (लखनऊ) 3. एल.डी.ए. (लखनऊ) 4. गोण्डा 5. फैजाबाद 6. बहराईच 7. सीतापुर 8. वाराणसी 9. मेरठ 10. इलाहाबाद 11. प्रतापगढ़ 12. चिरगांव 13. रायबरेली 14. कानपुर 15. समथर 16. झांसी 17. उरई
6	गुजरात	1. पालीताना
7	बंगाल	1. कोलकाता
8	दिल्ली	1. दिल्ली
9	राजस्थान	1. अलवर 2. किशनगढ़ 3. तिजारा
10	झारखण्ड	1. पाकोड़

क्रमशः सेवा कार्य की बढ़ती गतिविधियों और क्षेत्रों को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 2000 फरवरी में **साईं मोहनलाल की अध्यक्षता तथा श्री सत्यानंद सावलाणी के महामंत्रित्व में समितियों को 14 परिक्षेत्रों में विभाजित किया गया।** प्रत्येक परिक्षेत्र के लिए एक प्रभारी अध्यक्ष नामित किये गये। जो इस प्रकार हैं –

क्र.सं.	नाम		स्थान	परिक्षेत्र
1	राजकुमार आनंदानी	–	दिल्ली	दिल्ली, अलवर, किशनगढ़, तिजारा,
2.	डा0 घनश्यामदास भवनानी	–	लखनऊ	आलमबाग, मवैया, एल.डी.ए., सीतापुर,
3.	डॉ0 अर्जुनदास डेम्ब्रा	–	रायगढ़	रायगढ़, बिलासपुर, भाटापारा, टिल्डा,
4.	सुदामचंद मोटलानी	–	राजनांदगांव	राजनांदगाव, दुर्ग, भिलाई, रायपुर, पावर हाऊस, धमतरी
5.	वालूराम पहिलाजानी	–	सीधी	सीधी, रीवा, सतना, कटनी
6.	विशनकुमार रूपानी	–	वाराणसी,	रायबरेली, प्रतापगढ़, इलाहाबाद,
7.	मेंघराजमल खत्री	–	फैजाबाद	फैजाबाद, बहराइच, गोण्डा

8.	लखीराम सावलानी	–	भोपाल	भोपाल, देवास, इंदौर, होशंगाबाद, इटारसी,
9.	सुनील कुमार कुकरेजा	–	कानपुर	कानपुर, उरई, मोठ, समथर
10.	सेवकराम रोहरा	–	डबरा	डबरा, दतिया, झाँसी, चिरगांव,,
11.	शंकरलाल जीवनमल	–	जलगांव	जलगांव, भूसावल, उल्हासनगर
12.	नारायणदास खुशवानी	–	कटिहार	कटिहार,, पूर्णिया, दरभंगा
13.	विजय कुमार शर्मा	–	कोलकाता	कोलकाता, पाकोड़, पालीताना
14.	गोपीदास पं० छत्ताणी	–	यवतमाल	यवतमाल, अमरावती, नागपुर

चूंकि 24–28 सितम्बर 2004 में आश्रम अपनी रजत जयन्ती उत्सव आयोजित कर रहा है। तत्क्रम में विचार हुआ कि सेवा समितियों को और अधिक सक्रिय करने के लिए सदस्यों व समितियों की संख्या बढ़ाई जाय। **इस परिप्रेक्ष्य में परिक्षेत्रीय अध्यक्षों के प्रमुख परिक्षेत्रीय अध्यक्ष के रूप में 15 फरवरी 2004 को गोपीदास छत्तानी – यवतमाल नामित किये गये।**

वर्ष 2003 में सम्पन्न सेवा कार्य : देश भर में 130 प्याऊ स्थापित, 850 परिवारों को अन्न की सेवा, 25 नगरों में धर्मार्थ चिकित्सा केन्द्रों के माध्यम से दो लाख चालीस हजार मरीजों को निःशुल्क उपचार की व्यवस्था हुयी, 35 नगरों में 95 जरूरतमंद परिवारों की कन्याओं के विवाह हेतु आर्थिक सेवा हुयी। इनके अतिरिक्त अनेक नगरों में नेत्र शिविर, वैद्यकीय शिविर, सामूहिक यज्ञोपवीत, बच्चों की शिक्षा सेवा, औषधोपचार के लिए सेवा व 55 परिवारों को मासिक आर्थिक सेवा की जाती है। आने वाले प्रत्येक जरूरतमंद की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यथा सम्भव सभी प्रकार की सेवा की जाती हैं।

विदेश में समितियां : मुख्य रूप से पाकिस्तान के सिंध प्रान्त के नगरों–पन्नोआकिल, घोटकी, मीरपुर, खानपुर, करमपुर व कन्धकोट आदि में इस प्रकार की सेवा समितियां सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। सभी कार्यों के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने में सखी बाबा की मंगलकामनाएं तथा पूज्य संतों की विशाल कृपा दृष्टि ही है।

❒ गोपीदास छत्तानी–यवतमाल

सेवा कार्य एक दृष्टि में

सेवा कार्य : सत्संग, प्याऊ, अन्नदान, चिकित्सा, विविध।

नियम : शाकाहार, जुंआ न खेलना, मद्यपान, धूम्रपान, तम्बाकू, मसाला आदि से परहेजगारी।

पर स्त्रीगमन से परे, हिंसा व चोरी से परे।

सेवा समितियां : महाराष्ट्र–6, छत्तीसगढ़–10, म०प्र०–11 उ०प्र०–17, गुजरात, बंगाल, झारखण्ड, दिल्ली में–1 राजस्थान, बिहार में–3

सम्पन्न सेवा 2003 : 130 प्याऊ, 850 परिवारों को अन्न सेवा, 2.40 लाख रोगियों को चिकित्सा, 95 कन्याओं का विवाह

आगरा में 31 जुलाई 1995 को सन्त बाबा आसूदाराम जलाश्रम का उद्घाटन करते हुए सांई जी

सन्त बाबा आसूदाराम आदर्श सिन्धी सामूहिक विवाह मण्डल

सन्त बाबा आसूदाराम की कृपा के फलस्वरूप सन्त चाण्डूराम साहिब सामाजिक कुरीतियों से पूर्णतः परिचित हैं। आप के हृदय में उन विसंगतियों को दूर करने की तड़प रहती है; उनमें से एक चिन्ता है 'दहेज के दानव का अन्त करना।'

उन्होंने कहा कि ''पिछले 57 वर्षों में विभिन्न झंझावातों को झेलते हुए सिन्धी समाज अब कहीं जाकर अपने पैरों पर खड़ा हो सका है किन्तु दहेज की कुरस्मों के शिकंजे में कसा है।''

आपने समाज को उदाहरण प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। परिणाम सामने आया 'सिन्धी समुदाय का दहेज रहित सामूहिक विवाह' सन्त जी न केवल प्रेरक को कार्य करते हैं अपितु साथ चलकर उत्साहवर्धन भी करते हैं। तत्क्रम में 16 अप्रैल सन् 1997 में 'सन्त बाबा आसूदाराम आदर्श सिन्धी सामूहिक विवाह मण्डल' का गठन सन्तजी के मार्गदर्शन में हुआ। श्री गोपीनाथ चन्दानी को अध्यक्ष एवं श्री साधूराम समाणी को सचिव के रूप में सेवा कार्य करने के लिए दायित्व दिया गया। सम्प्रति श्री मोहन दास लधानी अध्यक्ष एवं श्री प्रभूदयाल चन्दाणी सचिव के रूप में यह सेवा कार्य सम्भाल रहे हैं।

परम श्रद्धेय सन्त बाबा आसूदाराम साहब के 102 वें जन्मोत्सव 16 अप्रैल सन् 1997 को रामनवमी के पावन पर्व पर पहली बार 19 युगलों के शिव शान्ति सन्त आसदूराम आश्रम लखनऊ में भव्य सामूहिक विवाह समारोह आयोजित हुए। पूरे देश से आए इन जोड़ों ने सन्त जी से आशीर्वाद प्राप्त कर नव जीवन में प्रवेश किया। गत 8 वर्षों से अब तक 209 जोड़ियां विवाह बन्धन में बँध चुकी है।

इन विवाहों की विशेषता है ''दहेज रहित विवाह करने का संकल्प''। दोनों पक्ष परस्पर वर–वधू के गुणों के आधार पर सगाई करके 'मण्डल' में पंजीकरण कराते हैं और कोई लेन–देन न करने का संकल्प लेते हैं। वर पक्ष से रू0 125/– तथा वधू पक्ष से रू0 250/– पंजीयन शुल्क प्राप्त किया जाता है। सन्त बाबा आसूदाराम की जयन्ती रामनवमी के शुभ अवसर पर सामूहिक विवाह का आयोजन आश्रम परिसर में किया जाता है।

दोनों पक्षों के 11–15 अलग–अलग पारिवारिक संबंधियों के आवास, भोजन की व्यवस्था की जाती है। बैण्ड, बाजों के साथ सामूहिक रूप से बारात निकलती है। प्रत्येक दूल्हे के लिए अलग–अलग पुष्प सज्जित कार उपलब्ध करायी जाती है। आश्रम में पहुँचकर वधू पक्ष पारम्परिक रूप से स्वागत करता है। विवाह संस्कार गायत्री परिवार शांतिकुन्ज हरिद्वार के विद्वान इस कार्य को पूर्ण रीति–रिवाजों के अनुसार करवाते है। हिन्दू धर्म में विवाह एक संस्कार है, संस्था है। समझौता नहीं कि जब तक जी किया निभाया वरना सम्बंध विच्छेद इस स्वर्णिम वैवाहिक वेला में दोनों पक्षों के अतिरिक्त समाज के गणमान्य लोग उनके गृहस्थ जीवन को सुखमय चिर स्थाई बनाने के लिए न केवल साक्षी होते हैं अपितु उनका मनोबल बनाए रखने के लिए समाज के सम्मिलित

सहयोग से गृहस्थी की न्यूनतम आवश्यकताओं के अनुरूप आरम्भ करने के लिए आवश्यक लगभग चालीस प्रकार की वस्तुएं उपहार स्वरूप सन्त चाण्डूराम के कर कमलों से प्रदान करायी जाती हैं। जिनमें खाना बनाने के लिए बरतन, सोने के लिए बिस्तर, पहनने के लिए वस्त्र, समय का ध्यान रखने के लिए घड़ी के अतिरिक्त सिलाई मशीन, पंखा, अटैची, श्रृंगार की वस्तुएं, सद्‌गृहस्थी की शिक्षाप्रद धार्मिक पुस्तकें तथा आरम्भिक खर्च के लिए प्रतीक राशि इत्यादि। इस प्रेरणा के फलस्वरूप लगभग एक दर्जन नगरों में इसी प्रकार से सामूहिक विवाह के आयोजन आरम्भ हो गये हैं।

प्रथम सामूहिक विवाह : आधारभूत विवरण

16 अप्रैल सन् 1997 को प्रातः काल आश्रम के प्रागण में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया – वेद ऋचाओं से सम्पूर्ण आश्रम गुंजायमान हो उठा। नवदम्पतियों के भावी जीवन के कल्याणार्थ यह देवों का आहवान था जिससे समस्त देवगण इन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान करें। इसके बाद बारात का स्वागत हुआ। सभी वर पक्ष वाले अपने वरों को लेकर आश्रम द्वार पर पहुँचे वहाँ उनका स्वागत आश्रम में उपस्थित कन्या पक्ष वालों ने, लखनऊ सहित प्रदेश भर से आए पंचायती प्रतिनिधियों व अन्य गणमान्य लोगों ने किया। समस्त वरों ने गुरुग्रन्थ साहब, सन्त बाबा आसूदाराम साहब की प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक हुए तथा पूज्य सन्त चाण्डूराम साहब जी से भी आशीर्वाद ग्रहण किया।

अब आरम्भ हुई विशाल सभा मण्डप में "दहेज अभिशाप है" विषय पर एक संगोष्ठी। अध्यक्षता की सन्त चाण्डूराम साहिब ने। साथ में मंच पर उपस्थित रहे अनेक सन्त, पंचायतों के प्रधान व अन्य गणमान्यजन। गोष्ठी के पूर्व मंच पर उपस्थित सज्जनों ने सन्त जी का माल्यार्पण कर स्वागत किया। तत्पश्चात् विभिन्न वक्ताओं ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये। मंच से इस समस्या के निदान के प्रेरणा स्रोत सन्त चाण्डूराम साहिब को 'सिन्धू रत्न' सम्बोधित किया गया।

श्री गोपीनाथ चन्दानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "इस समस्या से हमारे समाज के दिवंगत अग्रणी चिंतक श्रद्धेय परमानन्द पंजवाणी, स्व0 खेमचन्द माड़ीवाला तथा शंकर लाल आदि चिन्तित रहा करते थे। खुशी की बात यह है कि इस समस्या के निदान के लिए हमें अवसर प्रदान किया गया है। इस अवसर पर श्री मुरलीधर आहूजा, श्री विशन कुमार रूपानी, श्री लक्ष्मणदास शिवानी, डा0 नारायण दास सिंधी, बैंक अधिकारी श्री सुब्रमणियम ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सन्त चाण्डूराम साहिब ने अपने आर्शीवचनों को अत्यन्त सादगी पूर्ण तरीके से पेश करते हुए कहा कि 'स्वागत के पात्र तो आप समस्त आयोजक जन हैं जिन्होंने अपने पुरुषार्थ व साहस से इस विशाल कार्य को पूर्ण रूप प्रदान किया है। ईश्वर इन बच्चों के जीवन में समस्त खुशियां भरे। समस्त वरों का कर्त्तव्य है कि वे अपनी जीवन संगिनी के प्रति समस्त कर्त्तव्यों का पालन करें। समस्त वधुएं अपने गृहस्थ धर्म का पालन करें व अपने सास–श्वसुर की पहले सेवा करें जिससे घर–परिवार खुशियों से भर जाए।" उन्होंने उन सभी का आभार व्यक्त किया जो उनके स्नेह निमन्त्रण पर अपने दैनिक कार्य छोड़कर आए तथा आयोजन को सफल बनाया। संगोष्ठी का संचालन श्री सत्यानंद सावलानी ने किया।

तत्पश्चात् सामूहिक विवाह का कार्य आरम्भ हुआ। मंच के नीचे सामने की ओर दो पंक्तियों में विवाह वेदियां बनी हुई थीं। एक पंक्ति में दस और दूसरी पंक्ति में नौ वेदियां थीं। एक ओर वर पक्ष के लोग बैठे तो दूसरी ओर सम्मुख कन्या पक्ष के लोग बैठे थे। संचालक के निवेदन पर दोनों पक्षों के संबंधी एवं समधी लोग अपने–अपने स्थान से उठकर अपनी वेदी

के निकट आये तथा मालाएं डालकर एक दूसरे का स्वागत करते हुए मिलनी की। हर्षोल्लास के बीच बारातियों तथा घरातियों, के बीच स्वल्पाहार वितरण किया गया। दूल्हे मंच से उठकर जनवासे गये वहां से अपनी–अपनी दुल्हन के साथ आकर वेदियों पर बैठ गये। दो कतारों में बैठी दुल्हनें उनके ऊपर ओढ़ी हुई लाल वर्ण की चूनर और उन पर झिलमिलाते श्वेत वस्त्र के सितारे व तारों का जाल वातावरण में एक अनोखी आभा बिखेर रहे थे। राजस्थानी सेहरों से सजी दूल्हों की सुन्दर पगड़ियां अपनी अलग गरिमा बिखेर रही थी। विभिन्न परिधानों में सजी बारातियों व घरातियों की स्त्रियों द्वारा दूल्हे–दुल्हन को घेर कर बैठना ऐसा प्रतीत होता था मानों स्वयं इन्द्र देवता का दरबार सुशोभित हो रहा है।

वैवाहिक पूजन, समस्त कर्म फेरे आदि का कार्य शांति कुन्ज हरिद्वार से आये आचार्य श्री जयराम दास मोटवानी तथा उनके तीन सहयोगियों ने पूरा कराया। 19 वेदियों पर उनके 19 सहयोगी पीताम्बर पहने पीठ पर आसीन थे। मंच के ही निर्देश पर समस्त पूजन कार्य उचित व सुचारु विधि से सम्पूर्ण वैवाहिक पूजन वैदिक रीति से मंत्रोचारणों से सम्पन्न होता रहा। पाण्डाल में बैठे हजारों नर–नारी मंत्रमुग्ध होकर इस शुद्ध सात्विक पूजन को देख रहे थे। शास्त्रोक्त रीति का निर्वाह करते हुए सांध्य वेला में सप्तपदी सम्पन्न हुयी। 4 फेरे कन्या ने अग्रणी होकर व 3 फेरे वर ने अग्रणी होकर लगाये। चारों और से उन पर पुष्प वर्षा होती रही तथा बधाइयों का दौर शुरू हुआ । संत जी मंच से उतर कर हर वेदी पर पहुँचे। नव दम्पत्तियों के शीश पर आशीर्वाद का हाथ रखा तथा कन्या को एक अंगूठी व वर को एक पर्स आशीर्वाद स्वरूप प्रदान किया। इसी अवसर पर नव दम्पत्तियों को विभिन्न उपहार भी दिये गये। परंपरा के अनुसार पंडित श्री अशोक शर्मा ने राशि के आधार पर कन्या के नाम परिवर्तन का कार्य भी सम्पादित कराया। कन्याओं के नये नामों का नामकरण स्वयं सन्त जी ने किया। विशेष उल्लेखनीय था श्री सत्यानन्द सावलानी द्वारा गाया हुआ विदायी गीत जिसे सुन उपस्थित समुदाय की आंखे नम हो गयी। इसी अवसर पर अन्त में आश्रम के सौजन्य से स्वादिष्ट व्यंजनों से परिपूर्ण प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसका रसास्वादन करते हुए सबने भूरि–भूरि प्रंशसा की।

1997 में आरम्भ इस सामूहिक विवाह का कार्यक्रम उत्तरोतर प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर है।

वर्ष	विवाह	योग
1997	19	19
1998	25	44
1999	24	48
2000	28	96
2001	28	124
2002	44	168
2003	17	185
2004	24	209

❒ **मोहनदास लधानी**

पूज्य माता साहिब आस्थान - दतिया

मध्य प्रदेश का छोटा सा जिला दतिया ग्वालियर–झाँसी के मध्य स्थित है। वैसे तो यहाँ पर अनेक मंदिर हैं जिसके कारण इस शहर को लघु वृंदावन कहा जाता है परंतु जगत जननी राज राजेश्वरी शक्ति स्वरूपा माँ पीताम्बरा का विश्व विख्यात मंदिर अपनी विशेष पहचान लिये हुये है। यही कारण है कि दतिया को लोग पीताम्बरा नगरी के नाम से ही संबोधित करते हैं।

प्रारंभ से ही दतिया पर अध्यात्म जगत की शक्तियों एवं संत – महात्माओं की विशेष कृपा रही है। संत कृपा की इस श्रृंखला में एक और अवतरण हुआ है। लखनऊ स्थित शिव शांति आश्रम के संत चाण्डूराम साहेब जी का आप प्रायः इस आध्यात्मिक नगरी में अपने अनुयाइयों के विशेष अनुरोध एवं आमंत्रण पर पधारते रहते थे। स्वाभाविक रूप से संतजी की कृपा–दृष्टि उन समस्याओं की ओर भी गयी जिनके कारण समाज में नैतिक पतन एवं मानवीय मूल्यों में ह्रास हुआ है। ऐसी समस्याओं में प्रमुख रूप से गरीबी, बेकारी, भुखमरी, परस्पर वैमनस्य, घृणा, हिंसा आदि हैं।

स्वामी जी का चिंतन इन समस्याओं से निजात दिलाने के लिये अपना रंग लाया और 03 अगस्त 1997 को पूज्य गुरुदेव की सद्‌प्रेरणा से उनकी स्वर्गीय माता श्रीमती बैंसरबाई की पावन स्मृति में ''शक्ति स्वरूपा माता साहिब आस्थान'' नामक आश्रम की आधारशिला मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ रखी गयी यह बतलाते हुये मैं बहुत गौरवान्वित हूँ कि इस पवित्र आश्रम की प्रमुख सफलताएँ निम्न प्रकार है जो कि स्थापना के समय सामने रखे उद्‌देश्यों से भी कहीं अधिक है।

।। पूज्य माता साहिब बैंसर बाई ।।

भव्य सत्संग हाल : पूज्य गुरुदेव के विशाल चिंतन के अनुरूप ही यहाँ भव्य सत्संग हाल निर्मित हुआ है; जहाँ पर प्रतिदिन प्रातः एवं सांयकाल मानव कल्याण के लिये प्रार्थनाएँ आयोजित होती हैं।

अन्न सेवा : ''भूख पाप की जननी है'' इस बात को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिमाह अनेक जरूरतमंद परिवारों को निःशुल्क 'अन्न सेवा' की जाती है जिससे जरूरतमंदों को भुखमरी से बचाया जा सके।

नेत्र चिकित्सा सेवा : सखी बाबा आसूदाराम साहिब की स्मृति में प्रतिवर्ष निःशुल्क नेत्र चिकित्सा सेवा का आयोजन किया जाता है। अद्यतन चार हजार नेत्र रोगियों को उनकी खोई ज्योति प्रदान कराकर सेवा की गयी है। **सन्त जी का मानना है जिनके पास नेत्र ज्योति नहीं है उनके लिए संसार मिथ्या है।** इसी क्रम में निःशुल्क नेत्र चिकित्सालय हेतु पूज्य

माता साहेब स्थान के ठीक सामने दतिया में राष्ट्रीय राजमार्ग पर ग्यारह हजार वर्ग फुट भूमि प्राप्त की गयी है।

स्वास्थ्य परीक्षण सेवा : स्थान पर निर्धन परिवारों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर उनका मार्ग दर्शन कर सेवा की जाती है। सिंधी चिकित्सक यह कार्य सेवा भाव से कर रहे हैं।

प्याऊ सेवा : ग्रीष्म ऋतु में संत की प्रेरणा से नगर में विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर निःशुल्क प्याऊ लगाये जाते हैं जहाँ पर शीतल जल की व्यवस्था की जाती है जिससे प्यासों की प्यास बुझाई जा सके।

रोजगार सेवा : बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए रोजगार सेवा की योजना को शीघ्र ही अमलीजामा पहनाया जाना है। जिसमें नारीशाला प्रमुख रूप से है।

वर्सी महोत्सव : प्रतिवर्ष गंगा दशहरा के दिन पूज्य माता साहेब का वर्सी महोत्सव आयोजित किया जाता है। यह धार्मिक उत्सव का रूप लेकर तीन दिन तक चलता है। जिसमें पूज्य गुरूदेव सपरिवार उपस्थित रहकर विश्व कल्याण की कामना हेतु सत्संग एवं प्रार्थनाएँ आयोजित करते हैं। साथ ही उपस्थित जनों को समाज में व्याप्त विभिन्न बुराईयों को दूर करने का संकल्प दिलाते हैं। इस अवसर पर देश–विदेश के कोने–कोने से संत–महात्मा एवं महापुरूष आश्रम पर पहुँचकर भजन एवं सत्संग प्रस्तुत करते हैं।

सम्मान : समाज में अच्छा कार्य करने वालों को सम्मानित कर प्रेरणा एवं प्रोत्साहन आवश्यक होता है। इस स्वथ्य चिंतन के अंतर्गत गुरूदेव स्वयं अपने श्रीमुख से अच्छा कार्य करने वालों के नाम सार्वजनिक करते हैं। जिससे समाज के अन्य लोग भी अच्छा कार्य करने की प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

हर्षा बालिका मण्डल : हर्षा बालिका मंडल का गठन भी आश्रम की प्रेरणा से किया गया है। जिसके माध्यम से बालिकाओं के समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु पहल की जा रही है। बालिकाएँ विभिन्न सामाजिक बुराइयों को दूर करने का संकल्प लेती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से समाज को अभिनव संदेशा भी देती हैं।

❒ **डॉ० रतन सूर्यवंशी,**
दतिया

अमर शहीद
सन्त कंवरराम सेवा मण्डल

अमर शहीद सन्त कँवरराम 'सेवा' की साकार प्रतिमूर्ति थे। शहीद के शिष्य सन्त आसूदाराम में भी वही भाव निहित हुआ। उन्होंने अपने जीवन काल में पर पीड़ा पर मरहम लगाया। सन्त आसूदाराम ने इस भाव को विरासत के रूप में अपने सुपुत्र सन्त चाण्डूराम को प्रदान किया। इस विरासत को आपने साक्षात् करुणा निधान बन 'सेवा' के अनेक प्रेरणास्पद कार्य प्रारम्भ कराये हैं।

सन् 1999 का 13 अप्रैल अत्यन्त ही महत्वपूर्ण दिन साबित हुआ जब सन्त कंवरराम का जन्म, रामनवमी और बाबा आसूदाराम का जन्मदिवस तीनों एक साथ एक ही दिन होने का संयोग जुड़ा और इस शुभ दिन सन्त चाण्डूराम की सदइच्छा से एक नये सेवा अध्याय के रूप में 'अमर शहीद सन्त कंवर राम सेवा मण्डल' प्रारम्भ हुआ। सेवा का आवाहन हुआ और देखते ही देखते उपस्थित अनुयाइयों ने वहीं पर तेरह लाख रुपयों की सेवा प्रदान की। इससे आरम्भ किये गये अनेक प्रकार के सेवा कार्य विवरण इस प्रकार है।

इस गुरुत्तर सेवा कार्य को संचालित करने के लिए सन्त जी ने कतिपय मर्यादाएं निर्धारित की। यथा सेवा करने में ऐसा भान न हो कि जिसकी सेवा की जा रही है उस पर किसी प्रकार का उपकार किया जा रहा है। उसके मान सम्मान को किसी प्रकार की ठेस न लगे यह ध्यान रखा जाए। सेवादारी नम्रता पूर्वक सेवा करें। सेवादारी निष्काम भाव से मात्र सेवा करें। इन मर्यादाओं की रक्षा की जाए ऐसे उदात्त विचारों से ओतप्रोत सेवादारियों को ही सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है।

1. स्व रोजगार सेवा :

नौकरी देने वालों एवं नौकरी चाहने वालों के मध्य यह मण्डल 'सेतु' का कार्य करता है। अपना लघु व्यवसाय करने की इच्छा रखने वालों आधारभूत ढांचा आधारभूत सेवा प्रदान की जाती है। विवरण इस प्रकार है।

वर्ष	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003	2003–2004	योग
संख्या	61	91	59	78	54	343

2. शिक्षा सेवा :

शिक्षा के महत्व को जानने, समझने वाले शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक अर्थाभाव में विद्याध्यापन में होने वाली कठिनाई के फलस्वरूप ऐसे जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा सेवा की जाती है।

वर्ष	2001–2002	2002–2003	2003–2004	योग
संख्या	6	13	50	69

3. उपचार सेवा :

रोग ग्रस्त जीवन अत्यन्त कष्टदायी होता है। रोगों से मुक्ति पाने में समाज का निर्बल वर्ग सदैव असमर्थ एवं असहाय रहा है। ऐसे वर्ग की सेवा पीडित मानव की सेवा है। औषधियों के मंहगें मूल्य, उनके सहज जीवन को हताश कर देते हैं। वे अपना, अपने परिजनों का समुचित उपचार नहीं करवा पाते हैं। ऐसे में या तो वे घिसट–घिसट कर किसी प्रकार अपने जीवन का निर्वाह करते हैं या फिर असमय जी काल कवलित हो जाते हैं।

इस मार्मिक, दयनीय, गम्भीर, दशा को लक्ष्य करते हुये सेवा की जा रही है। वर्षवार वर्णन निम्नवत् है :–

वर्ष	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003	2003–2004	योग
संख्या	6	8	18	20	33	85

4. वैवाहिक सेवा : भारतीय संस्कृति में विवाह को धार्मिक संस्कार माना गया है। दहेज के कुत्सित दुष्चक्र के चलते अनेक असहाय परिवारों की कन्याओं के समयोचित विवाह में व्यवधान होते रहते हैं। कुछ परिवारों की कन्याएं या तो बिन ब्याहे रह जाती हैं अथवा अन्तर्जातीय विवाह के लिये विवश हो जाती हैं। माता–पिता अपनी असहाय अवस्था के लिये अपने को कोसते रहते हैं। ऐसे समाज को गतिशील बनाना एवं सुचारु दिशा निर्देश देना सम्यक है जिससे समाज में अप्रिय घटनायें न घटित हों एवं असहाय माता–पिता भी गौरव से रह सकें। इस विचार से एवं दहेज के दुष्चक्र से उद्धार करने की भावना से इस सेवा को किया जा रहा है। सन्त ने इसे समाज का कुष्ट निवारण जैसा उदात्त विचार माना है। सामूहिक विवाहों के अतिरिक्त इस विषय में सेवा की वर्षवार स्थिति अधोलिखित है :–

वर्ष	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003	2003–2004	योग
संख्या	18	17	10	8	8	61

5. यज्ञोपवीत सेवा : भारतीय संस्कृति में बिना यज्ञोपवीत संस्कार के कोई भी धार्मिक कर्मकाण्ड या संस्कार सम्पादित नहीं किया जा सकता। बच्चे बड़ी आयु तक इस संस्कार से वंचित रहते हैं। परिणामतः बड़ी आयु में इस संस्कार के कराये जाने से उन्हें उस शिक्षा से भी वंचित रहना पड़ता है जो उन्हें अल्पायु में ही मिल जानी चाहिये थी। बच्चों में सद्गुणों का समुचित विकास नहीं हो पाता। इससे समाज को सतर्क करने तथा इस संस्कार पर होने वाले व्यय से बचाने के विचार से यज्ञोपवीत संस्कार सामूहिक रूप से आयोजित किया जा रहा है–

वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	योग
संख्या	48	34	50	12	29	173

वर्ष	जनेऊ	विवरण	योग
2000	48	27 लखनऊ, 9 कानपुर, 3 वाराणसी, 2 पाकुड़, 1 रायबरेली, 1 भोपाल, 1 गोरखपुर, 1 चिरगांव	48
2001	34	30 लखनऊ, 2 अलवर, 2 इलाहाबाद	82
2002	50	34 लखनऊ, 7 कानपुर, 2 गोरखपुर, 3 समथर, 2 इटावा, 2 चिरगांव	132
2003	12	11 लखनऊ, 1 फैज़ाबाद	144
2004	29	14 लखनऊ, 1 रायगढ़, 4 शाहजहांपुर, 2 उरई, 4 सीतापुर, 2 वाराणसी, 2 बांदा	173

सामूहिक यज्ञोपवीत आयोजन के समय बालक को सन्त चाण्डूराम साहब आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यज्ञोपवीत कराने आए परिवारों के आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था आश्रम में की जाती है और उसके अतिरिक्त शाल, सम्मान आदि की व्यवस्था भी मण्डल के पदाधिकारी करते हैं।

6. साइकिल सेवा : अनेक अनुयायी सत्संग में सम्मिलित होने के लिए इस कारण नहीं आ पाते कि उनका घर दूर है, फिर नौकरी, फेरी करने स्कूल आदि के लिए जाना भी होता है। तब समयाभाव और आर्थिक तंगी आड़े आती है। अनुयाइयों को साइकिलें प्रदान की गयी हैं। इससे वे अपने दैनिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने के साथ–साथ सत्संग का आनन्द भी प्राप्त कर पाते हैं विवरण इस प्रकार है।

वर्ष	1999–2000	2000–2001	2001–2002	2002–2003	2003–2004	योग
संख्या	7	22	50	20	77	176

7. सिलाई मशीन सेवा : निर्बल वर्ग की आर्थिक स्थिति को सुधारने के गरिमामय विचार से उत्प्रेरित होकर तथा महिलाओं का परिवार के आर्थिक सहयोग में सक्रिय भाग लेने के क्रान्तिकारी उत्कृष्ट भाव से अभिप्रेरित सिलाई मशीन की सेवा दी गयी है। लगभग 50 सिलाई मशीनें इस सेवा के अन्तर्गत वितरित की जा चुकी है।

8. रजाई/कम्बल सेवा : शीतकाल में भीषण शीत लहर से बचाने के लिए जरूरतमंद परिवारों को रजाइयां/कम्बल वितरित किये जाते हैं। गत दो वर्षों में अद्यतन उन्तीस परिवारों को यह सेवा प्रदान की गयी है।

9. अन्य सेवायें : उपर्युक्त निर्धारित सेवाओं की सीमा में मण्डल को सीमित नहीं रखा गया है। सन्त चाण्डूराम साहिब ने प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में मानव की सेवा के लिए मण्डल को प्रत्येक समय, प्रत्येक दशा में उद्यत रहने के लिए प्रेरित किया है। जिसका अनुरक्षण वे स्वयं करते रहते हैं।

वर्तमान में इसकी व्यवस्था देख रहे हैं श्री मुरलीधर आहूजा, श्री सुन्दरदास खत्री श्री भगवान दास एवं श्री प्रभूदयाल जी

❒ **मुरलीधर आहूजा**

अमर शहीद सन्त कँवरराम मिशन

सिन्ध के सरताज, महान् सन्त अमर शहीद सन्त कंवरराम साहिब जी का प्रथम जन्म शताब्दी महोत्सव 1985 में महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जनपद में बड़े उत्साह व श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। इस पावन समारोह में सम्पूर्ण भारतवर्ष के अनेक सिन्धी समाज के साधू व सन्तजन उपस्थित रहे। समारोह हेतु सम्पन्न बैठकों में एक बार 'शिव शान्ति आश्रम' लखनऊ के सन्त शिरोमणि सांई चाण्डूराम साहिब जी ने अपना मनोरथ प्रकट करते हुए इस बात पर बल दिया कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में सहज रूप से अपने–अपने नगरों में सन्त कंवरराम साहिब जी के नाम से सेवा मण्डल गठित करके श्रद्धालुगण उनका वार्षिकी व जयन्ती हर्षोल्लास के साथ आयोजित कर रहे हैं तो कहीं उन्हीं के नाम से धर्मशालाएं, विद्यालय, अनाथालय व दरबारें स्थापित करके अनेक परमार्थी कार्यों को श्रद्धा के साथ सम्पादित कर रहे हैं। ऐसी समाज सेवी संस्था रूपी मोतियों को एक ही माला में पिरोने का कार्य किया जाए; इस सुझाव पर सभी उपस्थित सदस्यों ने सहमति जताई परन्तु तत्समय इस दिशा में अधिक प्रयास न हो सका और यह कार्य कई वर्षों तक स्थगित रहा।

अमर शहीद सन्त कंवरराम साहिब के परम शिष्य सन्त बाबा आसूदाराम साहिब के सुपुत्र सांई चाण्डूराम साहिब जी के मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि ऐसे सच्चे महपुरुष सन्त के नाम पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में सेवा कार्य करने वाले सभी बन्धुओं का मैं दर्शन कर सकूँ। यह विचार उनके ह्रदय में कई वर्षों से बार–बार उठ रहा था। उन्होंने पुनः वर्ष 2000 में सन्त कंवर राम जी के पौत्र अमरावती निवासी सन्त मनोहरलाल साहिब, सांई जशनलाल साहिब तथा जलगांव में सन्त हरदासराम दरबार के सांई गेलाराम साहिब के सम्मुख इसी प्रस्ताव को पुनः दोहराया व इस कार्य को अग्रसर करने की पूर्ण जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए उनकी सहमति प्राप्त की।

सन्त कंवरराम जी के नाम से भारत वर्ष में प्रख्यापित समस्त संस्थाओं / मण्डलों को एक मंच पर लाने हेतु ''रामनवमी'' 1 अप्रैल 2001 के शुभ पर्व पर राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने की एक अपील उपर्युक्त समस्त सन्तजनों की ओर से की गई। पूज्य सन्तजनों की जानकारी के अनुसार देश भर के सभी प्रान्तो में इस सम्मेलन की सूचना प्रसार हेतु प्रतिनिधि भेजे गए और इस प्रयास के पश्चात आहूत प्रथम सम्मेलन में दिनांक 1 अप्रैल 2001 को 'शिव शान्ति आश्रम' लखनऊ में देश के 36 नगरों से 54 संस्थाओं के कुल 114 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस समारोह के आयोजन से समस्त उपस्थित प्रतिनिधि हर्ष और उत्साह की लहर से झूम रहे थे व इस आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा कर रहे थे। समस्त उपस्थित प्रतिनिधियों ने अपने सुविचारों से पूज्य सन्तजनों के संरक्षण में एक संस्था गठित करने का परामर्श देते हुए नए संगठन का गठन करने की स्वीकृति दी।

'अमर शहीद सन्त कंवरराम मिशन' के नाम से एक नई संस्था का गठन हुआ। मुख्य संरक्षक पूज्य सांई साधराम साहिब रहिड़की (सिन्ध), व सांई मनोहरलाल साहिब, अमरावती। संरक्षक– सांई गेलाराम साहिब, जलगांव तथा सांई वासदेवलाल, फैज़ाबाद को सर्वमति से मनोनीत किया गया। सन्त कंवरराम की पुत्रियां, व दामाद भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सन्त चाण्डूराम साहिब को संस्थापक अध्यक्ष पद पर सुशोभित करते हुए अपने सहयोगी नियुक्त करने का निवेदन किया गया। तदनुसार नियुक्तियां की गयी।

दायित्व :

मुख्य संरक्षक : सांई साधराम साहिब, रहड़की साहिब (सिन्ध), सांई मनोहरलाल साहिब, अमरावती (म.रा.)।

संरक्षक : भाई गेलाराम, जलगांव (म.रा.), भाई वासदेवलाल वीरानी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

संस्थापक अध्यक्ष : सांई चाण्डूराम साहिब, लखनऊ

उपाध्यक्ष : नानकराम ईसरानी, अजमेर, राज.
सचिव : सत्यानन्द सावलानी, रायबरेली, उ.प्र.
कोषाध्यक्ष : भगवान दास खेट्रपाल, लखनऊ , उ.प्र.

प्रचारक :

महाराष्ट : जयप्रकाश हरदासराम हासवानी, अमरावती, गोपीदास पं. छत्तानी, यवतमाल, बन्नाराम केवलराम पारवानी, अकोला, रोचलदास ड़ाऊमल तोलवाणी, औरंगाबाद, सखावत राय, कल्याण,

गुजरात : टीकमदास बी. वासवानी, भावनगर, गोविन्दराम चांदवानी, बडोदरा शमनदास मांजर पालीताणा,

छत्तीसगढ़ : गुरुमुखदास वाधवा, राजनांदगांव, मूलचन्द पृथवानी, रायपुर,

राजस्थान : गिरधारीलाल पंजवानी, कोटा, लीलाराम राजवानी, बीकानेर, गोविन्दराम मूलचन्दानी, जोधपुर,

मध्यप्रदेश : सत्यपाल डावानी, डबरा, गोविन्दराम दुहलानी, जबलपुर, बलरामदास लालवाणी, सतना, अमरलाल हबलानी, इन्दौर

उत्तर प्रदेश : मेंधराज खत्री, फैज़ाबाद, विशन कुमार रूपानी, वाराणसी, नानकचन्द लखमानी, लखनऊ

प0 बंगाल : माधवदास मदनानी, कोलकाता

दिल्ली : राजकुमार आनन्दानी, दिल्ली

सेवादारियों के नामांकन के पश्चात सम्पूर्ण भारतवर्ष में सन्त कंवरराम साहिब के सेवा में कार्यरत मण्डलों व संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोने अर्थात् सबद्धता पत्रक भराने का कार्य प्रारम्भ किया गया। सम्मिलित प्रयासों के पश्चात आज मिशन के साथ 109 संस्थाएँ अपनी आस्था जताकर सन्त जी के सेवा कार्य को गति प्रदान करने के लिए कटिबद्ध हैं।

मिशन के उदेश्य :

1. **सन्त कँवरराम के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं आदर्शों को जन–जन में व्याप्त करना।**
2. **ऐसे अन्य सभी प्रासंगिक कार्य करना जिससे मिशन के उदेश्य को पूरा किये जाने के लिये उपयोगी तथा आवश्यक हों।**

मिशन के प्रासंगिक कार्य :

1. सन्त कंवरराम साहिब के नाम से भारत में कार्यरत संस्थाओं / सेवा मण्डलों को सम्बद्ध करना।
2. सम्बद्ध संस्थाओं के पूर्ववत् जारी सेवा कार्यों को बल प्रदान करना, प्रोत्साहित करना उनमें वृद्धि करवाना।
3. सन्त कंवरराम संग्रहालय स्थापित करना (प्रत्येक उस वस्तु का संग्रह करना जिससे सन्त का स्मरण चिरस्थाई रह सके)
4. सन्त जी के जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में लागू करवाना।
5. सन्त जी की डाक टिकट जारी करवाना।
6. टेलीफिल्म तैयार करवाना
7. हिन्दी में जीवन चरित्र पुस्तक रूप में तैयार करवाना।
8. जीवनी पत्रक जारी करना।
9. सन्त कंवरराम शिक्षा पुरस्कार प्रदान करना।
10. सन्त जी की जयन्ती, निर्वाण (वर्सी) का अवसर प्रदान करना, आयोजित कार्यक्रमों में सत्संग मण्डली व प्रचारक भेजना।

भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों के अनेक नगरों में भव्य धर्मशालाएं, विद्यालय, वृद्ध आश्रम, चिकित्सालय, गौशालाएं, जल आश्रम तथा कई भव्य दरबारें स्थापित करके सिन्धी समाज के अग्रणी कार्यकर्ता अपने समाज में परमार्थ तथा रचनात्मक कार्यों को सम्पादित करके सन्त कंवरराम जी के आदर्शों की पूर्ति में हमारे साथ हैं। विभिन्न प्रान्तों की यात्रा करने पर हमें कई उत्साही कार्यकर्ताओं का मिशन के कार्यों में सहयोग करने का आश्वासन भी प्राप्त हुआ। अमर शहीद सन्त कंवरराम मिशन की स्थापना से पूज्य सन्त जनों के स्मरण करने तथा अपना आशीर्वाद देने की कृपा के कारण सम्पूर्ण भारत वर्ष की संस्थाओं में हर्ष व उत्साह है। देश भर की सभी सेवा संस्थाओं का एक ही लक्ष्य है कि अमर शहीद सन्त कंवरराम साहिब के आदर्श और उनकी परोपकारी व परमार्थी सेवाओं को हम निरन्तर निभाते चले आएं। जिससे कि ऐसे महान् व कर्मयोगी सन्तजनों का वरद हस्त आशीर्वाद उन्हें प्राप्त होता रहे। दर्शाए गए उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मिशन के सभी पदाधिकारी, संस्थाएं सभी सेवा कार्यों को किसी न किसी रूप में परिणति पर पहुँचाने हेतु संकल्प बद्ध हैं।

उपलब्धियाँ :

1. 109 संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान की गयी।

2. 5'3' ''मानवता के मसीहा'' संक्षिप्त जीवन परिचय संबंधी 100 भिति चित्र सन्त से सम्बन्धित स्थानों पर लगवाए गये।

3. वर्ष 2004 में इण्टरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र अनुराग त्रिपाठी – कानपुर, राहुल लखमानी – लखनऊ, सारिका गोयल – मेरठ, ऋति गुप्ता – कानपुर को नगद राशि, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, स्मृति चिन्ह व शाल देकर पुरस्कृत किया गया।

❐ सत्यानंद सावलानी
सचिव

सन्त कंवरराम के नाम से भारत में !

1.	जयन्ती / निर्वाण दिवस	–	75
2.	धर्मशालाएं	–	54
3.	जलाश्रम	–	50
4.	प्रतिमाएं	–	40
5.	दरबारें	–	35
6.	विद्यालय	–	12
7.	चिकित्सालय	–	03
8.	अनाथालय	–	01
9.	वृद्धाश्रम	–	01

सन्त बाबा आसूदाराम परमार्थ मेडिकल ट्रस्ट

विषम परिस्थितियों में विशेष चिकित्सा के लिए इस ट्रस्ट से सेवा के अवसर प्रदान किया जाता है। अनेकानेक ऐसे दुःखद अवसर आए कि आश्रम से जुड़े अनुयाइयों के समक्ष बड़ी चिकित्सा की सामर्थ्य का अभाव दिखा तब सत्संगियों ने सन्त चाण्डूराम की सद्प्रेरणा से धन एकत्र कर उसकी सेवा की। यह कार्य नित्य निरन्तर जारी रहे इस हेतु जून 2004 में ''सन्त बाबा आसूदाराम परमार्थ मेडिकल ट्रस्ट'' का पंजीकरण सन्त के संरक्षकत्व में कराया गया। अब तक 30 रोगियों की 'सेवा' ट्रस्ट के माध्यम से हुयी है जिनमें साधारण व गम्भीर रोगी सम्मिलित है। ट्रस्ट के सेवादारी इस प्रकार से हैं।

संरक्षक – सन्त चाण्डूराम साहिब
अध्यक्ष – साई मोहनलाल
का. अध्यक्ष – श्री मोहन दास लधानी
ट्रस्टी सचिव – श्री प्रभूदयाल
ट्रस्टी कोषाध्यक्ष – श्री भगवानदास
ट्रस्टी – डा0 नारायण सिन्धी
ट्रस्टी डा0 घनश्याम
ट्रस्टी श्री सुन्दर दास खत्री
ट्रस्टी श्री नानक राम
ट्रस्टी श्री राजकुमार

इस सेवा कार्य को स्थायित्व प्रदान करते हुए आश्रम के निकट ही एक अन्य भूखण्ड पर 'चिकित्सालय' निर्माण का संकल्प किया गया। जहाँ से रोगियों को दवा और दुआ प्रदान की जा सके। तत्क्रम में 6 सितम्बर, 2004 को अर्धनिर्मित भवन में गायत्री परिवार के अमरनाथ दुबे ने सन्त चाण्डूराम साहिब के कर कमलों से पृथ्वी पूजन कराया गया। इसी के संग वास्तु पूजन, महामृत्यु०जय तथा गायत्री महायज्ञ में सताईस आहुतियां डालकर आसुरी शक्तियों को शमन किया गया जिससे सभी आरोग्य हों। यज्ञ अवसर पर सन्त के बाईं ओर साईं मोहनलाल दाहिनी ओर साईं हरीशलाल विराजमान रहे। आश्रम सचिव श्री किशनलाल व ट्रस्ट्रियों में प्रभूदयाल, सुन्दरदास, डॉ0 घनश्याम, भगवान दास के अतिरिक्त आश्रम के जुड़े स्त्री–पुरुष व अनुयाइयों ने आसूदाराम का यशोगान करके वातावरण को पवित्रतम बना

❐ प्रभुदयाल
सचिव

मधुर स्मृतियां

साईं बहरू राम, घोटकी, साईं केवल राम ढहरकी, साईं गोबिन्द राम

साईं भगवान दास रहड़की साहिब, महाराज सीतल दास

साईं जी, साईं पेशूराम, अमरावती, साईं गोबिन्द राम, पाकोड़

फकीर रहीम बख्श, कन्डढ़ी, सिन्ध

रज्जू भइया, शंकर लाल साईं जी के साथ

भाई केशव दास, बनारस

गायक अनूप जलोटा व साथी आश्रम में

साईं जी के साथ अन्य सन्त गण

साईं जी के साथ सन्त गण

स्वामी पथिक जी महाराज

स्वामी हितदास जी महाराज, वृन्दावन

बाबा कुन्दन सिंह, नानकसर, कलेरां वाले

सनातन श्री, लखनऊ

स्वामी गीतानन्द, हरिद्वार

साईं जी के साथ स्वामी जी

जगद्गुरु शंकराचार्य

साईं जी के साथ स्वामी जी

'आश्रम' में पधारे सन्त गण 'साईं जी' के साथ

जगद्गुरु शंकराचार्य, कांचीकामकोटि

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि, हरिद्वार

सन्त सिंह मिस्कीन, अलवर

सन्त राजेन्दर सिंह जी महाराज, दिल्ली

आनन्दमयी माँ मूर्ति, हरिद्वार

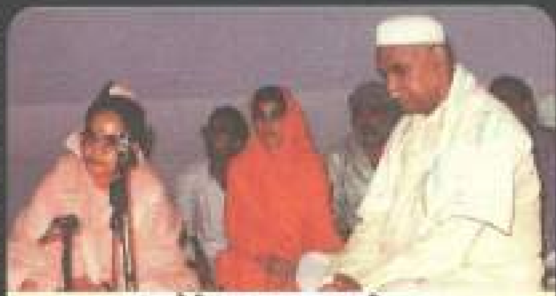

सन्तोषी माता, कनखल, हरिद्वार

सुधांशु जी महाराज, दिल्ली

मानस मर्मज्ञ पं० राम किंकर उपाध्याय

डा० प्रणव पाण्ड्या, शान्तिकुंज, हरिद्वार

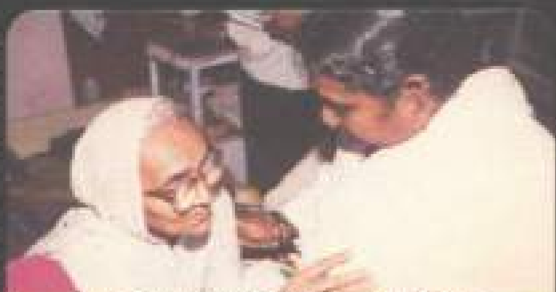

माता अमृतानन्दमयी अम्मा जी, वल्लिको-केरल

सन्तसत्ता के समक्ष नतमस्तक राजसत्ता

शिव शान्ति आश्रम में आशीर्वाद प्राप्त करने आये राजनीतिज्ञ

मा० लालजी टण्डन,
नगर विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

जब मैं प्रधानमंत्री नहीं था तब भी आता था, अब प्रधानमंत्री हूँ तो भी आश्रम आया हूँ, जब नहीं रहूँगा फिर भी सन्तों के चरणों में आता रहूँगा।
24/09/1999, अटल बिहारी बाजपेई,

मा० विष्णुकान्त शास्त्री,
महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

मा० मोतीलाल वोरा
महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

भाजपा नेता राजनाथ सिंह एवं
उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी

मा० श्रीमती रीता बहुगुणा, पूर्व मेयर, इलाहाबाद

मा० रमापति शास्त्री, स्वास्थ्य मंत्री, उत्तर प्रदेश